हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जुलाई 2017



- ईदुल-फ़ित्र : भाईचारे का त्योहार
  —मुहम्मद सलीम इंजीनियर
- ईदुल फ़ित्र : पुरस्कार का दिन
  —शेख़ मक़बूल अहमद
- जीवन का मूल उद्देश्य
  —श्याम नारायण चौहान
- इस्लाम और मानवीय चेतना
  —विजय गोपाल मंगल

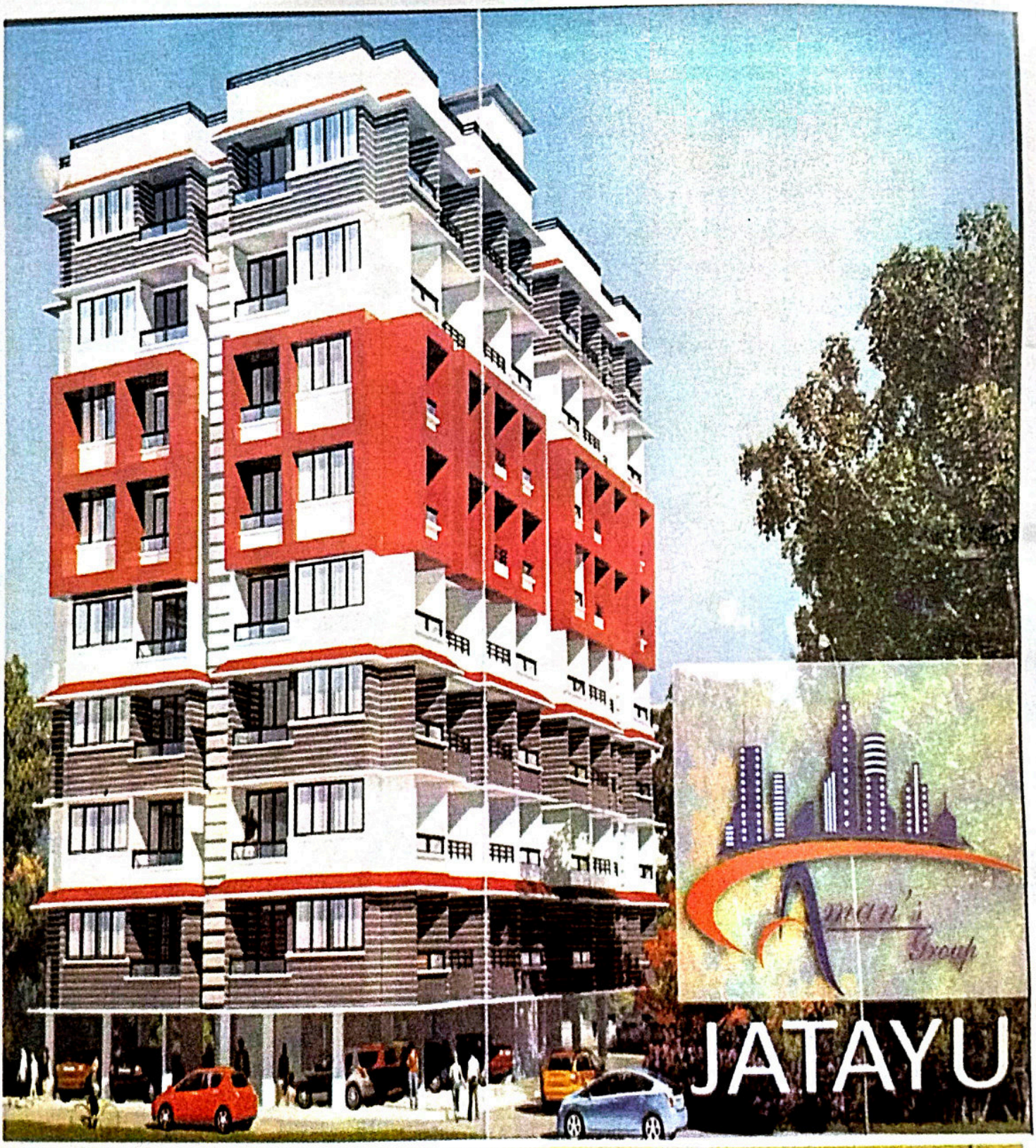

Aman's Group

Shop No.3- 4, Ground Floor, Karma Empress Bldg., Near K.T.C Bus Stand, Vasco-da-Gama, Goa.

Ph: 0832 2500823 / 2514134 Cell: 9326127351 / 9823577351

Sales: 9637888409 Email: amanbuilders4u@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 27 अंक 1 जुलाई 2017

जब कभी उनसे कहा गया कि ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो, तो उन्होंने यही कहा कि "हम तो सुधार करने वाले हैं–सावधान वास्तव में यही लोग बिगाड़ करते हैं मगर इन्हें समझ नहीं है । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

फूल तो रह गये कीसए-ज़र[1] लिये
और शबनम[2] ने मोती लुटा भी दिये

उनके जाने का मंज़र तमाशा नहीं
दूर तक देखिये, देर तक सोचिए

साज़ो-आवाज़ के दौरे-पुरशोर[3] में
इश्क़ की बेनवाई[4] को क्या कीजिए

हम तो दीवाने ठहरे हमें क्या ख़बर
जाने क्यों हंस पड़े, जाने क्यों रो दिये

दर्द पर तब्सिरा[5] तो बहुत हो चुका
दर्द को आप महसूस भी कीजिए

जाम साक़ी[6] ने जब बेरुख़ी से दिया
मैकदे[7] से निकल आये हम बेपिये

शैख़ साहब तुम्हारी भी अच्छी कटी
ख़ूब सजदे किये, ख़ूब धोखे दिये

अंजुमन[8] कैफ़ो-मस्ती[9] में डूबी रही
शमअ[10] घुलती रही अंजुमन के लिए

ऐ 'हफ़ीज़' उसने किस सादगी से कहा
आप क्या अर्ज़ करते हैं फ़रमाइए ।

■ **हफ़ीज़ मेरठी**

1. सोने से भरी थैली 2. ओस 3. शोर-शराबे का दौर 4. ख़ामोशी 5. टिप्पणी 6. शराब पिलाने वाला 7. शराबख़ाने 8. महफ़िल 9. नशा और मस्ती 10. चिराग़, मोमबत्ती ।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
ज़कात (दान) देना अनिवार्य है (हदीस मंजरी)		6
एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति (संपादकीय)		7
अंधेरा रेस्टोरेंट (आपके पत्र)		9
इन्सानी ज़िन्दगी का उद्देश्य सिर्फ़ अल्लाह की इबादत (आस्था)		11
जीवन का मूल उद्देश्य (विचारणीय)	–श्याम नारायण चौहान	15
कुरआन के वैज्ञानिक सत्य (उद्‌बोधन)	–संपादन प्रभाग	17
आधार के औचित्य पर सवाल (विचार)	–अभिषेक कुमार	21
इस्लाम और मानवीय चेतना (आस्था)	–विजय गोपाल मंगल	23
ईदुल-फ़ित्र : भाईचारे का त्योहार (विशेष आयोजन)	–मुहम्मद सलीम इंजीनियर	26
ईदुल फ़ित्र : पुरस्कार का दिन	–शेख़ मक़बूल अहमद	27
महिला समस्याओं का निदान आवश्यक (महिला जगत)	–ज़हीर ललितपुरी	31
खिलौना (कहानी)	–त्रिलोचन अरोरा	35
हरफ़नमौला पत्रकार : विद्या प्रकाश	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	37
क्या हमारे हालात संतोषजनक हैं ?	–संपादन प्रभाग	38
थप्पड़ खाने को नहीं पहनी वर्दी...(नज़रिया)	–वेद व्यास	39
हिन्दी भाषा में विदेशी भाषाओं के शब्द (साहित्यिकी)	–विद्या प्रकाश	41
भोजन के बीच में पानी पीना (स्वास्थ्य चर्चा)	–अनोखी लाल कोठारी	43
लावारिस बच्चे बने वैज्ञानिक (प्रेरणा)	–भारत भूषण	44
विरासत के इस्लामी क़ानून का पालन	–संपादन प्रभाग	45
छिनता बचपन	–संपादन प्रभाग	48
क़ाज़ी का न्याय (बालवीथी)		49

कुरआन ज्योति

(32) तब तो यही अल्लाह तुम्हारा वास्तविक रब है।[38] फिर सत्य के बाद गुमराही के सिवा और क्या बाक़ी रह गया ? आख़िर यह तुम किधर फिराये जा रहे हो ?[39] (33) (ऐ नबी ! देखो,) इस तरह अवज्ञा करने वालों पर तुम्हारे रब की बात सच्ची हो गयी कि वे हरगिज़ न मानेंगे।[40]

(34) इनसे पूछा, "तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो सृष्टि का आरंभ भी करता हो और फिर उसे दोहराए भी ?" कहो, "वह केवल अल्लाह है जो सृष्टि का आरंभ भी करता है और उसे दोहराता भी ?[41] फिर तुम यह किस उलटी राह पर चलाए जा रहे हो ?[42]

–क़ुरआन, 10 : 32,34

38. अर्थात अगर ये सारे काम अल्लाह के हैं, जैसा कि तुम स्वयं मानते हो, तब तो तुम्हारा वास्तविक पालनहार, स्वामी, आक़ा और तुम्हारी बन्दगी और इबादत का हक़दार अल्लाह ही हुआ। ये दूसरे जिनका इन कामों में कोई हिस्सा नहीं, आख़िर पालनहारी में कहां से शरीक हो गये ?

39. ध्यान रहे कि संबोधन सामान्य लोगों से है और उनसे प्रश्न यह नहीं किया जा रहा है कि 'तुम किधर फिरे जाते हो ? बल्कि यह है कि 'तुम किधर फिराए जा रहे हो ?' इससे स्पष्ट है कि कोई ऐसा गुमराह करने वाला आदमी या गिरोह मौजूद है जो लोगों को सही दिशा से हटाकर ग़लत दिशा पर फेर रहा है। इसी कारण लोगों से अपील यह की जा रही है कि तुम अंधे बनकर ग़लत रास्ता दिखाने वालों के पीछे क्यों चले जा रहे हो, अपनी गांठ की बुद्धि से काम लेकर सोचते क्यों नहीं कि जब वास्तविकता यह है तो आख़िर यह तुम्हें किधर चलाया जा रहा है। प्रश्न करने की यह शैली जगह-जगह ऐसे अवसरों पर क़ुरआन में अपनायी गयी है और हर जगह गुमराह करने वालों का नाम लेने के बजाय उनको 'कर्म वाच्य शैली' के परदे में छिपा दिया गया है, ताकि उनसे श्रद्धा रखने वाले ठंडे दिल से अपने मामले पर विचार कर सकें और किसी को यह कहकर उन्हें उत्तेजित करने और उनका मानसिक संतुलन बिगाड़ देने का मौक़ा न मिले कि देखो, ये तुम्हारे बुज़ुर्गों और पेशवाओं पर चोटें की जा रही हैं। इसमें प्रचार-विधि का एक महत्वपूर्ण बिन्दु छिपा हुआ है जिससे ग़ाफ़िल न रहना चाहिए।

40. अर्थात ऐसी खुली-खुली और सबकी समझ में आने वाले प्रमाणों से बात समझाई जाती है, लेकिन जिन्होंने न मानने का निर्णय कर लिया है, वे अपने दुराग्रह से किसी तरह मानकर नहीं देते।

41. जन्म के आरंभ के बारे में तो मुश्रिक मानते ही थे कि यह केवल अल्लाह का काम है, उनके शरीकों में से

(शेष पृष्ठ 10 पर)

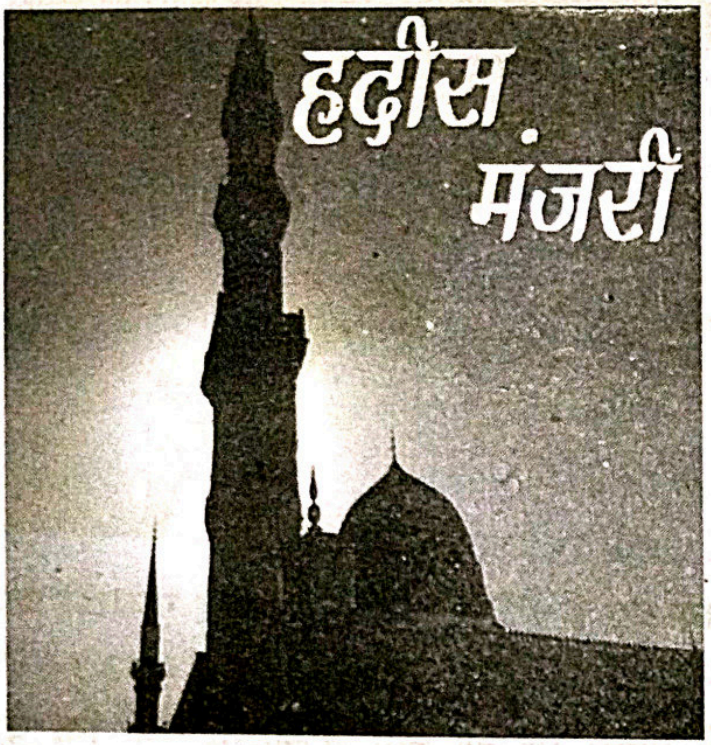

ज़कात (दान) देना अनिवार्य है

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "इस्लाम की आधारशिला पांच चीज़ों पर रखी गयी है : इसकी गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात देना, अल्लाह के घर (काबा) का हज और रमज़ान के रोज़े रखना ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि नज्द वालों में से एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास आया । उसके सिर के बाल बिखरे हुए थे । हम उसकी आवाज़ की गूंज तो सुन रहे थे, किन्तु हम समझ नहीं रहे थे कि वह क्या कह रहा है ? यहां तक कि वह अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के क़रीब हो गया और आपसे इस्लाम के संबंध में पूछने लगा । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "रात-दिन में पांच नमाज़ें अनिवार्य हैं ।" उसने कहा : क्या मुझ पर उनके अतिरिक्त भी कुछ है ? आपने कहा : "नहीं । हां चाहो तो स्वैच्छिक नमाज़ें पढ़ सकते हो ।" फिर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "रमज़ान के रोज़े अनिवार्य हैं ।" उसने कहा : क्या मुझ पर उनके अतिरिक्त भी रोज़े हैं ? आपने कहा : "नहीं, हां चाहो तो स्वैच्छिक रोज़े रख सकते हो ?" रावी कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उससे ज़कात का ज़िक्र किया । उसने कहा : क्या उसके अतिरिक्त भी मेरे ज़िम्मे कुछ है ? आपने कहा : "नहीं, हां चाहो तो स्वैच्छिक रूप से कुछ और दे सकते हो ।" वह व्यक्ति यह कहते हुए वापस लौटा : अल्लाह की क़सम, मैं न इसमें कुछ और बढ़ाऊंगा और न इसमें कोई कमी करूंगा । इस पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "यदि उसने सच कहा, तो वह सफल हो गया ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) को (हाकिम बनाकर) यमन वालों की तरफ़ भेजा और कहा : "तुम उन्हें इस बात के लिए आमंत्रित करना कि वे इसकी गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूं । फिर अगर वे इस बात को मान लें, तो उन्हें बताना कि अल्लाह ने उन पर हर दिन-रात में पांच बेला की नमाज़ें अनिवार्य की हैं । अगर वे इसका भी पालन करने लगें, तो उन्हें बताना कि अल्लाह ने उन पर ज़कात (दान) अनिवार्य की है जो उनके धनवानों से ली जाएगी और उनके निर्धनों को दी जाएगी ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मुझे आदेश मिला है कि उस समय तक लोगों से युद्ध करूं जब तक कि वे इस बात की गवाही न दें कि अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं और यह कि (हज़रत) मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें । जब वे ऐसा कर लें, तो उन्होंने अपने ख़ून और अपने माल को मुझसे बचा लिया सिवाय उस हक़ के जो इस्लाम का होता है और उनका हिसाब लेना अल्लाह के ज़िम्मे है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति

वेद में एकेश्वरवाद की शिक्षा बहुत उभरी हुई है । कहा गया है ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'' अर्थात परमात्मा एक है, अद्वितीय है, दूसरा कुछ भी नहीं है । (GOD is One Otherwise None) शतपथ ब्राह्मण (14/4/2/22) का कथन है कि जो एक परमात्मा को छोड़कर अन्य की भक्ति करता है, वह विद्वानों में पशु के समान है। इस्लाम का सूक्त वाक्यांश है–''अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह'' अर्थात, 'मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं ।'

पवित्र कुरआन में है–''कुल हुवल्लाहु अहद । अल्लाहुस-समद । लम्म यलिद व लम यूलद । व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद । (112 : 1-4)''। हिंदी में इसका अनुवाद है–कहो, वह अल्लाह है यकता । अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं । न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान। और कोई उसका समकक्ष नहीं है ।''

मौलाना रूम कहते हैं–

दुई रा चूं बदर करदम यके दीदम दो आलम रा,
यके बीनम, यके जोयम, यके ख़ानम, यके दानम ।

अर्थात, जब मैंने अपने मन से परायेपन को निकाल बाहर कर दिया, तब दोनों लोकों को एक देखा । अब उसे एक ही देखता हूं; एक ही ढूंढ़ता हूं, एक को ही भजता हूं और एक को ही जानता हूं ।

सिख धर्म की मौलिक शिक्षा एकेश्वरवाद है । गुरु ग्रंथ साहिब का मूल मंत्र है–''इक्क ओन्कार सत नाम करता पुरख निरभऊ निरवैरअकाल मूरत अजूनी सैभं गुर प्रसाद'' अर्थात, एक परमात्मा, जिसका नाम सत्य है, कृति करने वाला पुरुष, निर्भय, द्वेष-रहित, अकाल मूर्ति (सनातन छवि), अजन्मा स्वयंभु (स्वयं से उत्पन्न हुआ), गुरु-कृपा से प्राप्त ।'' गुरु नानक जी का उपदेश है, ''अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे एक नूर ते सब जग उपज्या, कौन भले कौ मंदे ।''

तुलसीदास जी 'रामचरित मानस' में लिखते हैं कि शंकर जी ने पार्वती जी से कहा–

उमा जे चरन रत बिगत काम मद क्रोध,

निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोधा । (उत्तर कांड 112 ख) अर्थात भक्त किसी ने द्वेष नहीं करता या किसी पर क्रोध नहीं करता । किससे करे ? किस पर करे ? सारा जगत तो उसे स्वामी का स्वरूप दीखता है ।

इसी भाव को गुरु नानक जी ने इन शब्दों में प्रकट किया है–

मन ते बिनसै सगला भरमु,
करि पूजै सगल पार ब्रह्मु ।

(अष्टपदी 9 सबद 3-2)

अर्थात, भक्त अपने मन से (परायेपन के, सारे भ्रमों को त्याग देता है तथा संपूर्ण ब्रह्मांड को (विभिन्न नामों और रूपों में) पारब्रह्म (का स्वरूप) समझ कर उससे प्रेम करता है ।

परायेपन के भाव से ही बहुत से झगड़े, बखेड़े और समस्याएं आती हैं, जैसा कि आज हम देख रहे हैं कि इस भाव के फैलाव से धरती की शांति छिनती जा रही है । लोग दूसरों को दुख पहुंचा कर सुख का अनुभव करते हैं । यह इन्सानियत के विरुद्ध है । मौलाना रूम कहते हैं–

मयाज़ार कसे व हर चीज़ ख़ाही कुन,
कि दर तरीकते मन ग़ैर अजीं गुनाहे नेस्त ।

अर्थात, किसी को दुख न दो । इसके अतिरिक्त और तेरे जी में जो कुछ भी आए कर, क्योंकि मेरे धर्म में इससे बढ़कर और कोई पाप ही नहीं ।

महान इस्लामी विद्वान एवं फ़ारसी कवि शेख़ सअदी ने अपने मशहूर काव्य-संकलन ''गुलिस्तां'' में कहा है–

बनी आदम आज़ाए-यक दीगरंद,
कि दर आफ़रीनद ज़ि जौहर अंद ।

अर्थात, आदि उत्पत्ति में क्योंकि एक ही माता-पिता से सभी मनुष्य उत्पन्न हुए हैं, इसलिए सब मनुष्य एक-दूसरे के अंग हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–''अल्-ख़ल्कु इयालुल्लाह, फअ हब्बुल्ख़ल्क़ इलल्लाहि मन अहसन इला इयालिही ।''

अर्थात, सब प्राणी परमात्मा के कुटुम्बी हैं । अल्लाह की दृष्टि में सबसे अधिक चहेता है, जो उसके कुटुम्ब से सद्व्यवहार करता है ।

बृहदारण्यक उपनिषद् के एक श्लोक से प्रसूत एक सुभाषित है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः । सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु । मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ।

अर्थात, संसार में सब सुखी रहें, सब नीरोग या स्वस्थ रहें, सबका कल्याण हो और विश्व में कोई दुखी न हो ।

शेख़ सअदी कहते हैं–

गमे रोज़ी मख़ुर बरहम मजन ऊ रा कि दफ़्तर रा,
कि पेश अज़ तिफ़्ल ईजद पुर कुनद पिस्ताने मादर रा ।

व्याख्या–हे मनुष्य, तू अपनी आजीविका की चिंता न कर, इसके लिए भाग्य के पन्नों को उलट-पुलट कर परेशान न हो, क्योंकि इसकी चिंता स्वयं परमात्मा को है । इसका एक प्रमाण यह है कि बच्चे के जन्म से पूर्व ही परमात्मा बच्चे के लिए मां के स्तनों में दूध भर देता है ।

आज भौतिकता का युग है । मनुष्य की सारी चीज़ें धन-केन्द्रित हो गयी हैं, यहां तक कि निकटवर्ती संबंध धनाधारित हो गये हैं । सबको धन-आजीविका अर्जन में की ही चिंता है । इस चिंता के चक्कर में मनुष्य अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य भूल चुका है । वह परमात्मा पर विश्वास नहीं कर पा रहा है कि जो परमात्मा जन्म लेने से पूर्व ही मनुष्य के आहार का प्रबंध कर देता है, तो क्या उसके बड़ा होने पर उसकी आजीविका का ध्यान न रखेगा...अवश्य रखेगा । किन्तु आम संसारी मनुष्य इस सच्ची बात पर विश्वास न करके हर समय धन-आजीविका की चिंता में अधीर-परेशान और चिंतित रहता है, यहां तक कि उसके जीवन का चैन, सुख-शांति...सब नष्ट हो जाता है । गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–

प्रारब्ध पहले बना, पाछै बन्यो सरीर,
तुलसी यह आश्चरज है, मन नहिं बांधे धीर ।

अर्थात, ''जीव का शरीर तो बाद में बनता है–उसका जन्म तो बाद में होता है, जबकि परमात्मा उसका प्रारब्ध पहले ही तैयार कर देता है । यह आश्चर्य का विषय है कि मनुष्य का मन इस बात पर विश्वास न करके हर समय आजीविका के लिए अधीर बना रहता है ।''

वास्तव में यह व्यर्थ की चिंता है । मनुष्य को कर्म करते रहना चाहिए, चिंता नहीं...चिंता तो चिता समान है; जो मनुष्य की मानसिक-शारीरिक क्षमताओं को हर लेती है ।

प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा,
प्रभ कै सिमरनु उधरे मूचा । (सुखमणि)

''प्रभु-स्मरण सबसे उच्च है, यह तमाम कष्टों से मनुष्यों को बचाता है ।''

अंधेरा रेस्टोरेंट

ज़िन्दगी में हार मानना सबसे आसान होता हैं, कमियों की दुहाई देना बहुत आसान होता हैं । कोई भी इन्सान अपने आप में परिपूर्ण नहीं होता, हम सबमें कोई न कोई कमी होती हैं और इन्सान में कोई न कोई ख़ूबी भी ज़रूर होती हैं । जैसे ज़ौहरी को हीरे की परख होती है । सुनार को सोने की, वैसे ही ज़िन्दगी भी अपनी ही कसौटी पर आदमी को परखती है । कुछ लोग ज़िन्दगी की मुसीबतों से घबराते नहीं हैं । कुछ लोग हरहाल में एक ख़ुशहाल और आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं, क्योंकि कुछ लोगों में ही होती हैं आम से ख़ास बनने की चाहत ? एक उड़ान भरने की चाहत ।

हैदराबाद अपने आप में एक बहुत ख़ूबसूरत शहर है, निज़ामों का शहर, देश की सांस्कृतिक धरोहर का शहर, चारमीनार और हुसैन सागर हैदराबाद की ख़ूबसूरती में चार चांद लगाते हैं, तो गोलकुंडा क़िला यहां की विरासत हैं । वैसे कुछ ऐसा भी है इस शहर में जिसे जानकर आपको सिर्फ़ शहर पर ही नहीं बल्कि यहां के लोगों पर भी गुमान होगा, यहां का इनऑर्बिट मॉल और वहां का एक ख़ास रेस्टोरेंट ''डाइलोग इन दा डार्क'' जहां सिर्फ़ अंधेरा है, वहां रोशनी की एक किरण भी नहीं है, रेस्टोरेंट जाते ही आपको सारा सामान, पर्स मोबाइल फ़ोन कैमरा सब कुछ एक लॉकर में रखवा दिया जाता है, आपके पास लॉकर की चाबी होती है और कोई सामान नहीं । रेस्टोरेंट में जाने से पहले काउंटर पर आपकी पसंद शाकाहारी खाना या नॉन वेज खाना आपसे पूछ लिया जाता है, काउंटर पर ही आप बिल पे कर देते हैं।

उसके बाद आप रेस्टोरेंट में जाते हैं, जहां बिल्कुल अंधेरा है, वहां आपको गाइड करते हैं रेस्टोरेंट के एम्प्लाइज वो आपको आपकी टेबल चेयर तक लेकर जाते हैं । टेबल चेयर पर जब आप हाथों से छुकर महसूस कीजिए आपको उतनी ही सफ़ाई महसूस होगी जितनी और रेस्टोरेंट में होती हैं । रेस्टोरेंट में कितने ही गेस्ट क्यों न हो यह काम करने वाले किसी को टकराने नहीं देते, उनके काम में आप निपुणता को देखिए आपकी टेबल पर खड़े रहकर आपको गाइड करते हैं कि कहां क्या रखा है, आपको टेबल पर टिशू, चम्मच, फोक सब कुछ मिलता है, पानी के लिए वाटर बॉटल आपके हाथ में मिलती हैं, उसके बाद आपको खाना सर्व किया जाता है आपकी पसंद का वेज या नॉन वेज ।

आपकी थाली में क्या-क्या होगा वो आपको बताया जाता है ? रेस्टोरेंट की टीम में से ही आपको कोई एक गाइड करता है, वेज थाली में कौन-कौन सी डिश हैं और नॉन वेज थाली में कौन-कौन सी डिश हैं । अंधेरे में खाना खाना यह बिल्कुल अलग अनुभव होता है । कुछ ऐसा जो आपने पहले कभी महसूस न किया हो । खाने को ख़ुशबू से पहचाना वास्तव में एक हुनर ही तो है, जिसकी परख आप इस ''रेस्टोरेंट'' में ज़रूर कर पाएंगे । हमें बचपन से सिखाया जाता है कि अगर सब्र हो तो काम अच्छा होता है, आप खाना बिना देखे कितनी अच्छी तरह से खा सकते हैं, इसकी परख आपको यहां पर होगी ।

जब आप खाना खा लेते हैं उसके बाद आपकी टेबल को क्लीन कर दिया जाता है, आपको बोल्स सर्व किये जाते हैं ताकि आप हाथ धो सके, उसके बाद आपको मीठा खिलाया जाता है और जैसे की आप बिल पहले ही दे चुके हैं । सिर्फ़ यह कहना होता है कि हमने खाना खा लिया अब हमें रेस्टोरेंट से बाहर जाना है, कोई टिप नहीं लेते वो आपसे। आपको बाहर लेकर आते हैं ।

गेट पर आते ही जहां थोड़ी रोशनी है वहां वे पूछते हैं आपसे आपके अनुभव के बारे में, और आप से आपका फीडबैक मांगते हैं, हमारी तरह सब उनसे एक ही सवाल पूछते हैं कि वो अपना काम इतनी अच्छी तरह से कैसे कर लेते हैं ? वो सिर्फ़ एक बात कहते हैं कि उनकी ''मेहनत'' और लगन और वे आंखों से देख नहीं सकते ?

सच कितना अलग है यह रेस्टोरेंट जो ज़िन्दगी जीना सिखाता है, रेस्टोरेंट से निकलते समय हमें एहसास हुआ की वास्तव में कितनी ख़ुशी और जोश से वो सब लोग अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ कर रहे थे ? हमें एहसास भी नहीं हुआ की जो अंधेरे में हमें गाइड कर रहा है, रास्ता दिखा

रहा है वो आंखों से देख नहीं सकता ? कभी सोचा है हमने की जब "ईश्वर" ज़िन्दगी का एक रास्ता बंद करता है, तो दूसरे की उम्मीद ज़रूर देता है । आप कभी समय निकाल कर इस रेस्टोरेंट में ज़रूर जाइए ? जहां लोग आपसे किसी दया की उम्मीद नहीं रखते ?

वास्तव में यह हैं सच्चे नागरिक जो मुश्किलों की नहीं जज़्बे की बात करते हैं ? उनकी कमी के बारे में हमें पता भी नहीं चला । ज़्यादातर रेस्टोरेंट में हम सब टिप देकर आते हैं, पर ये लोग आपसे किसी दया की उम्मीद ही नहीं करते ? यह तो बस आपको ज़िन्दगी का एक अलग अनुभव सिखाते हैं ? क़ुदरत ने इन्हें आंखें नहीं दी तो क्या पर ज़िन्दगी जीने का सलीक़ा तो दिया है । क्या आपने कभी सोचा है ? की ईश्वर को तो किसी ने नहीं देखा न सुना न महसूस किया पर फिर भी हम अपनी हर मुराद हम उस तक पहुंचाते तो हैं न ।

ठीक वैसे ही आंखों से न दिखाई दे तो कोई बात नहीं । पर ज़िन्दगी में कभी भी अंधे बनकर न जिये ? क्योंकि अक्सर धोखा आंखों के होते हुए भी मिलता है । इस रेस्टोरेंट को देख यहां खाना खाने के बाद आपका नज़रिया ज़रूर बदलेगा ? अगर कभी भी इस ज़िन्दगी में थोड़ा भी मौक़ा मिले । तो इन अनमोल पलों को महसूस ज़रूर कीजिए ।

दीप्ति सक्सेना

ब्लॉक 'बी', नल्ला गांडला, हैदराबाद

आधार कार्ड टेटू भी अनिवार्य संभव

मोदी जल्दी ही भारत को इलेक्ट्रॉनिक देश घोषित करने के लिए 125 करोड़ लोगों के माथे पर भी आधार कार्ड का टेटू गुदवाना अनिवार्य कर सकते हैं और अभी तक तो आधार कार्ड पर बायोमेट्रिक रिकॉर्डिंग ही उपलब्ध है, लेकिन जल्दी ही एक माइक्रो चिप इसमें फिट कर दी जाएगी । वह दिन दूर नहीं जब गर्भस्थ शिशु को आधार कार्ड जारी कर दिया जाएगा ताकि जन्त के बाद से उसकी सारी गतिविधियों पर सरकार निगरानी रख सकेगी । पेन कार्ड, राशन कार्ड, आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, शादी सर्टिफिकेट, रेल बस हवाई जहाज़ टिकट, जी०एस०टी०, इन्कम टैक्स रिटर्न, टेलीफ़ोन, शिक्षा और सरकारी कर्मचारी तो आधार कार्ड से लिंक हो ही चुके हैं बस फिजिकली आधार कार्ड माथे पर गुदवाना शेष रह गया है और संभव है कि आज़ादी के 75वीं वर्षगांठ पर यह उपलब्धि मोदी अम्बेडकर को समर्पित करें क्योंकि गांधी को स्वच्छता अभियान पहले ही समर्पित हो चुका है । सातवें वेतन आयोग लागू होने के बाद बहुत से चतुर्थ और तृतीय श्रेणी सरकारी कर्मचारी भी आयकर सीमा के दायरे में आ गये हैं जिसको वित्त मंत्री नोटबंदी की उपलब्धि बता रहे हैं, क्योंकि उनका कहना है कि देश को निन्यानवे लाख नये आयकर दाता मिलेंगे जबकि आयकर रिटर्न दाख़िल प्रक्रिया अभी शुरू भी नहीं हुई है ? वास्तव में देश बदल रहा है और आगे बढ़ भी रहा है, लेकिन अपने पीछे कभी न भरने वाली खाई भी तैयार कर रहा है, क्योंकि भ्रष्टाचार हर सरकार का आभूषण है और जगज़ाहिर है कि आभूषणों से लगाव रहना मानवीय संस्कृति और स्वाभाविक आचरण भी है ।

रचना रस्तोगी

मेरठ

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

किसी की इस काम में कोई भागीदारी नहीं । रहा दोबारा पैदा करना, तो स्पष्ट है कि जो आरंभ में पैदा करने वाला है वही जन्म के इस कार्य को दोहरा भी सकता है । मगर जो आरंभ ही में पैदा करने में समर्थ न हो, वह किस तरह जन्म के दोहराने में समर्थ हो सकता है । यह बात यद्यपि स्पष्ट रूप से बुद्धि में आने वाली बात है और स्वयं मुश्रिकों के दिल भी भीतर से इसकी गवाही देते थे कि बात बिल्कुल ठिकाने की है, लेकिन उन्हें इसको स्वीकार करने में इस कारण संकोच था कि उसे मान लेने के बाद आख़िरत का इन्कार कठिन हो जाता है । यही कारण है कि ऊपर के प्रश्नों पर तो अल्लाह ने फ़रमाया कि वे स्वयं कहेंगे कि ये काम अल्लाह के हैं, मगर यहां इसके बजाय नबी (सल्ल०) से इरशाद होता है कि तुम डंके की चोट पर कहो कि जन्म को आरंभ करने और उसे दोहराने का काम भी अल्लाह ही का है ।

42. अर्थात जब तुम्हारे आरंभ का सिरा भी अल्लाह के हाथ में है और अन्त का सिरा भी उसी के हाथ में, तो स्वयं अपना हितैषी बनकर तनिक सोचो कि आख़िर तुम्हें यह क्या समझाया जा रहा है कि इन दोनों सिरों के बीच में अल्लाह के सिवा किसी और को तुम्हारी बन्दगियों और नियाज़मंदियों का अधिकार पहुंच गया है ।

इन्सानी ज़िन्दगी का उद्देश्य सिर्फ़ अल्लाह की इबादत

● संपादन प्रभाग

इस सम्पूर्ण ब्रह्मांड और इन्सान का अल्लाह (ईश्वर) एक है । ईश्वर ने इन्सान को बनाया और उसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रबंध किया । इन्सान को इस ग्रह पर जीवित रहने के लिए लाइफ सपोर्ट सिस्टम दिया । इन्सान को उसके मूल प्रश्नों का उत्तर भी बताया ।

इन्सान को क्या कोई बनाने वाला है ? अगर है, तो वह क्या चाहता है ? इन्सान को पैदा क्यों किया गया ? इन्सान के जीवन का उद्देश्य क्या है ? अगर है, तो उस उद्देश्य को पाने का तरीक़ा क्या है ? इन्सान को आज़ाद पैदा किया गया या मजबूर ? अच्छी ज़िन्दगी कैसे गुज़ारी जा सकती है ? मरने के बाद क्या होगा ? इत्यादि । यह इन्सान के बुनियादी सवाल हैं, जिनका जानना उसके लिए बहुत ज़रूरी है ।

इन्सानों में से ईश्वर ने कुछ इन्सानों को चुना, जो पैग़म्बर (ईशदूत) कहलाए । उन्हें अपना सन्देश भेजा, जो सभी इन्सानों के लिए मार्गदर्शन है । पहले इन्सान व पैग़म्बर हज़रत आदम (अलैहि०) से लेकर आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तक अनेक ईशदूत आए, जो कि हर क़ौम में भेजे गये । सभी ईशदूतों ने लोगों को उन्हीं की भाषा में ईश्वर का सन्देश दिया ।

प्रश्न यह है कि बार-बार अनेक पैग़म्बर क्यों भेजे गये? वास्तव में प्राचीनकाल में परिवहन एवं संचार के साधनों की कमी के कारण, एक जगह की ख़बर दूसरी जगह पहुंचना मुश्किल थी । दूसरे यह कि लोग ईश्वर के सन्देश को बदल देते थे, तब ज़रूरत होती थी कि दोबारा ईश्वर का संन्देश आये ।

सभी पैग़म्बरों ने एक ही सन्देश दिया कि ईश्वर एक है, दुनिया इम्तिहान की जगह है और मरने के बाद ज़िन्दगी है । पहले के सभी पैग़म्बरों का मिशन लोकल था, मगर आख़िरी पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का मिशन यूनीवर्सल है । आख़िरी पैग़म्बर पर ईश्वर का जो अंतिम सन्देश (क़ुरआन) उतरा, उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी स्वयं ईश्वर ने ली है । चौदह सौ साल से अधिक हो चुके हैं, मगर आज तक उसे बदला नहीं जा सका । ईश्वर का सन्देश अपनी अस्ल शक्ल (मूलरूप) में मौजूद है, इसलिए कि अब ज़रूरत नहीं है कि कोई नया ईशदूत आये ।

क़ुरआन का केन्द्रीय विषय इन्सान है । क़ुरआन इन्सान के बारे में ईश्वर की स्कीम को बताता है । क़ुरआन बताता है कि इन्सान को सदैव के लिए पैदा किया गया है और उसे शाश्वत जीवन दिया गया है । ईश्वर ने इन्सान के जीवन को दो भागों में बांटा है : मौत से पहले का समय, जो अस्थाई है, इन्सान के इम्तिहान के लिए है । मौत के बाद का समय, जो स्वर्ग या नरक के रूप में दुनिया में किये गये अच्छे या बुरे कर्मों का बदला मिलने के लिए है । यह कभी न ख़त्म होने वाला स्थाई दौर है । इन दोनों के बीच में मौत एक तबादले के रूप में है ।

क़ुरआन बताता है कि दुनिया इन्सान के लिए एक परीक्षा स्थल है । इन्सान की ज़िन्दगी का उद्देश्य ईश्वर की इबादत (उपासना) है । (क़ुरआन, 51:56) इबादत का अर्थ ईश्वर केन्द्रित जीवन व्यतीत करना है । इबादत एक पार्ट-टाइम नहीं, बल्कि फुल टाइम अमल है, जो पैदाइश से लेकर मौत तक जारी रहता है । वास्तव में इन्सान की पूरी ज़िन्दगी इबादत है, अगर वह ईश्वर की मर्ज़ी के अनुसार व्यतीत हो । ईश्वर की मर्ज़ी के अनुसार जीवन व्यतीत करने का आदी बनाने के लिए, आवश्यक था कि कुछ प्रशिक्षण भी हो, इसलिए नमाज़, रोज़ा (निराहार उपवास), ज़कात और हज को इसी प्रशिक्षण के रूप में रखा गया ।

इनमें समय की, एनर्जी की और दौलत की क़ुरबानी द्वारा इन्सान को आध्यात्मिक उत्थान के लिए और उसे व्यावहारिक जीवन के लिए लाभदायक बनाने के लिए

प्रशिक्षित किया जाता है । इस ट्रेनिंग को बार-बार रखा गया, ताकि इन्सान को अच्छाई पर स्थिर रखा जा सके, क्योंकि इन्सान अन्दर व बाहर से बदलने वाला अस्तित्व रखता है ।

ईश्वर सबसे बेहतर जानता है कि कौन-सी चीज़ इन्सान के लिए लाभदायक है और कौन-सी हानिकारक । ईश्वर इन्सान का भला चाहता है इसलिए उसने हर वह काम को जिसके करने से इन्सान स्वयं को हानि पहुंचाता, उसे करना हराम (अवैध) ठहराया और हर उस काम को जिसके न करने से इन्सान स्वयं को हानि पहुंचाता, इबादत कहा और उनका करना इन्सान के लिए अनिवार्य कर दिया ।

ईश्वर का अंतिम सन्देश कुरआन, दुनिया में पहली बार रमज़ान के महीने में अवतरित होना शुरू हुआ । इसीलिए रमज़ान का महीना कुरआन का महीना कहलाया । इसे कुरआन के मानने वालों के लिए शुक्रगुज़ारी का महीना बना दिया गया और इस पूरे महीने रोज़े रखने अनिवार्य किये गये।

रोज़ा एक इबादत है । रोज़े को अरबी भाषा में ''सौम'' कहते हैं । इसका अर्थ ''रुकने और चुप रहने'' के हैं । कुरआन में इसे ''सब्र'' भी कहा गया है, जिसका अर्थ है 'स्वयं पर नियंत्रण' और स्थिरता व जमाव (Stability)।

इस्लाम में रोज़े का मतलब होता है केवल ईश्वर के लिए, भोर से लेकर सूरज डूबने तक खाने-पीने, सभी बुराइयों (और पति-पत्नी का सहवास करने) से स्वयं को रोके रखना । अनिवार्य रोज़े, जो केवल रमज़ान के महीने में रखे जाते हैं और यह हर व्यस्क मुसलमान के लिए अनिवार्य हैं । कुरआन में कहा गया है–

''ऐ ईमान लाने वालो ! तुम पर रोज़े अनिवार्य किये गये, जिस प्रकार तुम से पहले के लोगों पर किये गये थे, शायद कि तुम डर रखने वाले और परहेज़गार बन जाओ ।''

(कुरआन, 2:183)

''रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और मार्गदर्शन और सत्य-असत्य के अंतर के प्रमाणों के साथ । अत: तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो, उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या यात्रा में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले । ईश्वर तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती और कठिनाई नहीं चाहता और चाहता है कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है, उस पर ईश्वर की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।''

(कुरआन, 2:185)

रोज़ा एक बहुत महत्वपूर्ण इबादत है । हर क़ौम में, हर पैग़म्बर ने रोज़ा रखने की बात कही । आज भी रोज़ा हर धर्म

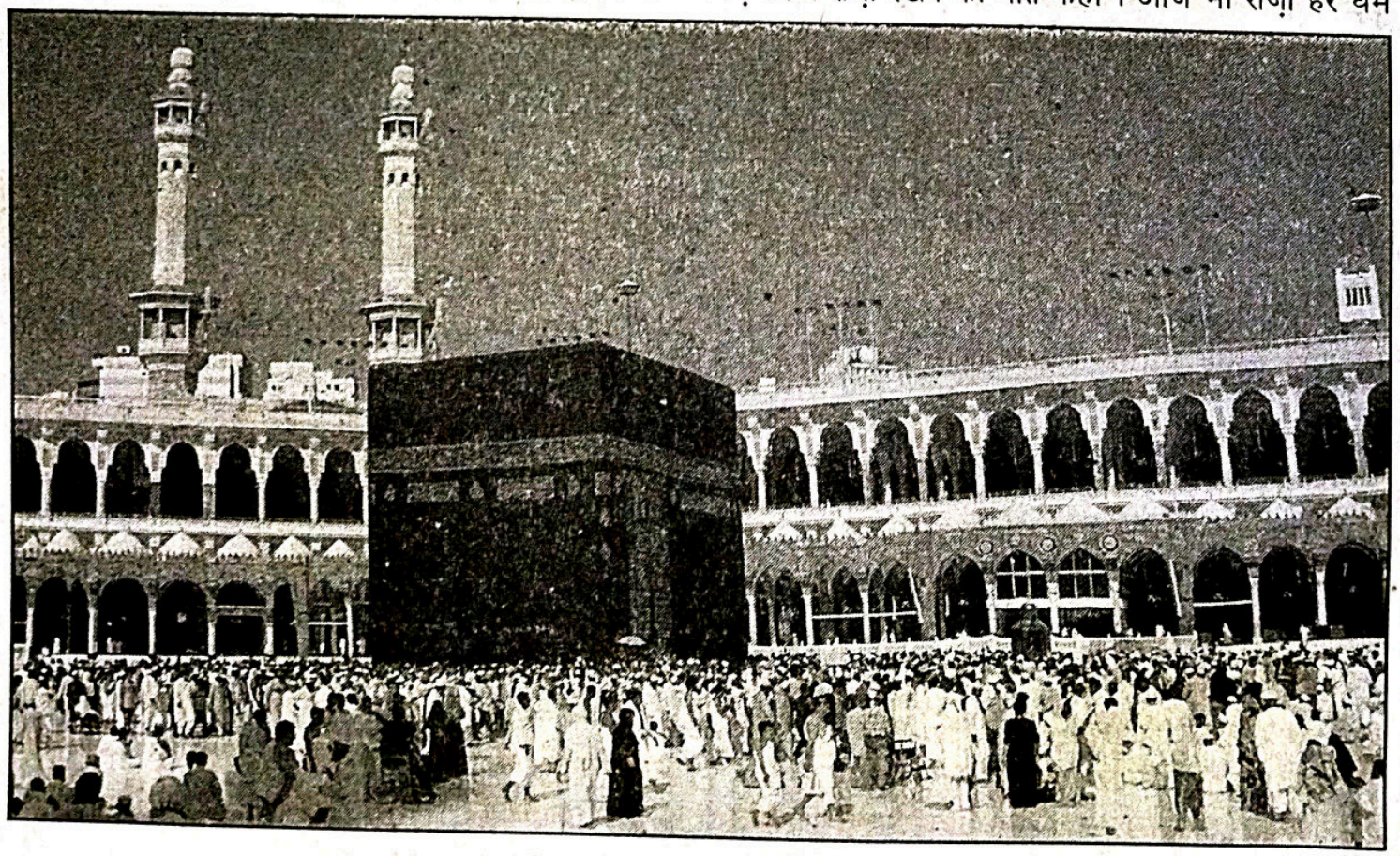

में किसी न किसी रूप में मौजूद है । क़ुरआन के अनुसार रोज़े का उद्देश्य इन्सान में तक़वा या संयम (God-Consciousness) पैदा करना है । तक़वा का एक अर्थ है 'ईश्वर का डर' और दूसरा अर्थ है 'ज़िन्दगी में हमेशा एहतियात वाला तरीक़ा अपनाना ।' ईश्वर का डर एक ऐसी बात है जो इन्सान को असावधान होने अर्थात असफल होने से बचा लेता है ।

क़ुरआन की आयत (Verse) 'ताकि तुम डर रखने वाले और परहेज़गार बन जाओ'–2:183, से पता चलता है कि रोज़ा, इन्सान में ईश्वर का डर पैदा करता है और उसे परहेज़गार (संयमी) बनाता है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाय–

''जिस व्यक्ति ने (रोज़े की हालत में) झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा, तो ईश्वर को इसकी कुछ आवश्यकता नहीं कि वह (रोज़ा रखकर) अपना खाना-पीना छोड़ दे ।'' (बुख़ारी)

''कितने ही रोज़ा रखने वाले ऐसे हैं, जिन्हें अपने रोज़े से भूख-प्यास के अतिरिक्त कुछ हासिल नहीं होता ।'' (दारमी)

रोज़ा रखना इन्सान की हर चीज़ को पाबन्द (नियमबद्ध) बनाता है । आंख का रोज़ा यह है कि जिस चीज़ को देखने से ईश्वर ने मना किया, उसे न देखें । कान का रोज़ा यह है कि जिस बात को सुनने से ईश्वर ने मना किया, उसे न सुनें । ज़ुबान का रोज़ा यह है कि जिस बात को बोलने से ईश्वर ने मना किया, उसे न बोलें । हाथ का रोज़ा यह है कि जिस काम को करने से ईश्वर ने मना किया, उसे न करें । पैर का रोज़ा यह है कि जिस तरफ़ जाने से ईश्वर ने मना किया, उधर न जाएं । दिमाग़ का रोज़ा यह है कि जिस बात को सोचने से ईश्वर ने मना किया, उसे न सोचें । इसी के साथ-साथ यह भी है कि जिन कामों को ईश्वर ने पसन्द किया, उन्हें किया जाए । केवल ईश्वर के बताए गये तरीक़े के अनुसार रोज़ा रखना ही इन्सान को लाभ पहुंचाता है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) कहते हैं–

''इन्सान के हर अमल का सवाब (अच्छा बदला) दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ाया जाता है, मगर ईश्वर फ़रमाता है : रोज़ा इससे अलग है, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही इसका जितना चाहूंगा बदला दूंगा ।''

(बुख़ारी व मुस्लिम)

रोज़े का इन्सान के दिमाग़ और उसके शरीर दोनों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है । रोज़ा एक वार्षिक ट्रेनिंग कोर्स है । जिसका उद्देश्य इन्सान की ऐसी विशेष ट्रेनिंग करना है, जिसके बाद वह साल भर 'स्वयं केन्द्रित जीवन' के बजाए, 'ईश्वर-केन्द्रित जीवन' व्यतीत कर सके । रोज़ा इन्सान में अनुशासन (Self discipline) पैदा करता है, ताकि इन्सान अपनी सोचों व कामों को सही दिशा दे सके । रोज़ा इन्सान का स्वयं पर कंट्रोल ठीक करता है । इन्सान के अन्दर गुस्सा, ख़्वाहिश (इच्छा), लालच, भूख, सेक्स और दूसरी भावनाएं हैं । इनके साथ इन्सान का दो में से एक ही रिश्ता हो सकता है : इन्सान इन्हें कंट्रोल करे, या ये इन्सान को कंट्रोल करें । पहली सूरत में लाभ और दूसरी में हानि है । रोज़ा इन्सान को इन्हें क़ाबू करना सिखाता है । अर्थात इन्सान को जुर्म और पाप से बचा लेता है ।

रोज़ा रखने के बाद इन्सान का आत्मविश्वास और आत्मसंयम व संकल्प शक्ति (Will power) बढ़ जाती है । इन्सान जान लेता है कि जब वह खाना-पानी जैसी चीज़ों को दिन भर छोड़ सकता है, जिनके बिना जीवन संभव नहीं, तो वह बुरी बातों व आदतों को तो बड़ी आसानी से छोड़ सकता है । जो व्यक्ति भूख बर्दाश्त कर सकता है, वह दूसरी बातें भी बर्दाश्त (सहन) कर सकता है । रोज़ा इन्सान में सहनशीलता के स्तर को बढ़ाता है ।

रोज़ा इन्सान से स्वार्थपरता और सुस्ती को दूर करता है। रोज़ा ईश्वर की नेमतों (खाना-पानी इत्यादि) के महत्व का एहसास दिलाता है । रोज़ा इन्सान को ईश्वर का सच्चा शुक्रगुज़ार बन्दा बनता है । रोज़े के द्वारा इन्सान को भूख-प्यास की तकलीफ़ का अनुभव कराया जाता है, ताकि वह भूखों की भूख और प्यासों की प्यास में उनका हमदर्द बन सके। रोज़ा इन्सान में त्याग के स्तर को बढ़ाता है ।

इस तरह हम समझ सकते हैं कि रोज़ा ईश्वर का मार्गदर्शन मिलने पर उसकी बड़ाई प्रकट करने, उसका शुक्र अदा करने और परहेज़गार बनने के अतिरिक्त, न केवल इन्सान के दिमाग़ बल्कि उसके शरीर पर भी बहुत अच्छा प्रभाव डालता है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के शब्दों में हम कह सकते हैं–''हर चीज़ पर उसको पाक, पवित्र करने के लिए ज़कात है और (मानसिक व शारीरिक बीमारियों से पाक करने के लिए) शरीर की ज़कात (दान) रोज़ा है ।'' (इब्ने माजा)

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 100 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2016-2017 के सत्र कें लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 18000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 25 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 75 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उंठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN G A/C NO. : 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

जीवन का मूल उद्देश्य

■ श्याम नारायण चौहान
(चन्दौली, उ०प्र०)

भाइयों क्या आप लोगों ने कभी सोचा भी कि ईश्वर ने जो हमें यह मानव तन देकर इस दुनिया में पैदा किया है इस इन्सानी ज़िन्दगी का अस्ल मक़सद क्या है । इसकी वास्तविक मांग क्या है ? इसे सजाने, संवारने तथा कामयाब बनाने के कौन से उपाय कारगर हैं, कौन-सी ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें अपनाने से जीवन में बहार आ सकती है ? यह सर्वविदित है कि ईश्वर ने यह दुनिया बनाई और इसमें इन्सान को सभी जीवनधारियों से श्रेष्ठ बनाया ।

इन्सानों पर यह ईश्वर की बहुत बड़ी कृपा है कि उसने इन्सान को अपने सभी सृष्ट जीवों के मुक़ाबले में विशिष्ट शक्तियां और योग्यताएं दी । उसने अक्ल देने के साथ ही सोचने-समझने तथा निर्णय करने की शक्ति दी । कर्म और इरादे का अधिकार दिया और इस बात की आज़ादी के साथ ही उसकी परीक्षा भी रख दी कि आदमी चाहे तो अच्छे कर्म करके ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त कर ले चाहे तो बुरे कर्म करके ईश्वर की नाराज़गी और प्रकोप का भागीदार बन जाए ।

इन्सान की सबसे बड़ी अक़्लमन्दी यह है कि ईश्वर के बताये हुए मार्ग पर चले और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करे । ईश्वर बड़ा दयालु है उसने हमारे जीवनयापन से संबंधी बहुत सारे सामान पैदा किये । उसने ज़मीन और आकाश बनाये, सूरज-चांद, सितारों की रचना की हवा-पानी आदि का प्रबंध किया तथा हमारे खाने-पीने की बहुत-सी चीज़ें पैदा कीं ।

इन्सान की सबसे बड़ी अक़्लमन्दी यह है कि ईश्वर के बताये हुए मार्ग पर चले और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करे । ईश्वर बड़ा दयालु है उसने हमारे जीवनयापन से संबंधी बहुत सारे सामान पैदा किये । उसने ज़मीन और आकाश बनाये, सूरज-चांद, सितारों की रचना की हवा-पानी आदि का प्रबंध किया तथा हमारे खाने-पीने की बहुत-सी चीज़ें पैदा कीं । इन सबके बावजूद उसने इन्सानों के हिदायत और उनकी जीवन का प्रशस्त एवं सीधा मार्ग दिखाने के लिए अपने ईशदूतों, नबियों और रसूलों को भेजा जिन्होंने ईश्वरीय रास्ते पर चलकर जीवन बिताने का तरीक़ा बताया । सभी ने इन्सानों को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी । सभी ने उपदेश दिया कि ईश्वर एक है वही तुम्हारा और सारी दुनिया का उपास्य है, उसी की पूजा, उपासना और बन्दगी करो उसी के आगे सिर झुकाओ, उसी से सहायता के लिए प्रार्थना करो तथा उसी की आज्ञा का पालन करते हुए नेकी और भलाई के साथ जीवन गुज़ारो । जैसा

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।। (18:46)

जिस परमात्मा से संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई है जिससे यह समस्त जगत व्याप्त है । उस परमात्मा को इन्सान अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा-अनुपालन करके परम सिद्धि को को प्राप्त हो जाता है । वेद में है–

भुवनस्य यस्पति के एव नमस्यो विक्ष्वीडयः
(अथर्ववेद 2:2:1)

ब्रह्माण्ड का वह एक ही स्वामी सभी प्रजाओं द्वारा सिर झुकाने व उपासना करने योग्य है ।

गीता का सार

तुम क्यों रोते हो, तुमने क्या खो दिया, जो कुछ पाया यहीं से पाया जो कुछ दिया यहीं पर दिया, जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का होगा, संसार परिवर्तनशील है, परिवर्तन ही संसार का नियम है ।

इस आधुनिक युग में तरक़्क़ी करके इन्सान कहां से कहां पहुंच गया है । साइंस के ज़रिए नित्य नये-नये अनुसंधान एवं खोज बड़े पैमाने पर हो रहे हैं । इसीलिए इस युग को आधुनिक युग या वैज्ञानिक युग भी कहते हैं । प्रमाण

के तौर पर पहले लोग खाना पकाने के लिए लकड़ी, ईंधन, स्टोव आदि का प्रयोग करते थे लेकिन आज यह व्यवस्था महानगरों से शुरू होकर, छोटे शहरों, क़स्बों एवं देहात के गांवों में भी एल॰पी॰जी॰ गैस का इस्तेमाल हो रहा है । सरकार की ओर से सब्सीडी का फ़ायदा उठाकर ग़रीब से ग़रीब लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं । बरसात एवं ठंडी मौसम में आने वाली परेशानियों से बचाव भी है और किफ़ायत भी ।

विगत दिनों में लोग आकस्मिक संदेश देने के लिए तार (टेलीग्राम) का प्रयोग करते थे । हाल-चाल जानने के लिए लोग चिट्ठियों का प्रयोग करते थे जिसमें दस-पांच दिन या महीना दो महीना लगता था लेकिन आज के ज़माने में वह काम इतना आसान हो गया है कि मोबाइल के ज़रिये दस-पांच मिनट में हो जाता है दूसरी चाहे जितना हो । आज कंप्यूटर का ज़माना है दुनिया में चाहे जिस क्षेत्र का काम हो कंप्यूटर के द्वारा आसानी और काफ़ी सहूलियत प्रदान कर दी गयी है ।

समय परिवर्तशील है और परिवर्तन ही संसार का नियम है, इस संबंध में अक़्ल यह तक़ाज़ा करती है कि हम भी ज़माने के साथ हो जाएं और उन सुविधाओं का फ़ायदा उठाएं लोगों की रहनुमाई एवं पथ-प्रदर्शन के लिए भगवान राम एवं योगीराज श्री कृष्ण जैसे महापुरुष/ईशदूत इस दुनिया में अवतरित हुए और लोगों को पूजा, उपासना एवं बन्दगी का तरीक़ा बताया ।

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजापतिः ।
अश्रद्धा मनृतो अदयाच्छद्धो सत्ये प्रजापतिः ।।
(यजुर्वेद : 19:77)

परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रूप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग-अलग कर दिया और आदेश दिया कि सत्य में आस्था लाओ और मिथ्या को ठुकरा दो ।

कंप्यूटर का ज़माना और आधुनिक सुविधाएं अभी हाल में ही चन्द दिनों का परिवर्तन है । लोग अपनी दुनियावी (भौतिक चीज़ों) में काफ़ी परिवर्तन करके उससे लाभ उठा रहे हैं लेकिन न मालूम कितने ज़माने से महापुरुषों/ईशदूतों के आने का सिलसिला जारी रहने के बावजूद भी लोगों के नैतिक व्यवहार एवं उनकी जीवन प्रणाली में कोई सुधार का परिवर्तन नज़र नहीं आ रहा है ।

ईश्वरीय सत्य ज्ञान आ जाने के बाद भी लोगों का अज्ञानता के अंधेरे में पड़े रहने का मूल कारण यह है कि इन लोगों की पूजा, उपासना एवं जीवन प्रणाली की व्यवस्था तथा कथित धर्म के ठेकेदारों के पास है । इस संबंध में जैसा वे आदेश देते हैं उसी पर चलने के लिए ये मजबूर है उनके पास अपना ख़ुद का ज्ञान नहीं जिससे वह अपनी मंज़िल तय कर सकें । वे तो ज्ञान के मामले में बैसाखी पर हैं ।

अगर घर ख़ानदान का कोई व्यक्ति ज्ञानोपार्जन करके अपनी अक़्ल और सूझ-बूझ के साथ किसी मामले पर स्वयं फ़ैसला लेना चाहे तो उसे घर के ही लोग चलने नहीं देते बल्कि उल्टे उसी पर उन धर्म के ठेकेदारों को महत्व देने लगते हैं । चूंकि पहले से ही पूरी समाज पर इन लोगों का छाप छाया हुआ है, जिसके चलते ये समाज को जिधर चाहें चलाते रहते हैं । लोगों में यह पूर्ण यक़ीन है कि फलां व्यक्ति बड़े ज्ञानी और धर्म मर्मज्ञ है इनसे हमारी सारी बला एवं मुसीबतें दूर हो जाएंगी । इस संबंध में लोगों से आग्रह है कि वे ख़ुद ज्ञानोपार्जन करके अपने को ख़ुद धर्मावलंबी बनाएं ।

कविता

मुक़दमे

देश की अदालतों में लंबित
मुक़दमों की संख्या लाखों में
होने पर चिंता जताई जाती है !
इस समस्या से निबटने की कोई
राह किसी को समझ नहीं आती है !
कहते हैं कि इनमें सर्वाधिक तादाद
सरकारी मामलों मुक़दमों की है ।
पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग्स का योगदान भी उतना ही भारी है !
उच्चतम न्यायालय कई बार इन्हें
बेकार की मुक़दमेबाज़ी से बचने
की समझाइश दे चुका है ।
किंतु संभवतः वह बेअसर रहा है !
स्वयं कोई अंतिम निर्णय न लेकर
इनके अधिकारी बहुत से मामले
कोर्ट की ओर सरका देते हैं और
यूं वे मुक़दमों की तादाद बढ़ा देते हैं !

ओमप्रकाश बजाज
इंदौर (म॰प्र॰)

क़ुरआन के वैज्ञानिक सत्य

● संपादन प्रभाग

क़ुरआन न हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की रचना है, न किसी दूसरे इन्सान की । यह तो ईश्वर द्वारा अवतरित एक पुस्तक है जो सभी इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए भेजी गयी है और मुसलमानों का इस पर कोई आधिपत्य नहीं है । इसकी अद्‌भुत शैली से यह बात स्वयं ही स्पष्ट हो जाती है कि यह एक ईश-ग्रंथ है और इसके लिए किसी अतिरिक्त प्रमाण की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

वैसे तो क़ुरआन विज्ञान की पुस्तक नहीं है परन्तु इसमें कुछ ऐसे वैज्ञानिक सत्य मौजूद हैं, जिन्हें अब से 1400 वर्ष पूर्व ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं जान सकता था और जिनका ज्ञान इन्सान को बीसवीं शताब्दी में पहुंचकर अनेकों उपकरणों का प्रयोग करने के बाद हुआ । यह इसके ईश-ग्रंथ होने का एक ठोस प्रमाण है । इन सभी अंशों को एकत्रित किया जाए तो एक लंबी सूची बन जाएगी और अगर विस्तार से इनका वर्णन किया जाए तो अनगिनत पुस्तकें तैयार हो जाएंगी । इनमें से कुछ यहां संक्षेप में प्रस्तुत हैं ।

विश्व की रचना

आधुनिक खगोल-भौतिकी (Astro-physics) इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि संपूर्ण विश्व एक महाविस्फोट के नतीजे में अस्तित्व में आया । इससे पूर्व न तो कोई भौतिक तत्व था, न ही समय । इसी शून्य की स्थिति से इस विश्व की रचना हुई । सन 1992 में नासा ने COBE अंतरिक्ष-यान द्वारा लिए गये चित्रों के आधार पर भी यही निष्कर्ष निकाला कि महाविस्फोट से ही इस विश्व का आरंभ हुआ है उससे पूर्व शून्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था । क़ुरआन में ईश्वर ने इस सत्य को इस प्रकार व्यक्त किया है–

"वह तो आकाशों और धरती का आविष्कारक है ।"
(क़ुरआन, 6:101)

संसार का विस्तार

इस विशाल संसार की सीमाएं स्थिर या स्थैतिक नहीं हैं बल्कि इनमें हर पल विस्तार हो रहा है । बीसवीं शताब्दी के आरंभ में रूस के भौतिक-शास्त्री अलेक्जेंडर फ्रीडमैन ने यह खोज की कि यह संसार स्थिर नहीं है और इसकी सीमाओं में निरंतर विस्तार हो रहा है । 1929 में 'हबल' दूरबीन से इसकी पुष्टि भी हो गयी । इसके पहले हज़ारों वर्षों से यही धारणा थी कि यह विश्व एक स्थिर इकाई है ।

अब से 1400 वर्ष पूर्व जबकि न तो भौतिक विज्ञान का कोई अस्तित्व था न दूरबीन का, क़ुरआन ने इस सत्य की घोषणा कर दी थी ।

"आसमान (अर्थात ब्रह्माण्ड) को हमने अपने ज़ोर से बनाया और हम ही उसका विस्तार भी कर रहे हैं ।"
(क़ुरआन, 51:47)

सूर्य और अन्य सभी ग्रहों की अपने-अपने कक्ष में परिक्रमा

खगोलशास्त्र ने अब यह सत्य स्थापित कर दिया है कि सूर्य और अन्य सभी ग्रह जो कि आकाश में पाए जाते हैं, अपने-अपने कक्ष में परिक्रमा कर रहे हैं । सूर्य 72,000 किमी॰ प्रतिघंटे की रफ़्तार से प्रतिदिन 17,280,000 किमी॰ की दूरी तय करता है । इस सौरमंडल में स्थित सभी ग्रह एवं उपग्रह भी सूर्य के साथ ही चक्कर लगाते हैं । अनुमान है कि इस संसार में 200 अरब आकाशगंगा अपने-अपने सूर्य और अनगिनत ग्रह-उपग्रह के साथ अपने-अपने कक्ष में परिक्रमा कर रहे हैं ।

क़ुरआन ने इस सत्य को 1400 वर्ष पूर्व इस प्रकार व्यक्त किया है–

"और वह अल्लाह ही है जिसने रात और दिन बनाए और सूरज और चांद की रचना की । सब एक-एक कक्ष में तैर रहे हैं ।"
(क़ुरआन, 21:33)

लोहे का स्रोत

आधुनिक युग में खगोलशास्त्रियों ने यह खोज की है कि पृथ्वी पर जितना भी लोहा पाया जाता है उसका उत्पादन पृथ्वी पर नहीं, बल्कि अंतरिक्ष में फैले हुए बड़े-बड़े सितारों पर हुआ था और उल्कापिंड के पृथ्वी से टकराने से यहां तक पहुंचा है ।

क़ुरआन ने लोहे के पृथ्वी के बाहर से यहां आने की

बात 1400 वर्ष पूर्व ही बता दी थी ।

"...और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ा ज़ोर है और लोगों के लिए लाभ है...।" (क़ुरआन, 57:25)

यहां "उतारा" शब्द इस ओर संकेत कर रहा है कि लोहा पृथ्वी पर उत्पन्न नहीं हुआ, बल्कि बाहर से आया है ।

संसार में हर चीज़ जोड़े के रूप में

1933 में ब्रिटेन के वैज्ञानिक 'पॉल डिराक' ने यह खोज की कि संसार में हर चीज़ जोड़े के रूप में पाई जाती है । इस खोज के लिए उसे नॉबेल पुरस्कार भी दिया गया ।

अब से 1400 वर्ष पूर्व ईश्वर इस सत्य की घोषणा क़ुरआन में इन शब्दों में कर चुका था–

"पवित्र है वह सत्ता जिसने सब प्रकार के जोड़े पैदा किये चाहे वे ज़मीन की वनस्पतियों में से हों या खुद उनकी अपनी जाति (अर्थात मानवजाति) में से या उन चीज़ों में से जिनको ये जानते तक नहीं हैं ।" (क़ुरआन, 36:36)

"और हर चीज़ के हमने जोड़े बनाए हैं । शायद कि तुम उससे शिक्षा ग्रहण करो ।" (क़ुरआन, 51:49)

समय की सापेक्षता

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में 'आइंसटाइन' ने सबसे पहले 'सापेक्षता के सिद्धांत' के माध्यम से 'समय की सापेक्षता' को उजागर किया । इससे पूर्व लोगों को इसका कोई ज्ञान नहीं था और वह यह नहीं जानते थे कि समय पर अन्य तथ्यों का प्रभाव भी पड़ता है । उसने प्रमाणित किया कि भार और गति के परिवर्तन से समय भी परिवर्तित होता है । ईश्वर ने 1400 वर्ष पूर्व ही क़ुरआन में इस ओर संकेत कर दिया था ।

"ये लोग अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं । अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा, मगर तेरे रब के यहां का एक दिन तुम्हारी गणना के हज़ार वर्ष के बराबर हुआ करता है ।" (क़ुरआन, 22:47)

"वह आसमान से ज़मीन तक दुनिया के मामलों का संचालन करता है और इस संचालन का ब्योरा उसके पास जाता है एक ऐसे दिन में जिसकी माप तुम्हारी गणना से एक हज़ार वर्ष है ।" (क़ुरआन, 32:5)

पृथ्वी के वातावरण की परतें

अब वैज्ञानिकों ने यह खोज कर ली है कि हमारी पृथ्वी के चारों ओर का पूरा वातावरण सात परतों में बना है । इन परतों के नाम इस प्रकार हैं–

क्षोभ-मंडल (Tropo-sphere), समताप-मंडल (Strato-sphere), मध्य-मंडल (Meso-sphere), ताप-मंडल (Thermo-sphere), आयन-मंडल (Iono-sphere), बाह्य-मंडल (Exo-sphere) और ओज़ोन-मंडल (Ozone-sphere)।

ईश्वर ने क़ुरआन के माध्यम से इन्सानों को इस सत्य से 1400 वर्ष पूर्व ही अवगत करा दिया था । साथ ही उसने यह भी अवगत करा दिया था कि इनमें से हर परत की अलग भूमिका है जो उसके लिए निर्धारित कर दी गयी है ।

"वही तो है जिसने तुम्हारे लिए धरती की सारी चीज़ें पैदा की, फिर ऊपर की ओर रुख़ किया और सात आसमान ठीक तौर पर बनाए । और वह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है ।" (क़ुरआन, 2:29)

"फिर उसने आसमान की ओर रुख़ किया जो उस समय सिर्फ़ धुंआ था । उसने आसमान और ज़मीन से कहा, "अस्तित्व ग्रहण करो, चाहे तुम चाहो या न चाहो ।" दोनों ने कहा, "हम आ गये आज्ञाकारियों की तरह ।" तब उसने दो दिन के अन्दर सात आसमान बना दिए, और हर आसमान में उसके क़ानून की प्रकाशना कर दी ।"

(क़ुरआन, 41:11-12)

वर्षा उपक्रम

बीसवीं शताब्दी से पूर्व यह धारणा थी कि वर्षा में हवाओं की भूमिका मात्र बादलों को इधर-उधर उड़ाने की है । परन्तु आज मौसम विज्ञान का मानना है कि हवाएं बादलों को उड़ाने के अतिरिक्त समुद्र के पानी को बादल में परिवर्तित करने का काम भी करती हैं । यदि हवा में यह विशेषता न होती तो न बादल बनता और न वर्षा होती ।

ईश्वर ने, जिसने इस सारे प्रक्रम की रचना की, 1400 वर्ष पूर्व क़ुरआन में इस सत्य को व्यक्त कर दिया था ।

"फलदायक हवाओं को हम ही भेजते हैं, फिर आसमान से पानी बरसाते हैं और उस पानी से तुम्हें सिंचित कर देते हैं ।" (क़ुरआन, 15:22)

"अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है और वे बादल उठाती हैं, फिर वह उन बादलों को आसमान में फैलाता है जिस तरह चाहता है और उन्हें टुकड़ियों में बांटता है, फिर तू देखता है कि वर्षा की बूंदे बादल में से टपकी चली आती हैं । यह वर्षा जब वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है

बरसाता है तो अचानक वे खुश और प्रसन्न हो जाते हैं, हालांकि इसके उतरने से पहले वे निराश हो रहे थे ।''

(कुरआन, 30:48-49)

दो प्रकार के समुद्र

समुद्र का पानी कहीं पर मीठा होता है और कहीं पर खारा । एक ही समुद्र होने के बाद भी यह पानी आपस में मिलते नहीं । इसका ज्ञान समुद्र वैज्ञानिकों को अब से कुछ ही वर्ष पूर्व हुआ है जब पृष्ठ-तनाव (Surface Tension) की खोज हो गयी । कुरआन में ईश्वर ने इस अद्‌भुद तथ्य से मनुष्य को 1400 वर्ष पूर्व ही अवगत करा दिया था ।

''दोनों समुद्रों को उसने छोड़ दिया कि परस्पर मिल जाएं, फिर भी उनके बीच एक परदा पड़ा है जिसको वे पार नहीं करते ।'' (कुरआन, 55:19-20)

''और वही है जिसने दो समुद्रों को मिला रखा है । एक स्वादिष्ट और मीठा, दूसरा कड़ुआ और खारा । और दोनों के बीच एक परदा पड़ा है । एक रुकावट है जो उन्हें गड्‌मड् होने से रोके हुए है ।'' (कुरआन, 25:53)

समुद्र की गहराई में लहरों और प्रकाश की स्थिति

उपकरणों की सहायता के बिना इन्सान समुद्र में 40 मीटर से अधिक गहराई तक प्रवेश नहीं कर सकता । परन्तु आधुनिक युग में ऐसे उपकरणों का आविष्कार हो गया है कि 200-300 मीटर की गहराई तक प्रवेश संभव हो गया है और वहां पर लहरों और प्रकाश की स्थिति के बारे में जानना बहुत सरल हो गया है । लंदन से प्रकाशित पुस्तक 'समुद्र' में इस विषय पर विस्तार से जानकारी उपलब्ध है । समुद्र-विज्ञान ने यह ज्ञात कर लिया है कि समुद्र की सतह के नीचे भी लहरें होती हैं और गहराई में धनत्व के साथ ही लहरों के स्वरूप में भी परिवर्तन हो जाता है । इन आंतरिक लहरों को आंखों से नहीं देखा जा सकता । यह भी ज्ञात हुआ है कि समुद्र की सतह के नीचे गहराई के साथ अंधकार बढ़ता जाता है ।

कुरआन के ईश-ग्रंथ होने का यह एक बड़ा प्रमाण है कि इसमें 1400 वर्ष पूर्व ही इन आंतरिक लहरों और वहां पर व्याप्त अंधकार के बारे में चर्चा मिलती है ।

''या फिर (इन्कार करने वालों के कर्मों की) मिसाल ऐसी है जैसे एक गहरे समुद्र में अंधकार, कि ऊपर एक मौज छाई हुई है, उस पर एक और मौज और उसके ऊपर बादल, अंधकार पर अंधकार छाया हुआ है, आदमी अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देखने पाए । जिसे अल्लाह प्रकाश न प्रदान करे उसके लिए फिर कोई प्रकाश नहीं ।''

(कुरआन, 24:40)

गर्भ में भ्रूण के विकास के विभिन्न चरण

भ्रूण-विज्ञान ने आज यह ज्ञात कर लिया है कि मां के गर्भ में भ्रूण किन-किन चरणों से गुज़रता हुआ एक जीवित शिशु की अवस्था को पहुंचता है । अब से 1400 वर्ष पूर्व इस विषय में किसी को कोई ज्ञान नहीं था । उस समय ईश्वर ने कुरआन में इस विषय पर जो बातें अवतरित की थीं उनके आधार पर निम्नलिखित सत्य की स्थापना हो गयी थी–

(क) पुरुष के वीर्य के अति-सूक्ष्म अंश से ही मनुष्य के जीवन की नींव पड़ती है ।

''क्या इन्सान ने यह समझ रखा है कि वह यूं ही आज़ाद छोड़ दिया जाएगा ? क्या वह एक तुच्छ पानी का वीर्य न था जो (मां के गर्भाशय में) टपकाया जाता है ?''

(कुरआन, 75:36-37)

(ख) शिशु के लिंग का चयन पुरुष के शुक्राणु पर निर्भर करता है न कि स्त्री के ।

''और यह कि उसी ने नर और मादा का जोड़ा पैदा किया एक बूंद से जब वह टपकाई जाती है ।''

(कुरआन, 53:45-46)

(ग) भ्रूण स्त्री के गर्भ में जोंक की तरह चिपका होता है ।

''जमे हुए खून के एक लोथड़े से इन्सान की रचना की ।'' (कुरआन, 96:2)

(घ) भ्रूण को मां के गर्भ के अंधकार में तीन चरणों से गुज़रना पड़ता है ।

''...वह तुम्हारी मांओं के पेटों में तीन-तीन अंधकारमय परदों के भीतर तुम्हें एक के बाद एक रूप देता चला जाता है...।'' (कुरआन, 39:6)

(ड़) मां के गर्भ में पहले हड्‌डी का निर्माण होता है फिर उस पर गोश्त की परत चढ़ाई जाती है ।

''फिर उस बूंद को लोथड़े का रूप दिया, फिर लोथड़े की बोटी बना दिया, फिर बोटी की हड्‌डियां बनाईं, फिर हड्‌डियों पर मांस चढ़ाया, फिर उसे एक दूसरी ही सृष्टि बना खड़ा किया ।'' (कुरआन, 23:14)

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

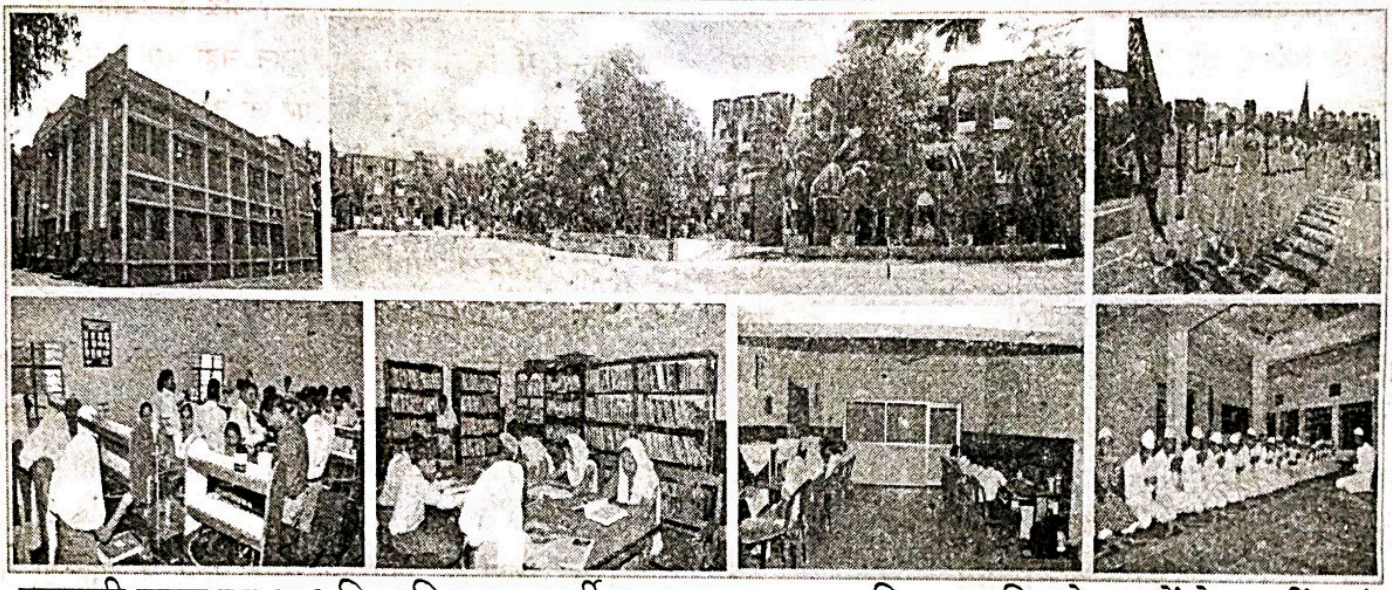

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम॰ए॰, बी॰एड॰ए (अर्लीग॰)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम॰एस॰सी॰, बी॰एड॰
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

आधार के औचित्य पर सवाल

■ अभिषेक कुमार

महज़ एक संख्या कैसे हमारी ज़िंदगी पर असर डाल सकती है; आधार कार्ड ने यह साबित कर दिया है । देश के नागरिक के तौर पर लोगों के पास इससे पहले भी कई पहचान पत्र हैं, राशन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट आदि, लेकिन कभी इनमें से किसी का आम लोगों के जीवन पर इतना दबदबा नहीं रहा । इधर कुछ वर्षों से लोग पसोपेश में हैं कि वे आधार संख्या को आख़िर ज़रूरी क्यों मानें, पर सरकार ने धीरे-धीरे तमाम फ़र्ज़ी पहचानों को ख़त्म करने के उद्देश्य से इसे तक़रीबन हर चीज़ में अनिवार्य कर दिया है ।

सरकार की मानें तो आधार संख्या हमारी ज़िंदगी में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है, पर इधर जिस तरह इसमें दर्ज करोड़ों लोगों की निजी जानकारियां लीक हुई हैं, सवाल उठ रहा है कि कहीं सरकार बदलाव का यह काम हमारी निजता में खलल डालने की क़ीमत पर तो नहीं कर रही है ।

आज स्थिति यह है कि देश भर में चलाई जा रही बारह सौ जनकल्याण योजनाओं में पांच सौ से ज़्यादा में आधार की ज़रूरत पड़ने लगी है । इसे मिड-डे मील, मोबाइल फ़ोन, बैंक खाते, टैक्स फाइलिंग, स्कॉलरशिप, पेंशन, राशन, स्कूल एडमिशन और स्वास्थ्य संबंधी आंकड़ों समेत कई और चीज़ों से जोड़ने की कोशिश चल रही है ।

पिछले दिनों नेशनल पेंशन स्कीम (एन॰पी॰एस॰) के खाताधारकों से भी अपनी आधार संख्या जोड़ने को कहा गया । माना जाता है कि देश की नब्बे फ़ीसद आबादी पिछले आठ वर्षों में आधार कार्ड के लिए अपनी उंगुलियों के निशान और आंखों की पुतलियों की छाप सरकार को मुहैया करा चुकी है । इसके बदले इन लोगों को बारह अंकों की विशिष्ट संख्या दी गयी है, जिससे जुड़ी निजी जानकारियां देश के बायोमीट्रिक डाटा केंद्रों में बेहद सुरक्षित रखी गयी हैं । यह देखते हुए कि अभी देश में सिर्फ़ साढ़े छह करोड़ लोगों के पास पासपोर्ट है और बीस करोड़ लोग ही ड्राइविंग

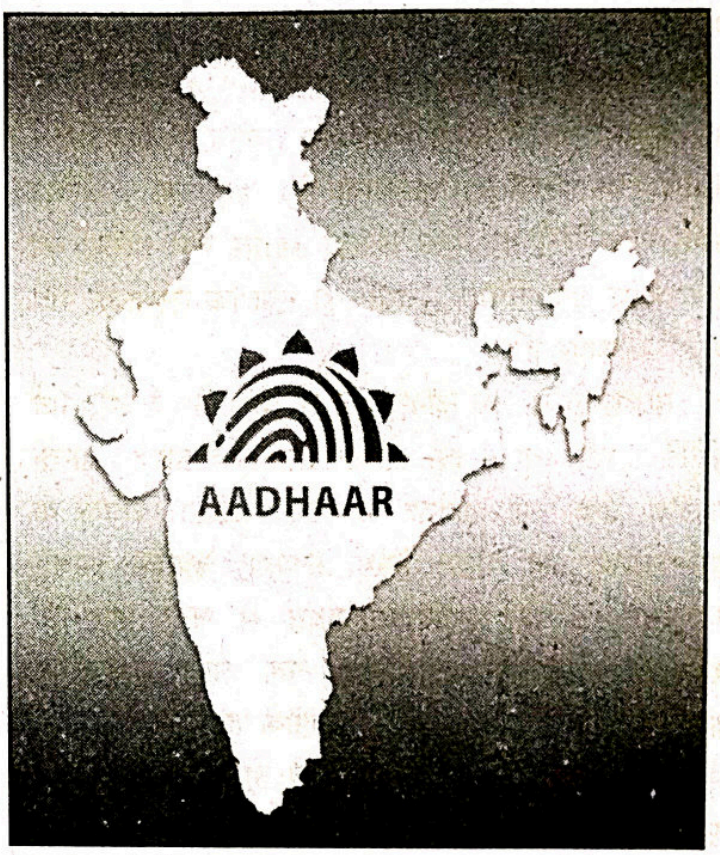

लाइसेंसधारी हैं, आधार के रूप में एक अरब लोगों के पास अपनी पुख़्ता पहचान होना एक राहत भरी बात है ।

सरकारी दायरे से बाहर बैंक और कई प्राइवेट कंपनियां भी अपने उपभोक्ताओं के सत्यापन के लिए आधार का इस्तेमाल करने लगी हैं । दावा है कि इस वक़्त देश में तेईस करोड़ लोगों से ज़्यादा को आधार संख्या के ज़रिए जनकल्याण योजनाओं का फ़ायदा मिल रहा है, लेकिन इस जानकारी पर जगा हमारा सारा उत्साह तब ठंडा पड़ गया, जब हाल में पता चला कि क़रीब साढ़े तेरह करोड़ लोगों के आधार नंबर और पेंशन पाने और मनरेगा में काम करने वाले दस करोड़ लोगों के बैंक खातों की जानकारी ऑनलाइन लीक हो चुकी है । यानी जितने लोग आधार के लाभार्थी बताए जा रहे हैं, क़रीब उतने ही लोगों की निजी जानकारियों पर डाका पड़ चुका है ।

सेंटर फॉर इंटरनेट एंड सोसायटी द्वारा जारी रिपोर्ट पर सरकार ने सफ़ाई दी कि ये जानकारियां यू॰ए॰आई॰डी॰ए॰ (आधार जारी करने वाले संगठन) से लीक नहीं हुईं,

इसलिए ज़्यादा ख़तरा नहीं है । पर यह तर्क कइयों के गले नहीं उतर रहा । 22 अप्रैल को जब झारखंड से ख़बर आई कि राज्य सरकार की लापरवाही से प्रदेश के चौदह लाख से अधिक लोगों का आधार डाटा सार्वजनिक हो गया, जिनमें मशहूर क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी और उनका परिवार भी शामिल है, तो उनकी पत्नी साक्षी धोनी ने इस पर सवाल उठाया । तब केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने आश्वस्त किया कि आइंदा ऐसा नहीं होगा । झारखंड सरकार ने वेबसाइट से आधार नंबर इनक्रिप्ट (कूटभाषा में) कर दिया । लेकिन इसके पंद्रह दिनों के भीतर करोड़ों आधार नंबर धारकों की जानकारियों की लीकेज से साफ़ हो गया कि सुरक्षा के दावे कितने कमज़ोर हैं ।

सवाल है कि इस लीक का ज़िम्मेदार कौन है और अब इसकी गारंटी क्या है कि आइंदा ऐसा नहीं होगा । इसके अलावा, क्या ऐसी लीकेज के लिए संबंधित विभागों के अधिकारियों को दंडित किया जाएगा, क्योंकि आधार क़ानून-2016 के मुताबिक़ आधार से जुड़ी कोई भी जानकारी–जैसे नाम, जन्मतिथि, पता आदि सार्वजनिक करना अपराध है । ध्यान रहे कि लीक हुई ये जानकारियां ऑनलाइन सर्च करने पर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं और जो जैसे चाहे इन जानकारियों का इस्तेमाल कर सकता है । ऐसे में जब सरकार आधार कार्ड को हर चीज़ से जोड़ने पर आमादा है, सवाल है कि क्या उसे इसकी ज़िम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए कि चाहे जो हो जाए, आधार कार्ड की निजी जानकारी सिर्फ़ उसके धारक तक सीमित रहेगी । अगर वह ऐसा नहीं कर सकती, तो आधार कार्ड का औचित्य साबित करना मुश्किल होगा ।

अदालतें लगातार इसके क्रियान्वयन से जुड़ी विसंगतियों को देखते हुए इसकी अनिवार्यता को कठघरे में खड़ा कर रही हैं । उनका निर्देश है कि इसकी वजह से किसी व्यक्ति को सरकारी लाभ से वंचित नहीं किया जा सकता, पर सरकार किसी न किसी बहाने इसे हर चीज़ से जोड़ने पर उतारू है । उसकी दलील है कि आधार के क्रियान्वयन से भ्रष्टाचार पर रोक लगेगी और सरकारी योजनाओं को बेहतर ढंग से लागू किया जा सकेगा । मगर क्रियान्वयन की दिक़्क़तों, बायोमैट्रिक डाटा की सुरक्षा और जनता की निजता के मौलिक अधिकारों की रक्षा किये बग़ैर आख़िर कैसे लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है ? क्या यह कम बड़ा अपराध है कि किसी ख़ामी के चलते व्यक्ति के आधार कार्ड पर दर्ज़ निजी जानकारी लीक हो जाए और ग़लत हाथों में पड़ जाए !

केंद्र सरकार ने 2009 में आधार कार्ड बनाने की परियोजना शुरू की थी । अब तक एक सौ तेरह करोड़ लोगों का आधार कार्ड बनाया जा चुका है । इनमें से बहुत सारे लोगों की निजी जानकारियां लीक होकर उनका बेजा फ़ायदा उठाने वालों तक पहुंच चुकी हैं । आख़िर सरकार हर नागरिक की जानकारी जुटा कर ऐसे डाटाबेस में क्यों डाल देना चाहती है, जिससे पता चले कि उसने कब और कहां कितने की ख़रीदारी की, कब रेल-बस-फ्लाइट की टिकट बुक कराई, उसका मोबाइल कब कहां था और अस्ल में वह उस वक़्त कहां था-जब सरकार उसकी जानकारी लेना चाहती थी । आधार क़ानून के मुताबिक़ अगर कोई व्यक्ति, संस्था, एजेंसी किसी नागरिक के आधार कार्ड की जानकारी मांगे तो बायोमैट्रिक्स (यानी उंगलियों, अंगूठे और पुतलियों की छाप) के अलावा अन्य जानकारियां पैसा लेकर दे सकती है । लेकिन लीकेज में तो करोड़ों लोगों की बायोमैट्रिक्स पहचानें भी यहां से वहां चली गयी हैं ।

वैसे आधार जैसी चीज़ें अमेरिका में भी हैं, वहां नागरिकों को पेंशन की सुविधा के लिए 'सोशल सिक्योरिटी नंबर' दिया जाता है और फिर उसे अन्य सुविधाओं से जोड़ा जाता है । पर अमेरिकी क़ानून सुनिश्चित करता है कि उस नंबर को कौन मांग सकता है और उसका क्या उपयोग होगा। मगर आधार कार्ड में सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है ।

आज जिस तरह बैंक खाता खोलने से लेकर बैंकिंग का सारा कामकाज घर बैठे कराने के लिए उपभोक्ताओं को इंटरनेट से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं और उससे सुविधा के साथ-साथ कई मुसीबतें भी पैदा हुई हैं । कभी नेट बैंकिंग के पासवर्ड और ए॰टी॰एम॰ के पिन चुरा कर ग्राहकों के खातों से पैसा ग़ायब हो जाता है या बिना उनकी जानकारी के भारी-भरकम ख़रीदारी हो जाती है तो कभी ए॰टी॰एम॰ कार्ड की क्लोनिंग से रक़म निकाल ली जाती है । उसी तरह आधार कार्ड भी मुसीबत का कार्ड बनता जा रहा है । चूंकि अभी साइबर हैकिंग से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय फ्रेमवर्क और क़ानूनों की कमी है, इसलिए लगता नहीं कि इन सूचनाओं को फ़िलहाल लीकेज से पूरी तरह सुरक्षित बनाया जा सकेगा । (सा॰ : 'जनसत्ता')

इस्लाम और मानवीय चेतना

■ विजय गोपाल मंगल

पैग़म्बरों को ईश्वर ने मनुष्यों के मार्गदर्शन हेतु भेजा है, जिन्होंने ईश्वरीय ग्रंथों का दर्शन कराया है । मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपनी जीवन-चर्या की व्यवस्था, उपदेश के इसी महास्रोत की धारा के अनुकूल निर्मित करे । मनुष्य अपने जीवन के समस्त क्रिया-कलापों के लिए ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी और उत्तर देने का यह कार्य उसे इस संसार में नहीं बल्कि मरने के बाद परलोक (रोज़े-आख़िरत) में करना है । सांसारिक जीवन केवल परीक्षा का समय है, इसलिए मनुष्य के सभी कार्य इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए होने चाहिएं जिससे वह परलोक (रोज़े-आख़िरत) में ईश्वर के सामने अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह सफलतापूर्वक कर सके । इसी पर उसका भविष्य निर्भर करता है । मनुष्य का संपूर्ण संसार में दूसरों से जैसा व्यवहार होता है उसका ईश्वर द्वारा निष्पक्ष निरीक्षण होता है । ईश्वर मनुष्य की क्रिया-कलापों का ही नहीं अपितु उसके विचारों और संकल्पों तक का हिसाब रखता है ।

कुरआन में वर्णित मनुष्य और ब्रह्माण्ड से संबंधित इसी मान्यता के चारों ओर मनुष्य का संपूर्ण नैतिक जीवन घूमता है । जीवन का परम लक्ष्य ईश्वर की प्रसन्नता है । इसके निश्चित हो जाने के बाद चरित्र और नैतिकता को एक लक्ष्य मिल जाता है । जिससे नैतिक विकास की संभावनाएं असीम हो जाती हैं और प्राय: मनुष्य स्वार्थपरता के दलदल में नहीं फंस पाता ।

कुरआन में वर्णित इस सम्यक मानवतावादी शिक्षा की नियामक शक्ति और उसका प्रेरक ईश्वर का भय, आख़िरत के दिन पूछताछ की आशंका और अंतहीन भविष्य के बिगड़ने की विभीषिका है । नैतिक आदेश देने के साथ ही कुरआन मनुष्य के हृदय में यह बात भी बिठाता है कि मनुष्य का संबंध वस्तुत: उस ईश्वर से है जो प्रतिक्षण और प्रत्येक स्थान पर उसके कार्यों को देख रहा है । मनुष्य संसार की दृष्टि से छिप सकता है किंतु ईश्वर की दृष्टि से नहीं छिप सकता ।

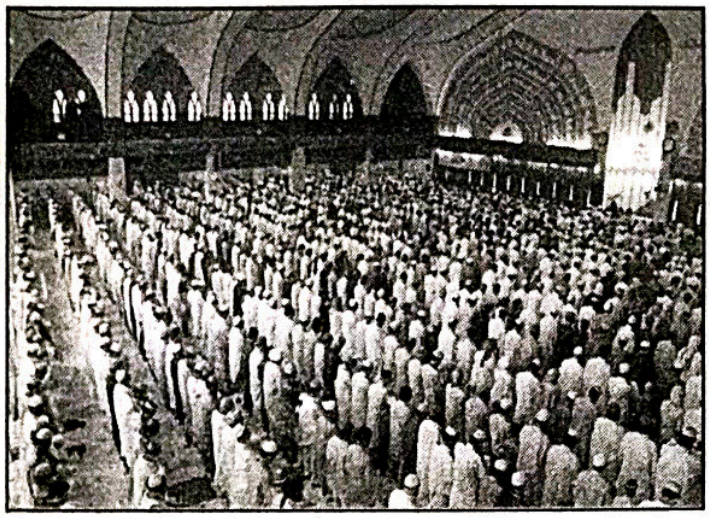

मनुष्य को यह सांसारिक जीवन थोड़े समय के लिए मिला है, वह इस सांसारिक जीवन में चाहे जो कर ले, उसे एक दिन मरना तो है ही, उसने जो कुछ किया है ईश्वर के न्यायालय में उसका हिसाब देना है । कुरआन में यह विश्वास व्यक्त किया गया है कि आख़िरत के दिन जिसका नेकी का पलड़ा भारी होगा वह जन्नत (स्वर्ग) में जाएगा तथा जिसका पलड़ा हल्का होगा वह दोज़ख़ (नरक) में जाएगा । जन्नत में जाने वालों को हर तरह की सुख-सुविधा होगी किंतु नरक में जाने वालों को तरह-तरह के कष्ट दिये जाएंगे । उस दिन कोई किसी के काम न आएगा, वहां वकालत, झूठ, घूस, सिफ़ारिश, छल व कपट कुछ भी नहीं चलेगा । "मनुष्य के लिए बस वही है जिसके लिए उसने प्रयास किया है ।" (कुरआन, 53:39)

इस प्रकार के विश्वास को मनुष्य के हृदय में उत्पन्न करके कुरआन मानो मनुष्य के हृदय में वह पुलिस चौकी बिठा देता है, जो उसको सदाचरण के नियमों का पालन करने के लिए विवश कर देती है । कुरआन मानवजाति से एक ऐसी जीवन-प्रणाली की मांग करता है जो ईश्वर द्वारा निर्धारित नियमों पर आधारित हो । जिसमें निषिद्ध तत्व (मुनकर) न हो, जिन भलाइयों को मानवता ने सदैव भला स्वीकार किया उनका मार्ग प्रशस्त किया जाए तथा जिन बुराइयों को मानवता ने सदा से बुरा समझा है उनका उन्मूलन किया जाए । मनुष्य ईश्वर का प्रतिनिधि होने के नाते अपने



संपूर्ण क्रिया-कलापों के विषय में ईश्वर के समक्ष उत्तरदायी होता है । इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि संसार में जो कुछ अधिकार और साधन उसे दिये गये हैं उनका उपयोग वह ईश्वर की प्रसन्नता तथा मानवता की भलाई में करे ।

कुरआन सांसारिक जीवन में मानवीय दृष्टि विकसित करने के लिए दो प्रकार की बातें प्रस्तुत करता है । एक विचारात्मक और दूसरी क्रियात्मक ।

वैचारिक स्तर पर कुरआन धार्मिक विश्वास, अनुवर्तन, आत्मसंयम और परिष्कृत आचरण द्वारा मनुष्य के आत्मिक विकास के मार्ग को सुनिश्चित करता है । कुरआन के अनुसार मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क में पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि अल्लाह ही उसका स्वामी और उपास्य है । उसकी प्रसन्नता ही उसके समस्त कार्यों का लक्ष्य है एवं ईश्वरीय आज्ञा ही उसके जीवन का क़ानून है ।

यह विश्वास जितना दृढ़ होगा उतनी ही अधिक निष्ठा के साथ मनुष्य मानवीय उन्नति के मार्ग को अपना सकता है । मनुष्य अपने जीवन में जो भी कार्य करे उसे यह समझकर करे कि उसे अपने चिंतन, वचन तथा कर्म का लेखा-जोखा प्रभु को देना है और उन कार्यों को न करे जिनके लिए ईश्वर ने मना किया है । मनुष्य को चाहिए कि वह सद्गुणों को न केवल अपने ही जीवन में अपनाए वरन उसके प्रचार-प्रसार का भी प्रयास करे ।

''तुममें एक ऐसा गरोह अवश्य होना चाहिए जो कि लोगों को नेकी की ओर बुलाए और सुकर्म की प्रेरणा दे और कुकर्म करने से रोके । ऐसे ही लोग सफल होंगे ।''

(कुरआन, 3:104)

कुरआन ने व्यक्ति और समाज की आध्यात्मिक परिष्करण के लिए क्रियात्मक सिद्धांतों की जो व्यवस्था निश्चित की है उसके चार मुख्य स्तंभ हैं–(1) सलात (प्रार्थना या नमाज़), (2) रोज़ा (रमज़ान मास में उपवास), (3) ज़कात (अनिवार्यदान) और (4) हज ।

नमाज़

नमाज़ प्रतिदिन पांच समय मनुष्य के मन में ईश्वर संबंधी स्मृति को जागृत करती है, ईश्वर का भय उत्पन्न करती है और उसके प्रति प्रेम जगाती है तथा उसके आदेशों का स्मरण दिलाती है तथा उनके अनुवर्तन का अभ्यास कराती है ।

''निस्संदेह नमाज़ कुकर्म, निर्लज्जता तथा बुराई से रोक देती है और अल्लाह का ज़िक्र तो बहुत बड़ी चीज़ है ।''

(कुरआन, 29:45)

नमाज़ व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से एक अनिवार्य कर्तव्य है क्योंकि इससे समस्त समाज सामूहिक रूप से सदाचरण के पथ पर अग्रसर होता है । ईश्वर के प्रति जैसा उच्च भाव नमाज़ में है वह विचारणीय है । वस्तुतः नमाज़ संघ-शक्ति को बढ़ाने वाली है । जिस समय एक ही स्वर, एक ही भाषा और एक भाव से एशिया, यूरोप और अफ़्रीका निवासी लाखों मुसलमान अल्लाह के प्रति अपने भक्ति-भाव को अर्पित करने के लिए एकत्र होते हैं तो कैसा आनन्दमय और उत्साह पूर्ण दृश्य होता है । उस समय की समानता का क्या कहना जब एक ही पंक्ति में खड़े दरिद्र और बादशाह बता देते हैं कि ईश्वर के समक्ष सब बराबर हैं । नमाज़ में अल्लाह से सदाचरण सिखाने और दुराचारों से परे रखने की प्रार्थना की ज़ाती है ।

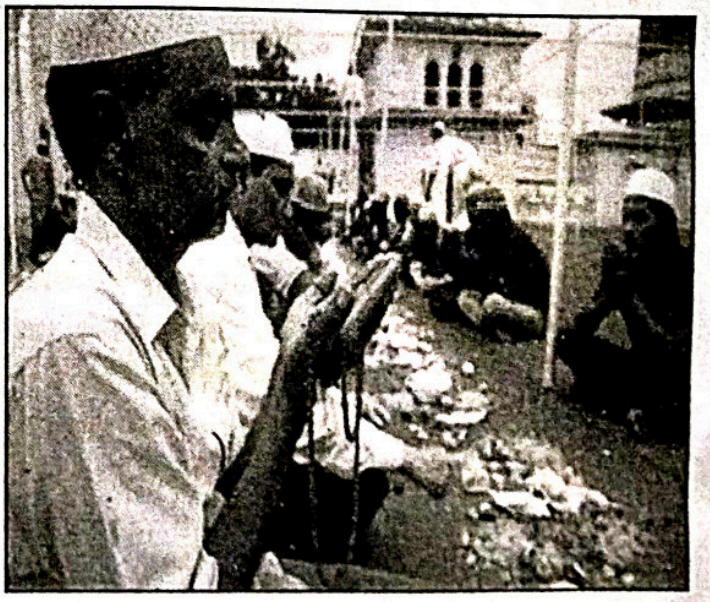

रोज़ा

"हे विश्वासियो ! पूर्वजों के समान तुम पर भी रोज़ा रखने का विधान लिखा गया है । जिससे कि तुममें संयम हो । कुछ निश्चित दिनों के रोज़े हैं फिर जो कोई तुम में से रोगी हो या यात्रा में हो तो दूसरे दिनों में उतनी संख्या पूरी कर ले । और जिन (बीमार और मुसाफ़िरों) को इसकी (मुहताजों को खाना खिलाने की) सामर्थ्य हो उनके ज़िम्मे बदले में एक मुहताज को खाना खिलाना है । जो खुशी से शुभ कर्म करे तो वह उसी के लिए मंगलप्रद है और यदि उपवास करो तो तुम्हारे लिए शुभ है अगर तुम जानो ।"

(कुरआन, 2:183,184)

कुरआन रमज़ान के महीने में रोज़े रखने का आदेश देता है । वह मुस्लिम समाज को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से संयम की शिक्षा देता है ।

ज़कात

ज़कात मुसलमानों में त्याग, सहयोग और पारस्परिक सहानुभूति की भावना को जन्म देती है । इसे कर (Tax) मान लेना भूल है । इससे ग़रीबों की आर्थिक सहायता होती है ।

"जब तक अपनी प्रिय वस्तु में से (भलाई के कामों में) ख़र्च न करो, पुण्य को नहीं पा सकते ।"

(कुरआन, 3:92)

ज़कात अल्लाह की राह में ख़र्च है, यह इस बात का प्रतीक है कि वह माल को अपनी सम्पत्ति नहीं समझता और उसे हर उस जगह व्यय कर सकता है जहां पर अल्लाह का आदेश है । यह बात पुरुष और स्त्री दोनों पर लागू होती है । इस तरह दान-धर्म पर कुरआन किसी अन्य धर्म ग्रंथ से कम ज़ोर नहीं देता ।

हज

हज एक तीर्थ यात्रा है । इसका उद्देश्य मुसलमानों में विश्वव्यापी बंधुत्व का निर्माण करना है । इसका विधान भी एकता के उद्देश्य से किया गया था ।

कुरआन की सूरा बक़रा की 177वीं आयत क्रियात्मक एवं विश्वासात्मक दोनों प्रकार के मंतव्यों को स्पष्ट करती है–

"नेकी (पुण्य) केवल यह नहीं कि तुम अपने मुंह को पूर्व या पश्चिम की ओर कर लो, नेकी (पुण्य) तो यह है कि लोग ख़ुदा पर, परलोक के दिन पर, फ़रिश्तों पर और (ख़ुदा की) किताब पर और पैग़म्बरों पर ईमान लाएं और माल, बावजूद प्रिय रखने के रिश्तेदारों, अनाथों, मोहताजों, मुसाफ़िरों और मांगने वालों को दें और गर्दनों (के छुड़ाने) में ख़र्च करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें और जब प्रतिज्ञा कर लें तो उसको पूरा करें, और तंगी में, शारीरिक कष्टों में और युद्ध के समय में जमने वाले हैं ।"

(कुरआन, 2:177)

कुरआन में यद्यपि कुरबानी का ज़िक्र आया है किंतु इसका वास्तविक उद्देश्य संयम और ईशपरायणता बताया गया है । एक जगह कहा है–

"ईश्वर के पास उन (बलियों) का मांस और रक्त कदापि नहीं पहुंचता, बल्कि तुम्हारा तक़्वा (धर्मपरायणता) पहुंचता है ।"

(कुरआन, 22:37)

इस तरह कुरआन वस्तुतः हम मनुष्यों को उदार हृदय वाला बनने की शिक्षा देता है, अंधविश्वासी बनने की नहीं । कुरआन में सदाचार पर ज़ोर दिया गया है और उसमें बताया गया है कि मनुष्य को सच्चाई के रास्ते पर चलना चाहिए ।

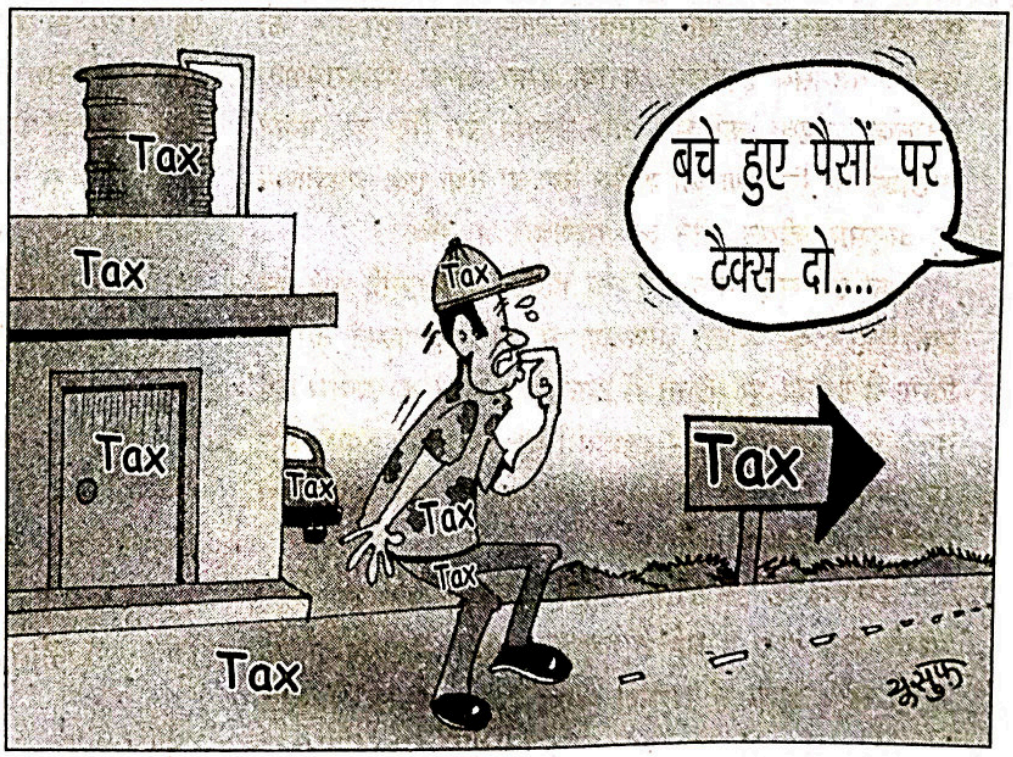

ईदुल-फ़ित्र : इन्सानी हमदर्दी और भाईचारे का त्योहार

■ मुहम्मद सलीम इंजीनियर

इस्लाम में दो ही त्योहार है एक ईदुल-फ़ित्र और दूसरा ईदुल-अज़हा । ईदुल फ़ित्र का त्योहार रमज़ान के महीने के रोज़े पूरे होने पर यानी शव्वाल का चांद नज़र आते ही अगले दिन मनाई जाती है । रमज़ान के पूरे महीने की कड़ी इबादत कामयाबी के साथ पूर्ण कर लेने के बाद यह दिन उस परवरदिगार का शुक्र अदा करने, उसकी बड़ाई बयान करने, उसके आगे सजदा करने और उससे दुआएं मांगने का दिन है । हदीस के अनुसार ईदुल-फ़ित्र का दिन पूरे एक महीने की इबादत के इनाम का दिन है ।

पूरे एक महीने जिस तरह सुबह से शाम तक भूख और प्यास को बर्दाश्त किया, अपनी ग़लत इच्छाओं पर नियंत्रण रखा आंखों, कान और ज़बान को ग़लत इस्तेमाल से बचाए रखा, ईश्वर के आदेश के अनुसार सही समय पर खाना-पीना बंद किया, और शुरू किया, रातों को लंबी नमाज़ों में ईश्वर के आगे खड़े रहे और उसके कलाम यानी कुरआन को सुना । यह सब इसलिए था कि हमारे अन्दर ईशपरायणता (तक़्वा) ईश्वर का भय और उसका प्रेम पैदा हो, ग़लत इच्छाओं पर नियंत्रण की शक्ति पैदा हो तथा एक अनुशासन के अनुसार जीवन जीने का सलीक़ा आ सके ।

यह ईद सही मायने में तब ही ईद कहलाएगी जब इस एक महीने के कठिन प्रशिक्षण से जो कुछ हमने अर्जित किया है इसको पूरे जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करें वरना यह एक महीने की इबादत सिर्फ़ भूख और प्यास और रात जगने से ज़्यादा कुछ नहीं कहलाएगी और ईश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं है ।

इस्लाम के इन सभी त्योहारों में एक बात को बहुत महत्व दिया गया है वह है ग़रीबों, यतीमों, ज़रूरतमंदों को अपने साथ खुशी में शामिल करना । ईदुल-फ़ित्र के मौक़े



पर एक विशेष क़िस्म का दान जिसे सदक़तुल फ़ित्र कहा जाता है अनिवार्य किया गया है यह दान सिर्फ़ उन मालदारों पर ही अनिवार्य नहीं है जो ज़कात देते हैं बल्कि हर उस व्यक्ति पर है जो इसे अदा करने की सकत रखता हो ।

यह दान प्रति व्यक्ति क़रीब दो किलो गेहूं की क़ीमत के बराबर तो कम से कम है और अनिवार्य है, इसके बारे में स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं कि ईदगाह जाने से पहले इसे हक़दारों तक पहुंचा दिया जाए । वैसे ज़्यादा अच्छा तो यह है कि ईद से कुछ दिन पहले ग़रीबों का यह हक़ उन्हें पहुंचाया जाए । सदक़तुल फ़ित्र की अनिवार्यता इसलिए है कि हमारे ग़रीब भाई-बहन भी ईद की खुशियों में शामिल हो सके, उस दिन कुछ अच्छा खा सके और अच्छा पहन सके ।

हदीस के अनुसार सदक़तुल फ़ित्र हमारे एक महीने के रोज़े और दूसरी इबादतों में जो कमी रह गयी हो उसे पूरा करने का एक माध्यम है, इस्लाम में इसको बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है, और कहा गया है कि जब तक सदक़तुल फ़ित्र अदा नहीं किया जाता यानी ग़रीबों को उनका हक़ नहीं

(शेष पृष्ठ 29 पर)

ईदुल-फ़ित्र पुरस्कार का दिन

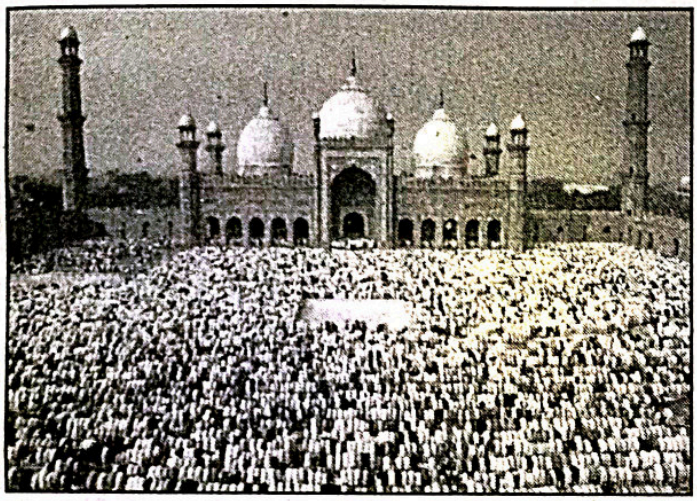

■ शेख़ मक़बूल अहमद

ईद का शाब्दिक अर्थ लौटने और बार-बार आने के हैं और पारिभाषिक शब्दावली के अनुसार ईद उन दिनों को कहा जाता है, जिसमें किसी क़ौम या मिल्लत के सारे लोग सामूहिक रूप से मिलकर ख़ुशी मनाते हैं । दुनिया की हर क़ौम किसी न किसी तरीक़े से ईद या त्योहार मनाती है ।

हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"हर क़ौम का कोई ख़ुशी का दिन होता है और ईद हमारी ख़ुशी का दिन है ।" नबी करीम (सल्ल॰) जब हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले आये, तो देखा कि मदीना के मुसलमान दो दिनों में खेल-कूद करते हुए ख़ुशियां मना रहे हैं । आप (सल्ल॰) ने पूछा ये कैसे दिन हैं ? लोगों ने कहा कि हम प्राचीनकाल से इन दो दिनों में खेल-कूद करते हुए ख़ुशियां मनाते चले आ रहे हैं । यह सुनकर आप (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

"अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए इन दिनों से बेहतर दो दिन निश्चित किये हैं । तुम इनमें ख़ुशी मनाया करो । एक ईदुल-फ़ित्र और दूसरा ईदुल-अज़हा है ।" (अंबू दाऊद)

हमारी दोनों ईदों, ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा का संबंध प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन मजीद से है, जबकि अन्य क़ौमों के त्योहारों के संबंध उनके धार्मिक गुरु या धार्मिक इतिहास के किसी विशेष दिन या घटना से होता है । ईदुल-फ़ित्र की ख़ुशी हम सब इसलिए मनाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपनी महान नेमत, पवित्र क़ुरआन मजीद के रूप में हमें प्रदान की । इस नेमत के आगे संसार की सारी नेमतें तुच्छ हैं और उनकी कोई हैसियत अल्लाह तआला की नज़र में नहीं है । अल्लाह क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है–"लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश (क़ुरआन) आ गया है । यह वह चीज़ है जो दिलों के रोगों को चंगा करने के लिए है और जो उसे स्वीकार कर ले उनके लिए मार्गदर्शन और दयालुता है ।"

(क़ुरआन, 10:57)

और उसकी अगली आयत में आप (सल्ल॰) को संबोधित करते हुए फ़रमाया–

"ऐ नबी, कहो कि 'यह अल्लाह का अनुग्रह और उसकी दया है कि यह चीज़ उसने भेजी है, इस पर तो लोगों को ख़ुशी मनानी चाहिए, यह उन सब चीज़ों से उत्तम है, जिन्हें लोग समेट रहे हैं ।" (क़ुरआन, 10:58)

ईदुल-अज़हा पर मनायी जाने वाली ख़ुशी का संबंध भी प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन मजीद की महान नेमत से है । क़ुरआन का अवतरण रमज़ान के महीने में हुआ और उसकी समाप्ति हज्जतुल-विदाअ के शुभ अवसर पर हुई । जब क़ुरआन की अंतिम आयत अवतरित हुई, जिसमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया–

"आज मैंने तुम्हारे दीन (धर्म) को तुम्हारे लिए पूर्ण कर दिया है और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे धर्म के रूप में स्वीकार कर लिया है ।"

(क़ुरआन, 5:3)

अत: क़ुरआन की इन दोनों आयतों को ध्यान में रखते हुए हमें यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि हमारी ईद और ईद की ख़ुशी का संबंध प्रत्यक्ष रूप से क़ुरआन जैसी महान नेमत की प्राप्ति से संबद्ध है । इस नेमत के मिलने पर ख़ुशी मनाने का आदेश स्वयं अल्लाह तआला ने

हमें दिया है और यह भी स्पष्ट कर दिया कि क़ुरआन हमारे लिए याददिहानी और दिलों के रोगों के लिए शिफ़ा है और इसमें हमारे लिए मार्गदर्शन है, जिस पर अमल करके हम दुनिया में इज़्ज़त, मान-सम्मान और परलोक में अल्लाह की दयालुता प्राप्त कर सकते हैं ।

यह अल्लाह तआला की बहुत बड़ी मेहरबानी है कि उसने यह महान नेमत हमें प्रदान की है । यह उन समस्त चीज़ों, सोने-चांदी के ढेरों, खेती-बारी की ज़मीनों, आलीशान महलों, बंगलों, उद्योग-धंधों, व सुख-चैन के संसाधनों से बेहतर है, जिन्हें हम समेट रहे हैं । अत: हम अल्लाह की इस महान नेमत का शुक्र अदा करने के लिए ही रमज़ान के पूरे महीने में रोज़े रखते हैं ।

दुनिया की सारी अन्य क़ौमें जब अपने उत्सव व त्योहार पर ख़ुशी मनाती है, तो वे आपे से बाहर हो जाती हैं, मगर यह अल्लाह की कृपा है कि उसने हमें ईद में ख़ुशी के अवसर पर परहेज़गारी की शिक्षा दी ।

''और जिस सीधे मार्ग पर अल्लाह ने तुम्हें लगाया है, उस पर अल्लाह की बड़ाई का इज़हार करो और मानो और शुक्रगुज़ार बनो ।'' (क़ुरआन, 2:185)। अत: संसार के सारे मुसलमान ईद के दिन ''अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इला-ह इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल हम्द'' की तकबीर ऊंची आवाज़ में पढ़ते हुए अल्लाह की बड़ाई व महानता को प्रकट करते हैं । दो रकअत ईद की नमाज़ अदा करके अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने रमज़ान को सब्र, सहानुभूति और हमदर्दी का महीना बताया है । अत: दुनिया के सारे मुसलमानों को (जो ज़कात देने का सामर्थ्य रखते हैं) ज़कात निकालने और क़रीबी ग़रीब रिश्तेदारों, निर्धन व लाचार पड़ोसियों, विधवाओं और अनाथों की सहायता करने की प्रेरणा दी गयी है । आप (सल्ल०) पवित्र रमज़ान में अन्य महीनों की तुलना में बहुत ज़्यादा दानशील हो जाते । रमज़ान के रोज़े धनवानों को भूख की तकलीफ़ का एहसास दिलाते हैं और निर्धन व ग़रीब लोगों की सहायता और सहानुभूति की भावना पैदा करते हैं ।

ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात के अलावा ईमान वालों को ईद से पहले फ़ितरा अदा कर देने का आदेश दिया गया, ताकि ग़रीब, निर्धन व असहाय भी हमारे साथ ईद की ख़ुशी में सम्मिलित हो सकें, मगर अफ़सोस की क़ुरआन से संबंध हीनता, क़ुरआन के आदेशों से अनभिज्ञता और सदियों के पतझड़ के बाद आज हम इस स्थान पर खड़े हैं कि ग़रीब रिश्तेदारों, पड़ोसियों, निर्धनों, असहायों, विधवाओं और अनाथों के अधिकार का हमें कोई शील-संकोच व लिहाज़ न रहा ।

ईदुल-फ़ित्र के रात के संबंध में आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया, ''जब रमज़ान मुबारक की आख़िरी रात आती है तो अल्लाह तआला रोज़ेदारों के सारे गुनाह माफ़ कर देते हैं । मज़दूरों को काम ख़त्म होने के वक़्त मज़दूरी दे दी जाती है ।'' (बैहक़ी, अहमद)

मानो ईद की रात पारिश्रमिक की रात है, मगर यह शुभ सूचना उन लोगों के लिए है जो ईमान की हालत में और निषिद्ध वस्तुओं के त्याग के साथ रोज़ा रखकर रमज़ान गुज़ारते हैं । एक और उल्लेख में आप (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया–

''ईदुल-फ़ित्र की रात को फ़रिश्तों में बहुत ख़ुशी व धूम मच जाती है और अल्लाह तआला उन पर तजल्ली फ़रमा कर पूछता है कि बताओ जब मज़दूर अपनी मज़दूरी पूरी कर चुके, तो उसकी जज़ा (पुरस्कार) क्या है ? फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि या अल्लाह तआला ऐसे मज़दूर को पूरी मज़दूरी मिलनी चाहिए । अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ फ़रिश्तों तुम गवाह रहो, मैंने मुहम्मद (सल्ल०) की उम्मत के रोज़ेदारों को बख़्श दिया और उनके लिए जन्नत को वाजिब कर दिया, इसलिए इस रात का नाम फ़रिश्तों में 'लैलतुल-जाइज़ा' अर्थात निजात व आराम की रात है । अत: आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो दोनों ईदों की रात में जागकर निष्कपट

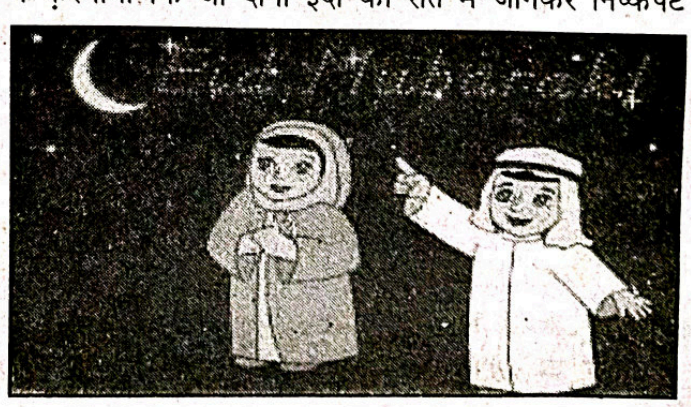

व ईमानदारी के साथ इबादत करेगा, उसका दिल नहीं मरेगा, जिस दिन औरों के दिल मुर्दा हो जाएंगे ।'' (इब्न माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–

''जब ईद की सुबह होती है, तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों को सारे शहरों में भेज देते हैं । वे ज़मीन पर उतर कर सारी गलियों व रास्तों के सिरों पर खड़े हो जाते हैं और पुकारते हैं कि ऐ मुहम्मद (सल्ल॰) की उम्मत ! उस अल्लाह की बारगाह की तरफ़ चलो, जो बहुत ज़्यादा प्रदान करने वाला है और बड़े-बड़े अपराधों को माफ़ करने वाला है । फिर जब लोग ईदगाह की ओर निकलते हैं, तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि ऐ फ़रिश्तों तुम गवाह रहो कि इनके रमज़ान के रोज़े और नमाज़ की वजह से मैं इनसे ख़ुश हो गया और अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ मेरे बन्दों तुम मुझसे मांगों मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाकर कहता हूं कि इस इज्तिमा में दुनिया व आख़िरत की जो कुछ भी भलाई मुझसे मांगोगे, मैं दूंगा और तुम्हारा विशेष ध्यान रखूंगा और जब तक तुम मुझसे डरते रहोगे, मैं तुम्हारी ग़लतियों और अपराधों को माफ़ करता रहूंगा और मुझे अपनी इज़्ज़त व बुज़ुर्गी की क़सम है कि न तुम्हें अपमानित करूंगा और न अपराधियों के बीच निंदा करूंगा । तुम सबको मैंने माफ़ कर दिया । तुमने मुझे राज़ी करना चाहा, तो मैं तुमसे राज़ी हो गया । यह इनाम व पुरस्कार सुनकर फ़रिश्ते ख़ुशियां मनाते हैं ।'' (तरग़ीब, मंज़री)

(पृष्ठ 26 का शेष)

पहुंचाया जाता अल्लाह के यहां रोज़े और इबादतें क़बूल नहीं होती ।

ईदुल फ़ित्र के दिन सुबह सूरज निकलने के बाद लोग तैयार होकर अपनी हैसियत के अनुसार अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर ख़ुशबू लगाकर कुछ नाश्ता (मीठी सिवियां, खजूर, खीर, वग़ैरह) लेकर ईदगाह के लिए रवाना होते हैं । ईदगाह जाते वक़्त भी और वापस आते वक़्त भी ईश्वर की बड़ाई, उसकी प्रशंसा बयान की जाती है पूरे रास्ते जो शब्द दोहराये जाते हैं उनका अनुवाद है–

अल्लाइ सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उसके सिवा कोई, इबादत के लायक़ नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सबसे बड़ा है ।

ईदगाह जाते-आते हर शहर में लाखों लोगों की ज़बान पर यही शब्द होते हैं यानी इस धरती पर किसी को अपनी बड़ाई जताने या क़ायम करने का अधिकार नहीं है बड़ाई सिर्फ़ उसी मालिक के लिए और इन्सान सबके सब आपस में बराबर हैं, ख़ानदान या वंश के लिहाज़ से कोई बड़ा या छोटा नहीं, ऊंचा या नीचा सवर्ण या अछूत नहीं है ।

ईदगाह में तमाम लोग एक इमाम के पीछे खड़े होकर दो रकअत नमाज़ अदा करते हैं, इस नमाज़ में भी और नमाज़ के बाद इमाम द्वारा दिये जाने वाले ख़ुत्बे (प्रवचन) में भी ईश्वर की बड़ाई और प्रशंसा को बार-बार याद दिलाया जाता है । नमाज़ में जो पहले ईदगाह पहुंचता है वह आगे की एक (पंक्ति) में जगह पाता है और देर से पहुंचता है चाहे कितना ही बड़ा व्यक्ति हो वहीं खड़ा होता है जहां उसे जगह मिलती है, छोटे-बड़े का भेद समाप्त हो जाता है और इससे यह संदेश दिया जाता है कि पूरे जीवन में इसको बपनाया जाए । शायर ने बहुत ख़ूबसूरत शब्दों में इसी बात को यूं बयान किया है ।

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदों अयाज़
न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़ ।

यानी उसके दरबार में पहुंचकर दास और मालिक सब एक हो जाते हैं वही सबका मालिक है, और बाक़ी सब उसी के दास हैं ।

नमाज़ के बाद इमाम साहब ईदगाह में मौजूद लोगों को ख़ुत्बा देते हैं यानी मार्गदर्शन, संदेश और हालात के अनुसार देश और समाज से जुड़ी समस्याओं और उनके हल के बारे में क़ुरआन व हदीस की रोशनी में रहनुमाई और आख़िर में सब मिलकर अपने लिए, औरों के लिए देश व समाज व तमाम इन्सानों की भलाई के लिए दुआएं मांगी जाती है और फिर गले मिलकर एक-दूसरे को मुबारकबाद देने का सिलसिला दिन भर जारी रहता है । ईश्वर से प्रार्थना है ईदुल फ़ित्र का यह त्योहार हम सबके ख़ुशियां और ख़ुदा की रहमतें लाए, देश में अमन, शांति और समृद्धि लाए, आमीन ।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)
Mumbai (Maharashtra)

Chairman : Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

महिला-समस्याओं का निदान आवश्यक

■ ज़हीर ललितपुरी

वर्तमान हिन्दुस्तानी समाज में औरतों की गुलामों जैसी दशा है । किंतु सिर्फ़ तीन तलाक़, खुलाअ, बहुविवाह और हलाला के ख़िलाफ़ ही शोर बरपा है । ऐसा लगता है कि चर्चा का कोई और विषय नहीं । हिन्दुस्तानी औरत के सामने अन्य बहुत सारी ऐसी समस्याएं हैं जिनको हल करने की तात्कालिक आवश्यकता है लेकिन उनकी तरफ़ किसी का ध्यान नहीं । किसी एक धार्मिक समूह या एक समाज ही नहीं बल्कि हर समाज में औरतें विभिन्न समस्याओं से जूझ रही हैं जिनका समाधान करना भी हुकूमत, सियासत, अदालत और मीडिया का परम कर्तव्य है ।

औरतें शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, व्यापार, राजनीति और नौकरी के क्षेत्र में अपना मक़ाम हासिल कर रही हैं । इस तरक़्क़ी के बावजूद उनका जीवन दूभर है । पितृसत्तात्मक समाज और परिवार में ऐसा नहीं कि मर्दों के सामने औरतों की हैसियत ही न हो । हमारे देश के संविधान और क़ानून के मुताबिक़ औरतों को मर्दों के समान दर्जा मिला हुआ है किंतु व्यावहारिक तौर पर औरत की हैसियत मर्दों के बराबर नहीं हैं । यूं उसे मां, बहन, बेटी और पत्नी के रूप में सम्माननीय समझा जाता है, लेकिन पिता की तुलना में मां को, भाई की तुलना में बहन को, बेटे की तुलना में बेटी को और पति की तुलना पत्नी को कमतर समझा जाता है । यह अन्याय, असमानता और भेदभाव उनकी दासता का प्रतीक है ।

औरतों की हैसियत दयनीय

हिन्दुस्तान के अधिकांश परिवारों में औरतों की हैसियत दयनीय है । उनके ख़िलाफ़ घरेलू हिंसा के मामले तेज़ी से बढ़ रहे हैं । सख़्त क़ानून के बावजूद छेड़छाड़, बलात्कार की घटनाओं में कोई कमी नहीं आ रही है । सामूहिक बलात्कार की घटनाएं भी आम बात है । दहेज की समस्या का कोई निदान नहीं हुआ बल्कि यह समस्या और भी ज़्यादा गंभीर हो गयी है । पैदा होने से पहले लड़कियों के भ्रूण की हत्या करने से आज भी लोग बाज़ नहीं आ रहे हैं । प्रत्येक समुदाय, धार्मिक संप्रदाय,, ज़ातियों और बिरादरियों में औरत मर्द के अनुपात में अब भी असंतुलन है । यहां तक कि बहुत सारे नवजवानों को कुंवारा रहकर ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए मज़बूर होना पड़ रहा है । ग़रीबी और बेरोज़गारी का बुरा असर सबसे अधिक औरतों पर पड़ रहा है । अतः यदि हम औरतों की हालत को सुधारना चाहते हैं तो उस पर ग़ौर करके समाधान की दिशा में क़दम उठाना पड़ेगा । वास्तव में उनकी समस्त समस्याओं का निदान वक़्त की ज़रूरत है । हिन्दुस्तान में औरतों के प्रति असमानता के रवैये का एक ज्वलंत उदाहरण है यह है कि एक परिवार की लड़की जब किसी दूसरे परिवार में बहु बनकर जाती है तो उसके मायके वालों को ससुराल पक्ष वालों की तुलना में छोटा समझा जाता है । कहीं आस्थाओं के नाम पर और कहीं परंपराओं के नाम अक्सर लड़की वालों के साथ असमानता का व्यवहार किया जाता है ।

घरेलू हिंसा के बढ़ते मामले

परिवार में औरतों के साथ होने वाली घरेलू हिंसा भी उनसे गुलामों की तरह व्यवहार करने जैसा कृत्य है । हिन्दुस्तान में औरतों के साथ घरेलू हिंसा से संबंधित मामले भी लगातार बढ़ रहे हैं । इस समस्या पर भी ध्यान देने की ख़ासतौर से सख़्त ज़रूरत है । औरतों के साथ होने वाली घरेलू हिंसा की समस्या की गंभीरता को देखते हुए, भारत सरकार ने घरेलू हिंसा से संबंधित क़ानून बनाया था । महिलाओं के प्रति होने वाली घरेलू हिंसा से सुरक्षा के लिए उसमें विशेष प्रावधान रखे थे । किंतु इसके बावजूद घरेलू हिंसा के मामलों में कमी नहीं आ रही है । भारत के किसी भी न्यायालय में जाकर देखें सबसे ज़्यादा वाद और वादकारी घरेलू हिंसा से संबंधित नज़र आते हैं । इस समस्या के कारण परिवार व्यवस्था बर्बाद होने के कगार पर हैं । यदि इन मामलों में कमी नहीं आयी तो परिवार व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्था के सामने भी गंभीर ख़तरे पैदा हो सकते हैं ।

घरेलू हिंसा का सीधा-सा मतलब है, परिवार की किसी महिला मेम्बर के साथ अन्य मेम्बरों द्वारा किया जाने वाला दुर्व्यवहार हैं जिसमें मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित

किया जाना शामिल है । एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति मानसिक और शारीरिक दुर्व्यवहार उसके प्रति हिंसा की निशानी है । हिंसा इस दौर की बहुत बड़ी हक़ीक़त है । ज़्यादातर ताक़तवर व्यक्ति कमज़ोर के साथ हिंसा का व्यवहार करने में अपनी शान समझते हैं । ताक़तवर इन्सानी समुदाय और समाज अपने से कमज़ोर को सताना और अपनी ताक़त की दम पर कमज़ोर तबक़े को अपना गुलाम बनाकर रखना बुरा नहीं समझते हैं । इन्सान की यही ज़ेहनियत परिवार में घरेलू हिंसा का कारण है । इसलिए घरेलू हिंसा का शिकार ज़्यादातर औरतें होती हैं, क्योंकि वे कमज़ोर होती हैं । आजकल घरेलू हिंसा के जो मामले प्रकाश में आ रहे हैं उनमें अधिकता उन मामलों की है जिनमें बहुएं या दुल्हनें घरेलू हिंसा की शिकार बनी हैं ।

बहू या दूल्हन के साथ परिवार के सदस्यों द्वारा घरेलू हिंसा होने का कारण यह है कि वह अपनी ससुराल में अकेली पड़ जाती है और दूसरे सदस्य आपस में पहले से अपने होते हैं । मां-बाप, भाई-बहन के बीच में सगा रिश्ता होता है, जबकि जो लड़की बहू बनकर आती है वह पराये घर की होती है । हालांकि अधिक दहेज की अपेक्षा, विचारों का न मिलना, ग़रीबी-अमीरी का भेदभाव, वर्चस्व की भावना, आपसी ईर्ष्या, पक्षपात और भेदभाव आदि बहुत से कारण है जिनकी वजह से परिवार में घरेलू हिंसा की भावना भड़कती है । लेकिन सबसे बड़ा कारण वह ज़ेहनियत है जिसमें एक इन्सान को गुलाम, कमज़ोर और असहाय समझकर दबाया जाता है । अक्सर घर की नयी नवेली बहू को पराया और कमज़ोर समझकर या ईर्ष्या की वजह से दुर्व्यवहार, पक्षपात और भेदभाव का शिकार होना पड़ता है । उसको गुलामों और नौकरों की तरह काम करने के लिए मजबूर किया जाता है । जब वह उसका विरोध करती है तब उसके साथ हिंसक व्यवहार शुरू होने लगता है । उसे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है । उसके साथ तरह-तरह के अमानवीय अत्याचार किये जाते हैं । उसे खाने और कपड़ों से वंचित रखा जाता है । कई बार उसे मारपीट कर घर से बाहर निकाल दिया जाता है और तब घरेलू हिंसा का प्रकरण जन्म लेता है ।

परिवार के किसी भी कमज़ोर सदस्य के साथ घरेलू हिंसा होना आम बात है । बच्चों और बुज़ुर्गों के साथ भी घरेलू हिंसा के उदाहरण मिलते हैं । पुरुषों द्वारा पुरुषों के साथ घरेलू हिंसा की जाती है और स्त्रियों के साथ भी । महिलाएं महिलाओं को घरेलू हिंसा करके सताती हैं । कहीं-कहीं पर महिलाएं पुरुषों के साथ भी घरेलू हिंसा का प्रयोग करती दिखायी देती हैं । बेटे मां-बाप के साथ हिंसा और दुर्व्यवहार करते हैं और बहुएं सास-ससुर के साथ हिंसा और दुर्व्यवहार करतीं । सास, ससुर, बहुओं के साथ दुर्व्यवहार करते हैं । आज के विघटनवादी समाज में इस तरह की घटनाएं स्वाभाविक हैं लेकिन ज़्यादातर मामले घर के अन्दर ही रहते हैं और घर के सदस्य उसे सहन करते हैं । बहुत सारे घरेलू हिंसा के मामले झूठे भी होते हैं और कई मामलों में बहुएं और नयी दुल्हनें भी दोषी हो सकती है । लेकिन ऐसे मामलों की संख्या बहुत ही कम होती है । ज़्यादातर मामलों में पीड़ित पक्ष औरतें, बहुएं और दुल्हनें ही होती हैं जिनको प्रताड़ित करने में सास, ससुर, ननद, नन्देऊ, पति, देवर, जेठ, देवरानी और जेठानी किसी की भूमिका हो सकती है ।

अपमानजनक, अभद्र शब्द

मां, बहन, बेटी, बीवी के लिए अपमानजनक, गन्दे और अश्लील शब्दों से बनी गालियों लोग सिर्फ़ लड़ाई-झगड़े या गुस्से की हालत में अथवा नशे की हालत में ही नहीं करते बल्कि अक्सर ऐसा देखने को मिलता है कि प्यार मुहब्बत की भाषा में इन गन्दे शब्दों को इस्तेमाल करने में ज़िल्लत महसूस करने के बजाय बड़ी लज़्ज़त महसूस करते हैं ।

इन्सान की सबसे बड़ी दौलत मां होती है । जिसके पास मां है वह दुनिया का सबसे बड़ा अमीर आदमी है । मां और औलाद का जो रिश्ता होता है उससे बढ़कर कोई दूसरा रिश्ता नहीं होता । दुनिया के मालिक ने कायनात में जितनी भी नेमतें उतारी हैं उनमें सबसे बड़ी नेमत मां है । इस बात को साबित करने के लिए न किसी धार्मिक सबूत की ज़रूरत है, न किसी वकील की दलील की ज़रूरत है और न किसी अदालत की नज़ीर की ज़रूरत है । मां की अहमियत को साबित करने के लिए सबूत और दलील के लिए सिर्फ़ मां की हक़ीक़त को पेश किया जा सकता है । मां अपनी नज़ीर ख़ुद है.। हर औरत मां के समान है । बहन, बेटी, बीवी भी मां के समान सम्मानीय हैं । वे लोग कितने नादान हैं जो मां, बहन, बेटी, बीवी की अहमियत नहीं समझते । अगर हम अपनी मां की अज़मत को समझते हैं तो उसी अज़मत का तक़ाज़ा यह है कि हम दूसरों की मां, बहन, बेटी, बीवी की अज़मत को समझें और किसी की भी मां, बहन, बेटी, बीवी को गाली न दें ।

दुनिया में कौन ऐसा शरीफ़ इन्सान होगा जो अपनी मां, बहन, बेटी, बीवी की इज़्ज़त नहीं करता होगा । जैसी अपनी मां, बहन, बेटी, बीवी की इज़्ज़त होती है वैसी ही दूसरे की मां, बहन, बेटी, बीवी की भी इज़्ज़त होती है । जिस तरह हमारे लिए हमारी मां देवी के समान है और उसके क़दमों में जन्नत है उसी तरह दूसरों के लिए भी उसकी मां सम्माननीय होती है । इसलिए अगर हमें मां की गाली सुनना पसन्द नहीं तो उसी तरह किसी अन्य को भी मां की गाली सुनना पसन्द नहीं होगा । अगर सब लोग ऐसा सोचें तो मां के पवित्र रिश्ते का बहुत बड़ा सम्मान होगा । इसी प्रकार बहन, बेटी और पत्नी के प्रति अपशब्द कहना और गाली-गलौज में उनको साथ लेना किसी को पसन्द नहीं होगा । मां, बहन, बेटी, बीवी की गाली किसी एक औरत का अपमान नहीं बल्कि पूरी औरत ज़ाति का अपमान है इसलिए अगर लोग मां, बहन, बेटी, बीवी की गाली देना बन्द कर दें तो समस्त स्त्री ज़ाति का बहुत बड़ा सम्मान होगा ।

वस्तुत: औरतों के साथ कई तरह से पारंपरिक, सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक, शाब्दिक और इमोशनल इत्यादि इत्यादि अत्याचार होते हैं । उनके साथ ग़ुलामों की तरह व्यवहार, उनके साथ घरेलू हिंसा और मां, बहन, बेटी, बीवी की गालियां देने और किसी भी क़िस्म के अत्याचार का मूल कारण असमानता, भेदभाव और पक्षपात के आधार पर कमज़ोर को दबाकर रखने वाली ज़ेहनियत है । इसलिए औरतों के साथ पेश आने वाली समस्याओं का निदान आज तक नहीं हो पाया है ।

औरतों के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार, असमानता, भेदभाव, ज़ुल्म और अन्याय की अनेकों मिसालें हिन्दुस्तानी समाज में देखने को मिलती हैं । लड़कियों और औरतों के साथ छेड़छाड़, बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, दहेज की समस्या, कन्या भ्रूण की हत्या, दासी प्रथा आदि अनेकों समस्याएं हैं जिनमें औरत ज़ाति का अपमान और शोषण होता है । बहरहाल, तलाक़, खुला, बहु-विवाह और हलाला के अलावा इन समस्याओं पर भी ग़ौर करने और उनके समाधान की दिशा में क़दम उठाने की अति आवश्यकता है ।

'कान्ति' (मा०) का आगामी विशेषांक

'इस्लामी जीवन दर्शन'

लेख एवं अन्य सामग्रियां आमंत्रित हैं–

संपादक, 'कान्ति' (मा०), दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25

E-mail : editorkanti@yahoo.com

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

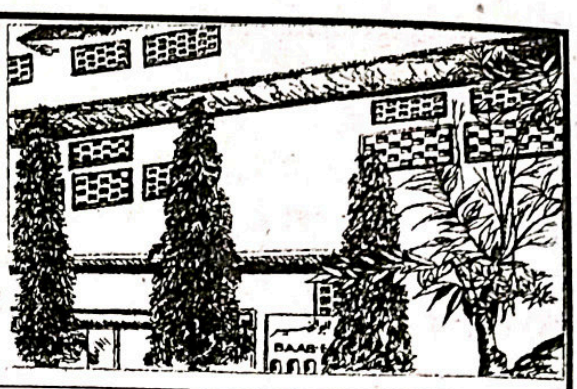

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 30 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2016 ई॰ तक 82 अनाथ बच्चियों और 59 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 110 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 18,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

खिलौना

■ त्रिलोचन अरोरा

वर्तमान समाज में विधवा होना एक बड़ी त्रासदी है । क्या गुज़रती है विधवा पर यह एक विधवा ही जानती हैं । हम क्या आप को बताएं ?

हमारी कहानी भी एक विधवा से प्रारंभ होती है, जिसका नाम है विद्या । जी हां विद्या, जिसे कभी फ़ख़्र था अपने प्रीतम पर, अपने पति गिरधर पर । आज ठीक सात साल बाद, गिरधर की तस्वीर उसकी आंखों के सामने यूं स्पष्ट दिखायी देने लगी, मानो वह उसकी तस्वीर नहीं, स्वयं गिरधर मुस्करा रहा हो । कितना प्यार करते थे वे मुझसे ।

शायद ही कोई और पति अपनी पत्नी को इतना प्यार दे पाया हो । क्या-क्या सपने संजोये थे हम दोनों ने मिलकर. ..हमारा छोटा-सा पर सुखी परिवार होगा...साथ-साथ रहने की क़समें खायीं थीं कभी फिर क्या वह मुझ से रूठकर इस तस्वीर में जा बसे हैं ? जाने कब तक विद्या अपने ख़यालों के समुन्द्र में गोते लगती रही । गिरधर के मरने के बाद शायद विद्या भी ज़िन्दा न रहती । कई बार उसने आत्महत्या करने के प्रयास भी किये, किंतु हर बार माया का मोह उसके क़दम वापस, उसे घर का रास्ता दिखा देते ।

जब गिरधर की कार-दुर्घटना हुई थी, उस समय माया चार वर्ष की तुतलाती बच्ची थी । ठीक तरह बोल भी न पाती थी । क्योंकि विद्या का गिरधर से प्रेम-विवाह हुआ था, वह भी गिरधर के मां-बाप की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ । विद्या अपने ससुराल वालों से अलग ही रह रही थी । गिरधर जब विद्या से 'कोर्ट-मैरेज' करके घर पहुंचा था अपनी पत्नी के साथ तो बजाय आशीर्वाद के उन्हें अपमान मिला । गिरधर को उसकी पत्नी के सामने की धुतकारा गया और घर पर क़दम न रखने का आदेश भी सुनाया गया । अपने पहने हुए जोड़े के सिवाय उसे घर की किसी भी वस्तु को हाथ लगाने की इजाज़त नहीं थी ।

मरता क्या न करता, पास इतने पैसे भी न थे कि वह होटल में या किसी किराये के मकान में कुछ दिन काट लेता । हार कर उसे विद्या के घर की शरण लेनी पड़ी । यह सोचा कि कुछ दिन यहां रहकर, वह अपना ठिकाना आप ढूंढ़ लेंगे, विद्या के घर वालों ने उन्हें शरण दे दी । परन्तु बम्बई जैसी महानगरी में, नौक़री, काम-धंधा तो कोशिश करने पर मिल भी जाता है, पर मकान की समस्या ज़रा गंभीर है । जिसके पास पैसा है वह ही इस समस्या का हल निकाल सकता है । वरना हज़ारों यहां बेघर पड़े हैं ।

क्योंकि विद्या का घर मुश्किल से उनके ही गुज़ारे लायक़ था उस पर विद्या की छोटी बहन रानी भी साथ रहती थी, विद्या की मां ने ठीक नहीं समझा, अपने जमाई का इस तरह घर में डेरा लगाकर बैठे रहना । बातों ही बातों



में, एक रोज़, विद्या को अपना बन्दोबस्त करने की सूचना दी गयी । यही कारण था कि तब से लेकर अब तक विद्या ठीक तरह अपना ठिकाना नहीं बना सकी ।

पक्षी की तरह इस डाली से उस डाली तक कभी इस पेड़ पर तो कभी उस पेड़ पर उसका ठिकाना होता । जब तक गिरधर उसके साथ था, वह इसमें भी प्रसन्न थी । पर अब वह किस तरह ढूंढ़ती फिरती अपना ठिकाना ? इस ठिकाने की ख़ातिर न जाने कितनी मुसीबतें झेलनी पड़ी उसे । कितनी बातें सुननी पड़ी उसे । वह अकेली होती तो शायद न भी सुनती पर उसके पास, बेटी माया जो थी, जिसकी ख़ातिर उसने लोगों के अपमान सहे । ज़माने की गलियां सुनीं । कौन शरण देता है ग़रीब को बिना पैसों के ? फिर वह ठहरी विधवा ।

एक मुसीबत की मारी, और कितने जुल्म सहती वह, अपनी जीविका की ख़ातिर । हर कोई उसकी मज़बूरी का लाभ उठाना चाहता था । यह अमीर लोग भी अजीब होते हैं । एक ग़रीब औरत को रुपये दिखाते हैं । विद्या को कब मंज़ूर था वह सब । गिरधर का कमाया धन भी जवाब देने लगा था । आगे क्या होगा, अब यही चिंता सताये रहती उसे । एकाएक उसे अपने ससुराल की याद आ गयी । मन में अनेक प्रकार के संदेह लिए जब वह वहां पहुंची तो उसे पहचानने से इन्कारा गया ।

'न जाने कौन चुड़ैल है और किसका पाप लिए फिरती है' कहकर उसकी हंसी उड़ायी गयी । अपने भाग्य को तय हुए वह पहुंची अपने घर-अपनी मां के पास । हाय री क़िस्मत वहां जाकर उसे यह जानकर दुख हुआ कि अब उसके मां-बाप वहां नहीं रहते । एक दिन पता नहीं अचानक कहां ग़ायब हो गये । अब वहां रानी किसी के साथ रह रही थी । पूछने पर पता चला कि वह उसका पति है । इस पर विद्या को संदेह तो हुआ पर साथ ही अफ़सोस भी । उसे स्थिति समझने में देर न लगी, क्योंकि घर पर एक वही होता तो वह मान भी लेती, पर वहां का माहौल ही बदला हुआ था । उसके साथ कुछ अन्य 'फ्रेंड्स' भी थीं ।

कुछ के स्वभावों से वह वाक़िफ़ थी । साथ ही कुछ मर्द महफ़िल जमाये बैठे थे । उनमें से एक ने तो विद्या पर भी अपनी वासना-भरी दृष्टि से वार किया । विद्या ने माया को संभाला और शीघ्र ही अपनी साड़ी के आंचल को संवारते हुए वहां से मुड़ी । उसके मुड़ने की देर थी कि रानी ने धमाके के साथ दरवाज़ा बंद कर लिया । इस पर विद्या ने मुड़कर बंद दरवाज़े की ओर देखा, अन्दर से कहकहों की भद्दी आवाज़ों ने उसके सारे जिस्म को हिला दिया । उसे अपने भविष्य की ख़ौफ़नाक तस्वीर डराने लगी । माया की बरबादी की शहनाइयां उसके कानों में गूंजने लगीं । वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी–''नहीं-नहीं !''

''क्या हुआ मां ?'' अपनी मां से लिपटते हुए माया ने घबरा कर पूछा । ''कुछ नहीं बेटी । अब तुझे कुछ नहीं होगा ।'' कहकर विद्या ने अपने सीने पर पत्थर रखा ।

लघुकथा

कीड़ा-मकोड़ा

डॉ॰ सिन्हा महाविद्यालय में पशु-पक्षियों के संरक्षण पर आयोजित गोष्ठी में भाग लेकर कार से लौट रहे थे । वे प्रसन्न थे । विषय पर उनका भाषण इतना बढ़िया था कि श्रोताओं की करतल ध्वनि से सभागार गूंज उठा था ।

अचानक ड्राइवर ने कार रोकी । झटका लगा । कुत्ते का पिल्ला सामने आ गया था । ड्राइवर ने तत्परता से कार में ब्रेक न लगायी होती, पिल्ले की हड्डी-पसली एक हो गयी होती । डॉ॰ सिन्हा बोल पड़े, 'कार रोकने की क्या ज़रूरत थी । ऐसे कीड़े-मकोड़े शहर में रोज़ाना न जाने कितने दबते मरते रहते हैं । कहां-कहां तक कार रोककर वक़्त जाया करते रहोगे ।'

● विद्या प्रकाश

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand

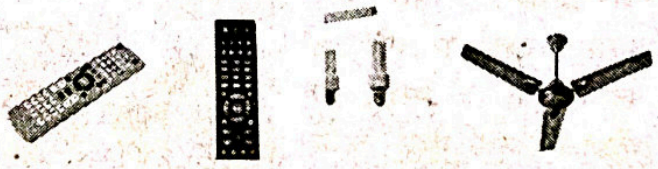

हरफ़नमौला पत्रकार विद्या प्रकाश

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

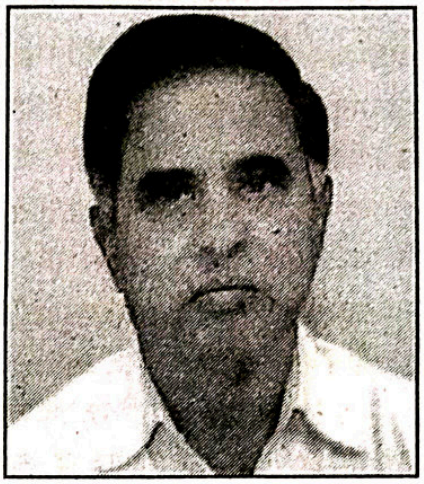

अपनी बहुमुखी प्रतिभा से हिंदी जगत को ओतप्रोत करने वाले सुख्यात पत्रकार एवं लेखक विद्या प्रकाश अब हमारे बीच नहीं रहे । उनका विगत 13 मई 2017 को देर रात लगभग सवा दो बजे जौनपुर (उत्तर प्रदेश) में देहांत हो गया । वे 66 वर्ष के थे । मूल रूप से उ॰प्र॰ के मछली शहर के जमुहर गांव के रहने वाले श्री श्रीवास्तव जौनपुर के सिपाह में दशकों से रहते थे । वे लीवर कैंसर से पीड़ित थे और इधर कुछ दिनों से चिकुनगुनिया से ग्रसित रहे ।

'कान्ति' साप्ताहिक और मासिक से वे दो दशक से अधिक समय से जुड़े रहे और इस्लाम सहित अन्य विषयों पर लगातार लिखते रहे । उनकी मृत्यु से 'कान्ति' परिवार को गहरा सदमा लगा है । हमारा परिवार उनके आश्रितों के प्रति गहरी समवेदना प्रकट करता है । विद्या प्रकाश जी अपने पीछे पत्नी गीता श्रीवास्तव (एडवोकेट), बेटे डॉ॰ अनुराग और बेटी जूही को छोड़ गये हैं ।

विद्या प्रकाश का पूरा नाम विद्या प्रकाश श्रीवास्तव है, लेकिन वे सदा 'विद्या प्रकाश' नाम से लिखते रहे । उन्होंने अपने नाम के साथ कभी जातिसूचक शब्द नहीं लगाया । अपने लंबे पत्रकारिता सफ़र में उन्होंने दैनिक आज, दैनिक जागरण, दैनिक मान्यवर, तरुण मित्र, 'डेली न्यूज़ एक्टीविस्ट' आदि में कार्य किया, लेकिन उनका 'कान्ति' से जितना लगाव था, उतना किसी अन्य संचार माध्यम से नहीं था । सही मायने में 'कान्ति' में लेखन उनके आत्मिक संतोष का बड़ा ज़रिया था। विद्या प्रकाश जी कहीं भी कार्यरत रहे हों, मगर वे 'कान्ति' में लिखना नहीं भूलते । प्रायः प्रत्येक सप्ताह उनके लेख हमें मिलते और हम उन्हें प्रकाशित करते । कहानी, लघुकथा, कविता से लेकर रिपोर्ताज तक लिखना उनके लिए बड़ा सहज होता । वास्तव में वे पत्रकारिता के ऑल राउंडर थे ।

सभी जानते हैं कि 'कान्ति' इस्लामी पत्रकारिता में दशकों से संलग्न है । अतः हमारे के लेखादि लिखना कुछ कठिन है, लेकिन हरफनमौला (ऑल राउंडर) विद्या प्रकाश जी ऐसा लिखते कि हमें अधिक संपादन की आवश्यकता नहीं पड़ती थी । वे इस्लामी शिक्षाओं से संबंधित विषयों पर ऐसा प्रभावपूर्ण-तथ्यपरक लिखाते कि सब मंत्रमुग्ध हो जाते । ऐसे में कभी मुझ पर ये आरोप भी लगे कि मैं आलेख लिखकर 'विद्या प्रकाश' नाम (छद्म नाम) डाल देता हूं । विद्या प्रकाश नाम के कोई सज्जन नहीं हैं । वे इस्लाम पर कुशलतापूर्वक लिखने के साथ अन्य विषयों पर अपनी क़लम चलाते ।

अभी थोड़े समय पहले उन्होंने जो लेख भेजे थे, उनमें एक लेख हिंदी भाषा विषयक था, जिसका शीर्षक है 'हिंदी भाषा में विदेशी भाषाओं के शब्द' । इस लेख में उन्होंने हिंदी में आये अरबी शब्दों का विशेषकर उल्लेख किया है ।

विद्या प्रकाश जी एक गंभीर अध्येता भी थे । उनसे मोबाइल पर अक्सर बात होती । कम बोलते, लेकिन सधी हुई भाषा बोलते । पिछले दिनों अपने बेटे कि शादी की, तो निमंत्रण दिया । मोबाइल पर भी बात की, किन्तु व्यस्तता के चलते मैं शादी-समारोह में शामिल नहीं हो सका ।

विद्या प्रकाश जी से मेरी एक बार भेंट हुई थी । वह अवसर था जमाअत इस्लामी हिन्द के एक कार्यक्रम का, जिसमें सम्मिलित होने के लिए वे भी आये थे । उस समय वे 'कान्ति' में न के बराबर लिखते थे । भेंट के दौरान मैंने उनसे लिखने का आग्रह किया, तो उन्होंने लिखने का वादा कर लिया और इस वादे को जीवन पर्यन्त निभाया भी । ऐसे लोग विरले ही मिलते हैं, वह भी आज के ज़माने में । 'कान्ति' परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक शोकांजलि...उनके योगदान के प्रति हम कृतज्ञ हैं ।

क्या हमारे हालात सन्तोषजनक हैं ?

● संपादन प्रभाग

इस समय देश का वातावरण इतना कृत्रिम हो गया है कि ऐसा आभास होता है जैसे इन्सान के सामने अब कोई समस्या ही नहीं है । रोटी, कपड़ा और मकान जैसी उसकी मौलिक समस्याओं का समाधान हो चुका है । न कहीं ग़रीबी है, न भुखमरी, न बेरोज़गारी है न उचित दवा एवं उपचार का अभाव, न अन्याय एवं अत्याचार की समस्या है न भ्रष्टाचार, न लूटमार है न सामाजिक असमानता, हर तरफ़ दूसरी समस्याएं ही मन-मस्तिष्क पर छाई हुई हैं । वे समस्याएं ऐसी हैं जिनका सामान्य जनजीवन से कोई संबंध नहीं है ।

ऐसा आभास हो रहा है जैसे हमें न तो महंगाई के विषय में अब कोई कठिनाई है, न इसकी कोई शिकायत कि देश में अच्छी चिकित्सा-व्यवस्था का अब भी अत्यन्त अभाव है, खाद्य सामग्रियों की उपलब्धता में कठिनाइयों की बात भी आज कोई नहीं कर रहा है, किसी को इसकी भी चिन्ता नहीं है कि शिक्षा को आम होना चाहिए और घर-घर इसे पहुंचाने की ज़रूरत है जैसे अब इसकी ज़रूरत बाक़ी ही नहीं रही । एक वक़्त था जब हर छोटा-बड़ा भ्रष्टाचार की बात करता था, लूटमार के बाज़ार गर्म होने का रोना था । ग़रीबी से आम जनता के परेशान होने की बात हर तरफ़ की जाती थी । सम्पन्नता और दरिद्रता के बीच की खाई के बढ़ने की बातें होती थीं । राजनीति में आपराधिकरण की बातें हर तरफ़ होती थीं, समाज से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने की बातें होती थीं ।

एक वक़्त था जब हर छोटा-बड़ा भ्रष्टाचार की बात करता था, लूटमार के बाज़ार गर्म होने का रोना था । ग़रीबी से आम जनता के परेशान होने की बात हर तरफ़ की जाती थी । सम्पन्नता और दरिद्रता के बीच की खाई के बढ़ने की बातें होती थीं ।

बेरोज़गारी के बढ़ने पर चिन्ता जतायी जाती थी, रोज़गार के उपलब्ध कराये जाने की मांग भी होती थी और इस संबंध में दावे भी किये जाते थे, देश की न्यायिक व्यवस्था में आने वाली ख़राबियों पर चर्चा होती थी और इसको स्वच्छ तथा पारदर्शी बनाए रखने की ज़रूरत प्रकट की जाती थी, लेकिन अब इस तरह की बातें कहीं नहीं हो रही हैं ।

आज अगर कोई मुद्दा छाया हुआ है तो पकिस्तान की शरारत है, उसकी ओर से आतंकी गतिविधियों को हवा देने की बातें हैं, हर तरफ़ तीन तलाक़ की बातें हो रही हैं । मुस्लिम महिलाओं पर होने वाले 'अत्याचार' पर चिन्ता प्रकट की जा रही है और उनको इस स्थिति से निकालकर 'सम्मानजनक स्थिति एवं सम्मान्नीय स्थान' दिलाने की बातें की जा रही हैं । बहुपत्नित्व पर चर्चा हो रही हैं ।

अज़ानों से पैदा होने वाले 'प्रदूषण' की समस्या उठायी जा रही है । कश्मीर में उग्र प्रदर्शन पर चिन्ता व्यक्त की जा रही हैं । जानवरों के ज़िब्ह करने पर बातचीत हो रही है और मांस खाने को बन्द करने के संबंध में क़दम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया जा रहा है । इसको ग़ैर क़ानूनी और असंवैधानिक क़रार दिये जाने पर विचार हो रहा है । राजनीतिक गलियारों में भी यही सब कुछ हो रहा है और ग़ैर राजनीतिक क्षेत्रों में भी यही चर्चा का विषय बना हुआ है ।

ऐसा आभास होता है जैसे ग़रीबी की समस्या हल को चुकी है, रोज़गार की समस्या का समाधान हो चुका है । जनस्वास्थ्य और स्वास्थ्य रक्षा के विषय में स्थिति संतोषजनक है । शिक्षा चाहे किसी भी स्तर की हो इस क्षेत्र में भी हमारे समक्ष अब कोई समस्या नहीं है । शांति व्यवस्था की स्थिति भी संतोषजनक है । भ्रष्टाचार की हालत जो कल तक थी अब वहां भी चिंता की कोई बात नहीं रह गयी ।

राजनीति को स्वच्छ एवं पारदर्शी बनाने की आवश्यकता पर जिस प्रकार पहले विचार प्रकट किया जाता था अब इस विषय पर कम चर्चा हो रही है । प्रदूषण के विषय में भी जो चिंता पहले जतायी जाती थी अब इस पर भी कम बात हो रही है । आर्थिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों पर भी जो प्रश्न पहले उठाये जाते थे इस प्रकार की बातें अब नहीं सुनी जा रही हैं । क्या यह समझा जाए कि हमारे हालात अब पूरी तरह संतोषजनक हैं ।

थप्पड़ खाने के लिए नहीं पहनी वर्दी...

■ वेद व्यास

अब हम ग्लोबल (वैश्विक) महाशक्ति बनने के प्रयास में पिछले 25 साल के भीतर चीन के बाद दुनिया का सबसे बड़ा बाज़ार बन गये हैं । इस कारण से हमारी 133 करोड़ से आगे बढ़ती आबादी भी तरह-तरह की समस्याओं, चुनौतियों और अन्तर्विरोधों से घिरती जा रही है और देश का लोकतंत्र भी अपराध, भ्रष्टाचार और ग़ैर-बराबरी की महाभारत में फंसता जा रहा है ।

विकास और परिवर्तन का खेल भी कुछ इस तरह से खेला जा रहा है कि–महात्मा गांधी का 'हिन्द स्वराज' भी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अखाड़ा बन गया है तो सामाजिक व आर्थिक समानता का संविधान भी ग़ैर-बराबरी के महायुद्ध में बदल गया है । गंदी राजनीति के गंदे कारोबार से भारत के गणतंत्र में कश्मीर से कन्या कुमारी तक और आसाम से गुजरात तक सभी तरफ़ जाति व धर्म आधारित आतंकवाद और हिंसा-प्रतिहिंसा के ज्वालामुखी सुलग रहे हैं । एक समस्या को सुलझाने में दस मुसीबतें उलझ रही है । क्योंकि भूख, अज्ञान और हिंसा की तथा बड़े और धनी देशों की लाभ और प्रभुसत्ता की प्रेतछाया कभी हमारा पीछा नहीं छोड़ती ।

अब हमारे लोकतंत्र की अलौकिक विशेषता ही यह बन गई है कि–जो जनता, सरकार को बनाती है वही जनता एक चुनाव से दूसरे चुनाव तक और ग्रामसभा से लेकर लोकसभा तक अपने अधिकार और न्याय की हर बात के लिए पुलिस व प्रशासन के जूते, लाठी व गोली भी खाती है, तो अपने घर-परिवार की ख़ैरियत मांगते हुए धर्म स्थलों में सवामणी की प्रसादी भी चढ़ाती है । वही, हमारी एक ज्ञानधारा यह भी है कि–हम भी भगवान के बाद केवल पुलिस व अदालत से ही डरते हैं और शक्ति (दबंगई) की ही भक्ति (गुलामियत) करते हैं ! दुर्भाग्य से, इस लोकतंत्र में पुलिस और प्रशासन को ही आम आदमी ने 'शक्ति पीठ' मान लिया है । क्योंकि इसके पास ही संविधान व संविधान की लाठी, गोली, बंदूक़, जेल और वर्दी है । लेकिन, पिछले दिनों ही तथा वर्षों से हमने अपने प्रदेश में ही कुछ ऐसा विकास और परिवर्तन भी देखा है कि–पुलिस को जनता भी पीट रही है, थानों का घेराव हो रहा है और सत्ता पार्टी ही अपनी पुलिस की वर्दी को फाड़ रही है । यही कारण है कि अब जालौर, अजमेर, बाड़सेर, कोटा, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर आदि से ये ही आवाज़ें और तस्वीरें आ रहीं है कि–'हमने थप्पड़ खाने के लिए वर्दी नहीं पहनी है ।'

इसलिए, आरोप, बनाम प्रत्यारोप और जनता बनाम पुलिस का शुरू होता यह नया धारावाहिक हमको कई तरह के संदेश देता है और कहता है कि–लोकतंत्र में अब 'पुलिस तंत्र' पूरी तरह से केवल सत्तापार्टी (किसी भी पार्टी की सरकार हो) की ही 'संकटमोचक' बन गयी है । क्योंकि, सरकार के पास मात्र अपनी ही समस्याओं के अलावा आम आदमी की समस्याओं का कोई 'हल' नहीं है तथा जनता के असंतोष को दबाने-कुचलने में सबसे बड़ी संगठित कही जाने वाली 'आंतरिक सुरक्षा सेना' के रूप में सरकार के पास 'पुलिस बल' ही है । जिसमें ज़रूरत होने पर सीमाओं की सुरक्षा के लिए संगठित 'बाहरी सुरक्षा सेना' की भी मदद अमन-शांति व आंतरिक सुरक्षा के नाम पर ये सरकारें लेती रहती है । वहीं, सरकारी व ग़ैर-सरकारी स्तरीय मानवाधिकार आयोग, महिला आयोग, सूचना आयोग, अनुसूचित जाति व जनजाति आयोग, अल्पसंख्यक आयोग तथा छोटी से लेकर बड़ी अदालतों का रिकार्ड भी बताता है कि–आम जनता की 90 प्रतिशत शिकायतें भी इसी पुलिस-प्रशासन के ख़िलाफ़ ही आती है ।

तो, सरकार ने भी अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए पुलिस का उपयोग और दुरुपयोग करना ही अपनी कुशलतम व सफलतम राजनीति की रक्षा का 'लाइसेंस' मान लिया है । क्योंकि, पुलिस और प्रशासन का पहला 'माई-बाप' भी आमजन द्वारा चुनी हुई 'सरकार' ही होती है । हज़ारों साल से राजा और प्रजा के बीच ये पुलिस और प्रशासन ही सभी समस्याओं की जड़ भी है, तो हर मर्ज़ की दवा भी है । लोकतंत्र के पिछले 70 साल बाद भी पुलिस

प्रशासन का और राजनेताओं की राजनीति का, हम भारत के निवासियों में कोई विश्वसनीयता का चाल, चेहरा और चरित्र नहीं बन पाया है ।

जबकि राजनीति और पुलिस का ही आपस में 'चोली-दामन' का रिश्ता-नाता वाला 'गठबंधन' ज़रूर बन गया है । आज भी ग़रीब और शरीफ़ नागरिक, पुलिस और अदालत से डरता है क्योंकि भगवान की माफ़िक ही पुलिस व अदालत ही उसकी रक्षक व भक्षक दोनों ही है और उसके मरने-जीने की अंतिम शरण-स्थली भी है ।

तो, लोकतंत्र और संविधान की सबसे बड़ी भूल-भुलैया और उलटबासी ये है कि–'क़ानून का शासन' और 'सरकार का इक़बाल' क़ायम करते-करते पुलिस-प्रशासन की मानसिकता भी जनता से ज़्यादा सरकार और सत्ता के प्रति अधिक वफ़ादार हो गयी है । तो, मज़ाक़ ये भी है कि–70 साल में देश में हर तरह के विकास और परिवर्तन का दम हर सत्ताधारी भरते सुनाई देते रहते हैं, लेकिन पुलिस सुधार, चुनाव सुधार, भूमि सुधार और प्रशासनिक सुधार जैसी सभी सुधारवादी नियम ब्रिटिशकालीन ही चल रहे हैं । जैसे–ब्रिटिश शासन समय का ही बना हुआ वर्ष 1861 का 'पुलिस एक्ट', वर्ष 1867 का बना हुआ 'प्रेस और पुस्तक रजिस्ट्रकरण अधिनियम' और 1933 का बना हुआ 'भारतीय डाक अधिनियम' आज भी हम पर लागू बना हुआ है और तब के समय के इन क़ानूनों में बने हुए 'काले क़ानून' (जो आमजन को उत्पीड़ित व आतंकित किये हुए हैं) को हम आजतक भी झेलने को 'जो हुक्म मेरे आका' की माफ़िक मजबूर बने हुए हैं ।

यानी, तब हम ब्रिटिश शासन के ग़ुलाम बने हुए थे और अब हम उन्हीं क़ानूनों के ज़रिये अपनी ही लोकतंत्रीय सरकार की बनी हुई दबंगई के ग़ुलाम बने हुए हैं–कितना दुखद व शर्मनाक है हमारे आज़ाद कहे जाने वाले लोकतंत्रीय भारत देश के लिए और देश के नागरिकों के लिए...लगता है जब हम आमजन अनादिकाल से राजशक्ति के उपासक रहे हैं, तो पुलिस प्रशासन भी वैदिककाल से आज तक राजभक्ति की ही वर्दी पहनकर अपना डंडा और झंडा लहरा रहा है । शायद, यही व्यवस्था का खेल है कि–जिसमें 'जनता में भय' का बना रहना ही 'सरकार का इक़बाल' बन गया है, तो वर्दी, डंडा, बंदूक़, जेल और अदालत को ही 'राजधर्म' मान लिया गया है । वैसे भी, 'वर्दी' के अलावा एक पुलिस अधिकारी-कर्मचारी के पास और है भी क्या ? वर्दी के उतरते ही राजा भी नंगा ही होता है और इसी अभाव-अभियोग में राजनीति का दंगा होता है । ऐसी व्यवस्था में समझदार की ही मौत होती है । क्योंकि वर्दी के पीछे सरकार है, तो जनता के पीछे उसका भय, भाग्य और भगवान है ।

हम जानते हैं कि पुलिस और सरकार दोनों ही जनता और इस समाज व्यवस्था की देन है तथा एक-दूसरे पर आश्रित भी है । लेकिन, पुलिस पर आम आदमी की चढ़ाई और राजकाज में जाति-धर्म की आपराधिक लामबंदी से न केवल समाज और लोकतंत्र ही कमज़ोर होगा, बल्कि अभाव-अभियोग का संघर्ष भी बढ़ेगा । सरकार व पुलिस तथा जनता यदि संयम नहीं रखेंगी, तो फिर सत्य, अहिंसा और सुख-शांति कैसे बचेगी–हम सबके लिए विचार-मनन का विषय है । जब हज़ारों साल से जनता के धैर्य की परीक्षा हो रही है तो फिर पुलिस-प्रशासन को भी अपनी सरकारी वर्दी से बाहर आकर यह भी सोचना चाहिए कि–इधर 'वर्दी' क्यों पिट रही है और उधर 'जनता' क्यों हिंसक हो रही है ? तो सवाल यह भी बना हुआ है कि–इस लोकतंत्रीय व्यवस्था में 'राजनीति' क्यों सबको जाति-धर्म के नाम पर लड़वा रही है और क्यों ब्रिटिश व्यवस्था के पद-चिन्हों पर चलकर फूट डालकर राज कर रही है...?

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

हिन्दी भाषा में विदेशी भाषाओं के शब्द

भाई विद्या प्रकाश जी द्वारा 'कान्ति' को भेजा अंतिम लेख, जिसे आदर स्वरूप प्रकाशित किया जा रहा है–संपादक

किसी भी भाषा के निर्माण में शब्दों का वही महत्व है जो भवन निर्माण में ईंट तथा शरीर निर्माण में कोशिकाओं का होता है । शब्दों के बिना भाषा के स्वरूप का गठन संभव ही नहीं हो सकता । किसी भी भाषा में शब्दों का निर्माण अनेक प्रकार से होता है । एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में प्रयोग सामान्य तथा स्वाभांविक प्रक्रिया है । हम दृष्टान्तस्वरूप हिन्दी भाषा को लें ।

देश में इस भाषा को बोलने वाले लोगों की संख्या 42 करोड़ से भी अधिक है मगर क्या आप इस तथ्य से परिचित हैं कि इस भाषा के लेखन वाचन तथा संभाषण में प्रयुक्त किये जाने वाले ऐसे विपुल शब्द हैं जो विदेशी हैं । हिन्दी में तत्सम, तद्भव तथा देशी शब्दों के अतिरिक्त ऐसे असंख्या शब्द हैं जो विदेशी भाषाओं से लिये गये हैं तथा वे इस प्रकार हिन्दी में घुल-मिल गये हैं कि वे विदेशी प्रतीत ही नहीं होते । किसी भी भाषा में विदेशी भाषाओं से लिये गये ऐसे शब्दों को लोनवर्ड्स (उधार लिये गये शब्द) कहा जाता है ।

हम दिन में सामान्य बोलचाल में न जाने कितनी बार तिथि के अर्थ में तारीख़ शब्द का इस्तेमाल करते हैं । क्या आपको पता है–इस शब्द की उत्पत्ति कहां से और कैसे हुई है तथा इसका चलन हिन्दी में कैसे आरंभ हुआ । दरअस्ल यह शब्द अरबी भाषा से लिया गया शब्द है । इसके अलावा मायने जिसका अर्थ मतलब होता है, अरबी भाषा से लिया गया है । इसी प्रकार अख़बार (समाचार पत्र), अदब (सम्मान) और काफ़ी (पर्याप्त) जैसे अनेकानेक शब्द अरबी भाषा से हिन्दी में उधार लिये गये हैं ।

इसी प्रकार हम अपने दैनिक जीवन में पेय के रूप में जिस चाय का प्रयोग करते हैं, वह शब्द चीनी भाषा की देन है । लीची, कारतूस, साबुन तथा मोमो, जैसे ऐसे अनेक शब्द हैं जो है तो चीनी भाषा के मगर अब हिन्दी में पूरी तरह अपना लिये गये हैं तथा वे हिन्दी में स्वाभाविक रूप से घुल-मिल गये हैं । सब्ज़ी, फल अथवा, अन्य खाद्य तथा पेय पदार्थ हम सदैव ताज़ा ही चाहते हैं परन्तु क्या आपको पता है कि 'ताज़ा' शब्द पर्शियन भाषा का है । आप स्नानोपरांत बदन पोंछने के लिए तौलिया खोजते हैं, मगर आप इस बात से अनभिज्ञ हैं कि हिन्दी भाषा में यह शब्द पुर्तगाली भाषा से आया है ।

इसके अलावा तम्बाकू तथा आया (काम वाली बाई) भी ऐसे शब्द हैं जो पुर्तगाली भाषा के हैं मगर हम हिन्दी में इनका बेधड़क प्रयोग करते हैं । हवा का प्रत्येक प्राणी के जीवन में बड़ा महत्व है जिसके बग़ैर हम जीवन के अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सकते । क्या आपको पता है कि हिन्दी में यह शब्द तुर्की भाषा से आया है । इसके अलावा तोप, हफ़्ता, क़ातिल, दुकान तथा बादाम जैसे अनेकानेक शब्द ऐसे जो हिन्दी में तुर्की भाषा से लिये गये हैं । इसी प्रकार हिन्दी में तीन पहिया वाहन के अर्थ में प्रयुक्त रिक्शा शब्द जापानी भाषा से लिया गया है । इस तरह हम देखते हैं कि अरबी, फ़ारसी, पुर्तगाली, द्रच, फ्रेंच आदि विदेशी भाषाओं से आये बहुसंख्यक शब्दों ने हिन्दी भाषा का भंडार भरण किया है तथा उसे समृद्ध किया है ।

हिन्दी भाषा में अरबी से आने वाले शब्दों में औरत, अदालत, क़ानून, कुर्सी, जुर्माना, इलाज, लिफ़ाफ़ा, औलाद, इस्तीफ़ा, तहसील, फ़ैसला, मुक़दमा, काग़ज़, तराज़ू, क़बीला, इज़्ज़त, शतरंज वग़ैरह शामिल हैं जबकि फ़ारसी शब्दों के आदमी, तनख़्वाह, चश्मा, बीमार, अमरूद, आतिशबाज़ी, आवारा, आसमान, ख़ज़ाना, आमदनी, गुब्बारा, जानवर, सौदागर, सुलतान वग़ैरह तमाम शब्द हैं जो हिन्दी में लिये गये हैं । हिन्दी में लिए गये पुर्तगाली शब्दों में अचार, चाबी, आलजिन,

कनस्तर, नीलाम, गोभी, गोदाम, जीपा, पादरी, पतलून, पिस्तौल वग़ैरह तमाम शब्द हैं । इसी पुकार कैंची, कलंगी, आका, चम्मच, बारूद, कालीन चोगा, बावर्ची वग़ैरह तमाम शब्द ऐसे हैं जो तुर्की ज़बान से ग्रहण किये गये हैं जबकि हिन्दी में प्रचलित काजू, कूपन, सूप, मेयर और अंग्रेज़ जैसे शब्द फ्रेंच तथा तुरूप, चिड़िया, ड्रिल आदि शब्द डच भाषा के हैं ।

इसी प्रकार हिन्दी में प्रयुक्त बुजुर्ग, स्पुतनिक लूना आदि शब्द रूसी भाषा तथा एकेडमी एटलस, बाइबल, टेलीफ़ोन आदि शब्द यूनानी भाषा से संबंधित है । आजकल हिन्दी भाषा में यूनीवर्सिटी, एग्जामिनेशन, मार्केट, न्यूजपेपर, सेमेस्टर, मेट्रोमोनियल कार्ड, इनवाइटेशन, मैगज़ीन, एडमीशन, वीकली, मंथली, एनुवल एनिवर्सिरी, फंक्शन, ब्लड सर्कुलेशन, हॉस्पिटल आदि अंग्रेज़ी भाषा के तमाम शब्दों का लेखन तथा सामान्य बोलचाल में अमूमन इस्तेमाल किया जाता है जो देश में ब्रिटिश शासन के प्रभाव का उदाहरणस्वरूप है ।

एक भाषा में दूसरी विदेशी भाषा के शब्दों का चलन विभिन्न कारणों से होता है तथा इसका अध्ययन निश्चित रूप से दिलचस्प विषय है । इस दिशा में अभी और विस्तृत तथा गहन शोध एवं अध्ययन की आवश्यकता है ।

नअत

आपके नक़्शे-क़दम[1] को जब से छोड़ा है हुज़ूर[2]
हम हैं और बढ़ता हुआ ज़िल्लत[3] का साया[4] है हुज़ूर

सरवरे-आलम[5] भी हैं और शाफ़ी-ए-महशर[6] भी हैं
दो जहां[7] में आप ही का बोलबाला है हुज़ूर

बेयक़ीनी[8], बेज़मीरी[9] अक़्ल की ग़ारतगरी[10]
अस्रे हाज़िर[11] में अंधेरा ही अंधेरा है हुज़ूर

कब से कहती हैं ज़ुबानें कब से लिखते हैं क़लम
आपकी तारीफ़[12] का मज़मून तिश्ना[13] है हुज़ूर

सो गये अह्ले-अरब[14] ऐशो-तरब[15] की छांव में
अब अजम[16] शौक़े-शहादत[17] में सफ़-आरा[18] है हुज़ूर

कट मरूं, ऐ काश, मैं भी आपके नामूस[19] पर
दर्द का मेरे यही बस एक मदावा[20] है हुज़ूर

जब भी आती है सबा[21] सम्ते-मदीना[22] से इधर
मैं समझता हूं कि मेरा ही बुलावा है हुज़ूर

रौज़ा-ए-अतहर[23] पे अश्कों[24] का मुहर्रिक[25] ग़म नहीं
ये तो मेराजे-मसर्रत[26] का तक़ाज़ा है हुज़ूर

हम बुरा समझें उसे तौबा हमारी क्या मजाल
आपने अच्छा कहा जिसको वो अच्छा है हुज़ूर

आपकी राहे-इताअत[27] से गुरेज़ां[28] है 'हफ़ीज़'
और ज़ुबां पर आपकी उल्फ़त[29] का दावा है हुज़ूर ।

● हफ़ीज़ मेरठी

1. चरण-चिह्न 2. इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) 3. अपमान 4. छाया 5. विश्वनायक 6. क़ियामत के दिन ईश्वर से सिफ़ारिश करके मोक्ष दिलाने वाला 7. दोनों दुनिया, लोक-परलोक 8. अविश्वास 9. आत्माहीनता 10. विनाश-लीला, तबाही 11. वर्तमान काल 12. प्रशंसा 13. अपूर्ण 14. अरबवासी, अरब वाले 15. भोग-विलास और आनन्द 16. ग़ैर-अरबवासी 17. बलिदान का शौक़, शहादत का शौक़ 18. पंक्तिबद्ध में सम्मुख आया हुआ दल 19. मर्यादा, मान-सम्मान, अस्मिता 20. इलाज 21. हवा, मृदुल और शीतल हवा 22. मदीने की ओर 23. अत्यंत पवित्र मक़बरा, हुज़ूर (सल्ल॰) का मक़बरा 24. आंसुओं 25. प्रेरक 26. अत्यधिक खुशी 27. इताअत की राह, आज्ञापालन का मार्ग 28. पलायन किया हुआ, बचकर निकला हुआ 29. प्रेम ।

भोजन के बीच पानी पीना क्या सही है?

■ अनोखी लाल कोठारी

यदि आप खाना खाते समय भी पानी पीते हैं तो ये आदत आपके स्वास्थ्य को नुक़सान पहुंचा सकती है । हो सके तो जल्दी अपनी ये आदत बदल लें ।

फ़ायदेमंद हैं ये तो हम सभी जानते हैं । वैज्ञानिक दृष्टि से हाइट्रेशन, चयापचय और पाचंन तंत्र के कामकाज के लिए अपनी बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन अगर आप खाना खाते समय भी पानी पीते हैं तो ये आदत आपके स्वास्थ्य को नुक़सान पहुंचा सकती है । हो सके तो जल्द ही अपनी ये आदत बदल दें ।

आख़िर क्या है खाने के साथ पानी पीने के नुक़सान ? अगर आप भोजन के साथ-साथ बहुत ज़्यादा पानी पीते हैं तो उससे पित्त और पेट में अम्ल के आवश्यक स्तर पर असर डाल सकता है । इससे आपका भोजन ठीक प्रकार से नहीं पचेगा और पेट में विषाक्त तत्व जमा होने शुरू हो जाएंगे । भोजन करने के 30 मिनट पहले पानी पीने का सेवन करें । इससे आप भोजन के बीच बीच में पानी पीने से बच जाएंगे तथा भोजन पचाने वाला जो रस है वह भी अपना काम असरदार तरीक़े से करेगा ।

जो व्यक्ति गुटखा खाते हैं तथा वे बार-बार थूकते हैं । ऐसे व्यक्ति पूर्ण भोजन नहीं कर पाएंगे तथा जो भोजन किया है वह भोजन नहीं पचेगा क्योंकि बार-बार थूकने से लावरिस उनके साथ में बाहर निकल जाता है वहीं रस भोजन पचाने में सहायक होता है अत: गुटखा जो व्यक्ति खाता है वे तुरंत ही बन्द कर दें । यदि कोई व्यक्ति गुटखा ज़्यादा मात्रा में खाता है तो एक समय ऐसा आएगा कि उसका मुंह नहीं खुल पाएगा तथा कैंसर की बीमारी से ग्रसित हो जाएगा अत: गुटखा खाना तुरंत बंद कर दें ।

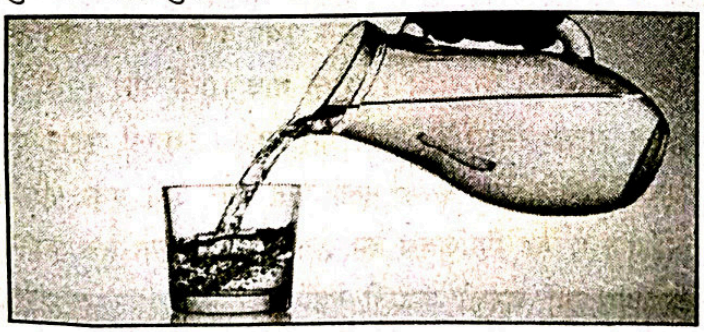

प्याज़ की चाय

■ डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव

आप तुलसी, अदरक, नींबू और इलायची की चाय के बारे में जानते हैं और आपने इनका जायक़ा भी लिया है लेकिन प्याज की चाय के संबंध में आपने शायद ही कभी सुना हो । सुनने में यह भले अजीब लगे लेकिन प्याज की यह चाय स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है । प्रस्तुत है प्याज की चाय से लाभ के संबंध में रोचक जानकारी ।

प्याज़ की चाय का सेवन हाइपरटेंशन से सुरक्षा में सहायक हैं । इसके अलावा यह शरीर में ख़ून का थक्का जमने से रोकने में भी मददगार है और यह रक्त संचालन में सहायक है ।

चिकित्साशास्त्रियों के एक शोध के मुताबिक़ प्याज़ की चाय टाइप-2 डायबिटीज से राहत और आराम दिलाने में फ़ायदेमंद है । इसके साथ ही यह फ्री रेडिकल्स को समाप्त करने में सहायक है ।

यह शरीर में कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को रोकने में मदद करती है । विशेषकर यह कोलोन कैंसर की रोकथाम में बेहद मुफ़ीद है ।

प्याज़ की चाय के नियमित सेवन से डायबिटीज के मरीज़ों को लाभ तो होता ही है, शरीर के मोटापा को नियंत्रित करने में भी यह बेहद प्रभावी है । अनिद्रा से पीड़ित व्यक्तियों के लिए भी यह लाभकारी है । जिन्हें नींद न आने की शिकायत है, वे इस चाय का इस्तेमाल कर लाभांवित हो सकते हैं । इससे न केवल जल्दी नींद आएगी, बल्कि अच्छी और सकून की नींद आएगी ।

प्याज़ की चाय बनाने का अलग ढंग है । इसे बनाने के लिए पानी को उबालकर इसमें कटे हुए प्याज़ के टुकड़े डाल दें और भलीभांति उबालने के बाद इसे छन्नी से छान लें । अब स्वाद के लिए इसमें नींबू का रस गार लें या ग्रीन टी भी डाल सकते हैं । यदि आप मिठास के शौकीन हैं तो इसमें शहद का उपयोग किया जा सकता है ।

लावारिस बच्चे बने वैज्ञानिक व प्रोफ़ेसर

■ भारत भूषण

पिछले दिनों एक धार्मिक यात्रा पर जाना हुआ । एकाएक बहुत से मैले-कुचैले बच्चे न जाने कहां से आये और हाथों को फैला कर खड़े हो गये । मेरे लिए यह हैरान, चकित, अचंभित और न जाने क्या-क्या होने वाली बात थी । आख़िर उन बच्चों का भविष्य क्या होगा ? हम देश की तरक़्क़ी की बात करते हैं, क्या इतने बच्चों को तरक़्क़ी के रास्ते पर लाए बग़ैर हम इसे हासिल कर पाएंगे । कहां है समाजवाद ?

आंध्र प्रदेश के नेल्लोर ज़िले के गोलापालेम गांव में रहते हैं, रिटायर्ड रेलवे क्लर्क सरथ बाबू । इनकी पहचान यह है कि ये 120 से ज़्यादा बच्चों के 'डैडी' हैं । दरअस्ल, ये इनके अपने बच्चे नहीं हैं, लेकिन इनके लिए ये अपनों से भी बढ़कर हैं । ये बच्चे उन्हें रेलवे स्टेशन पर मिले हैं, चोरी करते हुए, उठाईगीरी करते हुए, या फिर भीख मांगते हुए । सरथ बाबू का दिल पसीजा और उन्होंने उन्हें अपना लिया । उनके इस क़दम से इन बच्चों की ज़िन्दगी बदल चुकी है । एक तो नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट में बतौर साइंटिस्ट नियुक्त है, वहीं एक अन्य प्रोफ़ेसर है । हालांकि इसके बावजूद सरथ बाबू बेहद सरलता से कहते हैं, यह सब उनकी प्रतिभा का फल है, वे ख़ुद इतने योग्य थे कि यहां पहुंच गये, मैंने सिर्फ़ उनकी छोटी-सी मदद की ।

सरथ बाबू बताते हैं, जब मैं नेल्लोर रेलवे स्टेशन पर बतौर क्लर्क कार्यरत था, तब मैं बहुत से ऐसे बच्चों को देखता था, जिनका कोई सहारा नहीं जान पड़ता था । तब मैंने सोचा कि इन बच्चों के लिए कुछ किया जाना चाहिए । मैंने उन्हें खाना, रहने और सोने की जगह मुहैया कराई । इसके बाद मैंने नेल्लोर ज़िले के अलूर मंडल गांव की पंचायत से संपर्क साध कर ऐसी ज़मीन मुहैया कराने का आग्रह किया, जहां इन बच्चों के लिए रिहाइश बनायी जा सके । बक़ौल सरथ बाबू, मैं एक एक्सपेरिमेंट करना चाहता था, ज़रूरतमंद बच्चों को अगर मौक़ा मिले तो वे कहां तक जा सकते हैं ? यह देखना था । पंचायत ने इसके लिए अस्थाई रूप से ज़मीन दे दी । इसके बाद हमने 30 गुणा 15 फ़ीट का एक ढांचा वहां खड़ा किया ।

इन बच्चों की कहानी बेहद मार्मिक है । सरथ बाबू बताते हैं, कोई भी संजीदा इन्सान इन कहानियों को सुनकर कांप जाए । इस बीच सरथ बाबू के लिए ख़ुद यह बेहद चुनौती भरा था क्योंकि ऐसा कुछ करने की सोच रहे थे जिसके लिए पहाड़ जैसा हौसला ही चाहिए था । यहां रखे गये बच्चों की मानसिकता अभी पुरानी ही थी, लड़ाई-झगड़ा भी उनकी आदत थी, लेकिन सरथ बाबू का संकल्प भी बेजोड़ था । इस बीच गांव वालों ने उनके प्रयास की गंभीरता को समझ कर उन्हें 4.5 एकड़ में स्कूल और बच्चों के रहने के लिए जगह मुहैया करा दी । इसे बाल आश्रम नाम दिया गया । इस आश्रम में रेलवे स्टेशन से मिले बच्चे और गांव के अनाथ बच्चों को समान रूप से प्यार और संभाल दी जाती है ।

सरथ एक बच्चे की कहानी बताते हैं, उसके पिता की एक मिल में बाजू कट गयी थी, बाद में उसकी मौत हो गयी । मां चाय बेचकर जैसे-तैये गुज़ारा कर रही थी । उस बच्चे की संभाल नहीं हुई और वह रेलवे स्टेशन पर रहने लगा । वह रेल में बैठकर घूमने लगा, इस बीच कोलकाता, चेन्नई और हैदराबाद में लावारिस समझ कर उसे सरकारी आश्रय में रखा गया । जब वह 11 साल का था तो सरथ बाबू के आश्रम में आया ।

महज़ डेढ़ साल में उसने 7वीं क्लास पास कर ली फर्स्ट डिवीज़न के साथ । इसके बाद 10वीं और 12वीं भी बहुत अच्छे नम्बरों के साथ पास की । स्कूली पढ़ाई पूरी करके वह बीटेक करने चला गया और अब एक प्राइवेट कॉलेज में वह फिज़िक्स का लैक्चरर है । क्या यह कहानी बदलाव की अस्ली कहानी नहीं है ?

विरासत के इस्लामी क़ानून का पालन

● संपादन प्रभाग

इस्लाम का क़ानूने विरासत

किसी शख़्स के इन्तिक़ाल के बाद उसकी मिल्कियत उसके वारिसों में पहुंच जाने को विरासत कहते हैं । क़ुरआन और हदीस में इसका ताकीदी हुक्म है । और हर वारिस का हिस्सा तय कर दिया गया है । विरासत में मर्दों और औरतों दोनों का हिस्सा है और विरासत का माल, चाहे कम हो या बहुत ज़्यादा हर हाल में उसकी तक़सीम को लाज़िम ठहराया गया है । अल्लाह का फ़रमान है–

''मर्दों के लिए उस माल में से हिस्सा है जो मां-बाप और क़रीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो और औरतों के लिए भी उस माल में हिस्सा है जो मां-बाप और क़रीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो, चाहे थोड़ा हो या बहुत और यह हिस्सा (अल्लाह की तरफ़ से) मुक़र्रर है ।''

(क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-7)

किसी शख़्स का इन्तिक़ाल हो जाए तो उसके तरके में से नीचे लिखे कामों पर ख़र्च किया जाएगा–

1. सबसे पहले उसके कफ़न-दफ़न पर ख़र्च किया जाएगा।

2. उसकी वसीयत पूरी की जाएगी । बशर्ते कि वसीयत उसके एक तिहाई माल से ज़्यादा की न हो और किसी वारिस के हक़ में न हो ।

3. अगर उस पर कुछ क़र्ज़ हो तो वह अदा किया जाएगा ।

उसके बाद जो कुछ बचेगा वह वारिसों में तक़सीम होगा ।

इस्लामी क़ानूने-विरासत की बुनियाद ग़रीबी और मोहताजी पर नहीं है कि मैयत के वारिसों में जो जितना ज़रूरतमंद हो, विरासत में उसका उतना हिस्सा लगा दिया जाए, बल्कि उसकी बुनियाद रिश्तेदारी बल्कि क़रीबी रिश्तेदारी पर है । रिश्तेदार बहुत-से होते हैं, लेकिन शरीअत में सिर्फ़ क़रीबी रिश्तेदारों को विरासत का हक़दार ठहराया गया है ।

विरासत की तक़सीम के मामले में मुस्लिम समाज में बहुत ज़्यादा ग़फ़लत, सुस्ती और लापरवाही पायी जाती है । किसी शख़्स के इन्तिक़ाल के बाद उसके वारिसों में उसकी जायदाद की तक़सीम बरसों अमल में नहीं आती या वह कुछ ही वारिसों के मुश्तरका इस्तेमाल में रहती है और दूसरे विरासत से महरूम रहते हैं, वफ़ात पाने वाले की बेवा और दूसरे बूढ़े वारिसों का हिस्सा नहीं निकाला जाता, खेती की जायदाद में लड़कियों को हिस्सा नहीं दिया जाता या वे इस डर से ख़ुद ही मना कर देती हैं कि फिर भाइयों से ताल्लुक़ बाक़ी न रहेगा और उनका मायके जाना बन्द हो जाएगा, जहेज़ को विरासत का बदल समझ लिया जाता है और यह बहाना बना लिया जाता है कि विरासत में मिलने वाले हिस्से के बराबर लड़कियों को पहले ही जहेज़ की शक्ल में अदा कर दिया जाता है । ये तमाम तरीक़े ग़लत हैं । क़ुरआन में विरासत के एहकाम को अल्लाह की हदें कहा गया है और उनकी पामाली पर जहन्नम के अज़ाब की ख़बर सुनाई गयी है । अल्लाह का फ़रमान है–

''और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा और उसकी मुक़र्रर की हुई हदों से आगे बढ़ेगा, उसे अल्लाह आग में डालेगा, जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए रुसवा कर देने वाला अज़ाब है ।''

(क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-14)

विरासत के मामले में यह बात भी याद रखने की है कि इसका मसला किसी शख़्स की वफ़ात के बाद पैदा होता है । उसके लिए किसी शख़्स की ज़िन्दगी में उसके बेटों और बेटियों का उससे अपना हिस्सा मांगना शरई तौर पर जायज़ नहीं है । कोई शख़्स अपनी ज़िन्दगी में अपना माल और जायदाद अपनी ख़ुशी से तक़सीम कर सकता है, लेकिन यह विरासत की तक़सीम नहीं, बल्कि हिबा होगा, जो उसकी मर्ज़ी पर निर्भर होगा ।

आदमी अपनी ज़िन्दगी में अपने माल का मालिक है । वह उसे अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ ख़र्च कर सकता है । अलबत्ता अगर वह अपनी ज़िन्दगी में अपनी औलाद में उसे तक़सीम करना चाहे तो शरीअत की तालीम यह है कि वह उन सबमें बराबर-बराबर तक़सीम करे ।

विरासत की बहुत-सी सूरतों में औरत का हिस्सा कम होने की वजह

विरासत की बहुत-सी सूरतों में औरत को मर्द से ज़्यादा

मिलता है । मिसाल के तौर पर कोई शख़्स मां-बाप और एक बेटी छोड़कर मर जाए तो बेटी को आधा हिस्सा मिलेगा, जबकि मां-बाप हर एक छठा हिस्सा पाएंगे । कुछ सूरतों में औरत और मर्द दोनों को बराबर मिलता है । मिसाल के तौर पर अगर वारिसों में से शौहर और एक बहन हो तो दोनों के बीच मीरास आधी-आधी बंटेगी । सिर्फ़ कुछ सूरतों में औरत का हिस्सा मर्द के हिस्से का आधा होता है, मिसाल के तौर पर अगर मरने वाले की औलाद में लड़के-लड़कियां या भाई-बहन हों । इनमें यह अंतर लिंग के आधार पर नहीं है ।

अगर ऐसा होता तो बेटे के मुक़ाबले में बाप का और बेटी के मुक़ाबले में मां का हिस्सा कम न होता । इस अंतर की बुनियादी वजह इस्लामी सामाजिक व्यवस्था में मर्द और औरत की पोज़ीशन है । मर्द पर कमाने, घर का ख़र्च चलाने और मातहत लोगों की कफ़ालत (भरण-पोषण) की ज़िम्मेदारी डाली गयी है, जबकि औरत की माली जिद्दोजेहद से अलग रखा गया है । बचपन में उसकी कफ़ालत की ज़िम्मेदारी बाप के ज़िम्मे है, जवानी में शादी के बाद शौहर के ज़िम्मे और बुढ़ापे में औलाद के ज़िम्मे । वह जितने माल की मालिक बनती है सब उसके पास महफ़ूज़ रहता है । दूसरों पर ख़र्च करना उसकी ज़िम्मेदारी नहीं । लेकिन मर्द जो कुछ माल हासिल करता है, उसे मातहत लोगों पर ख़र्च करना उसकी ज़िम्मेदारी है । इस बुनियाद पर यह बात न्याय पर आधारित है कि मर्द का हिस्सा औरत का दोगुना हो । अगर दोनों का हिस्सा बराबर कर दिया जाता तो यह मर्द के साथ नाइन्साफ़ी होती ।

यही वजह है कि जिन सूरतों में मर्द की माली ज़िम्मेदारियां कम या ख़त्म हो जाती हैं उनमें मीरास की तक़सीम के मामले में औरत और मर्द के बीच अंतर नहीं किया गया है । मिसाल के तौर पर मैयत की औलाद हो और उसके मां-बाप भी हों तो मीरास में मां और बाप हर एक का छठा हिस्सा मुक़र्रर किया गया है, इसलिए कि जिस शख़्स की औलाद भी औलाद वाली हो उसकी माली ज़िम्मेदारियां बड़ी हद तक कम या बिल्कुल ख़त्म हो जाती हैं । इसकी हैसियत आमतौर से अपने पोतों-पोतियों के सरपरस्त की होती है । लेकिन अगर मैयत की कोई औलाद न हो और उसके बाप की औलाद हो (यानी मैयत के भाई-बहन) हों तो इस सूरत में उस (यानी मैयत के बाप) की माली ज़िम्मेदारी हो सकती है । इसी वजह से बाप का हिस्सा मां से ज़्यादा रखा गया है । (मां को एक तिहाई और बाप को दो तिहाई मिलता है)

यतीम पोतों-पोतियों की कफ़ालत कैसे हो ?

इस्लाम के निज़ामे-विरासत पर जो एतिराज़ात किये गये हैं उनमें से एक अहम एतिराज़ यह है कि उसमें यतीम पोतों-पोतियों को महरूम रखा गया है । यह एतिराज़ करते हुए उनकी गुरबत व मस्कनत और बेचारगी व लाचारी को इतना नुमायां किया जाता है कि ऐसा मालूम होता है कि अगर उन्हें विरासत के माल में से हिस्सा न दिया गया तो वे भूखों मर जाएंगे और उनके लिए ज़िन्दगी गुज़ारना मुमकिन नहीं रहेगा । उसके बाद इस्लामी शरीअत पर निशाना साधा जाता है और कहा जाता है कि इस्लामी क़ानून ज़ालिमाना है, उसमें कुछ हक़दारों के हक़ मारे गये हैं, इसलिए वह मौजूदा ज़माने का साथ देने की सलाहियत नहीं रखता ।

ये हज़रात अस्ल में विरासत के इस्लामी क़ानून के ज़ाब्तों, हिक्मतों और बारीकियों को जानते नहीं हैं । इसी तरह यतीम पोतों- पोतियों से उनकी हमदर्दियां सिर्फ़ दिखावा और धोखा है । जिन तरीक़ों से यतीम पोतों-पोतियों की ज़रूरत के वक़्त मदद की जा सकती है, उन पर तवज्जोह देने के बजाए ये हज़रात ऐसे तरीक़ों से उनकी मदद करना चाहते हैं, जो इस्लामी शरीअत से टकराते हैं ।

पीछे बयान किया जा चुका है कि इस्लाम में विरासत

एक आदमी की व्यथा

गर्द, धूल धुंधलका और उसमें झुंझलाता हुआ, परेशान-सा मैं,
ज़िन्दगी के अनगिनत मोड़ों और ढलानों में,
दौड़ता-मुड़ता, फिसल कर गिरता, संभलता हुआ मैं,
क्या एंढ़ता हूं, क्या खोजता हूं, कहां जा रहा हूं मैं,
रिश्ते भी पड़ गये हैं फीके, फिर भी ढो रहा हूं मैं,
निरुद्देश्य, निरुपाय, क्या घर से निष्काशित हूं मैं,
भीड़ ही भीड़ है चहुंओर, उसमें अकेला हूं मैं,
मन कहीं बिचरे, तन कहीं भटके, ठोकरें खाता फिरता हूं मैं,
सब ओर मशीनों, यंत्रों-जंत्रों और उनकी घबराहट में,
एक तुच्छ, निष्प्रयोजन, प्राणहीन मशीन बनकर रह गया हूं मैं।

कु० उषा वर्मा
कटवारिया सराय, नयी दिल्ली-16

की तक़सीम की बुनियाद ग़रीबी और मोहताजी पर नहीं, बल्कि क़रीबी से क़रीबी रिश्तेदारी पर है । क़रीब से क़रीब रिश्तेदार की मौजूदगी में दूर के रिश्तेदार महरूम होंगे । किसी शख़्स के बेटे-बेटियां भी हों और पोते- पोतियां भी तो चूंकि बेटे-बेटियां उसके क़रीबी रिश्तेदार हैं, इसलिए वे हक़दार होंगे, उनकी मौजूदगी में दूर के रिश्तेदारों को कुछ न मिलेगा, जिनमें पोते-पोतियां भी शामिल हैं ।

विरासत का मसला अस्ल में किसी शख़्स की ज़िन्दगी में नहीं, बल्कि उसके मरने के बाद उठता है । जब उसकी ज़िन्दगी में उसके एक बेटे का इन्तिक़ाल हो गया है और उस शख़्स की मौत के वक़्त वह मौजूद ही नहीं है तो उसका हिस्सा किस तरह लगाया जाएगा ? और जब उसका कोई हिस्सा नहीं तो उसके बेटे किस तरह हक़दार होंगे ?

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यतीम पोतों-पोतियों को इस्लामी शरीअत ने बेयारो-मददगार छोड़ दिया और उनकी कफ़ालत का कोई प्रबंध नहीं किया है । उनकी कफ़ालत निम्नलिखित तरीक़ों से मुमकिन है–

1. सूरा-2 बक़रा आयत-233 का एक टुकड़ा यह है कि "वैसा ही वारिस पर भी है" यानी अगर बच्चे का बाप नहीं है तो उसकी कफ़ालत की ज़िम्मेदारी उस शख़्स पर है जो उस बच्चे की मौत की सूरत में उसकी विरासत पाने का हक़ रखता है । इससे फ़ुक़हा (इस्लामी धर्मशास्त्रियों) ने यह दलील दी है कि यतीम पोतों-पोतियों की कफ़ालत की ज़िम्मेदारी उनके क़रीबी रिश्तेदारों पर है । दूसरे अलफ़ाज़ में उनके चचा अपने बाप के वारिस होंगे, वही अपने यतीम भतीजों-भतीजियों की कफ़ालत के भी ज़िम्मेदार होंगे ।

2. इस्लामी शरीअत में वसीयत का क़ानून मौजूद है । विरासत की आयतों में बार-बार कहा गया है कि विरासत की तक़सीम वसीयत को लागू करने और क़र्ज़ अदा करने के बाद की जाएगी । (सूरा-4 निसा, आयत-11) यतीम पोतों-पोतियों के हक़ में वसीयत करके उनकी ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं । दादा को चाहिए कि अगर उसके किसी बेटे का इन्तिक़ाल उसकी ज़िन्दगी में हो जाए तो वह अपने पोतों-पोतियों के हक़ में ज़रूरत के अनुसार अपने एक तिहाई माल तक की वसीयत कर दे, ताकि उसके मरने के बाद वे विरासत से महरूमी की वजह से बेसहारा न हो जाएं ।

3. क़ुरआन में वारिसों को एक हिदायत यह दी गयी है कि जब विरासत का माल तक़सीम होने लगे तो उसमें से उन रिश्तेदारों को भी कुछ न कुछ दे जिन्हें शरई तौर पर हिस्सा न मिल रहा हो । (क़ुरआन, सूरा-4 निसा, आयत-8) इस आयत से रहनुमाई मिलती है कि वारिसों को उन रिश्तेदारों का ख़याल रखना चाहिए और ज़रूरत के अनुसार उनकी माली मदद करनी चाहिए, जो विरासत में हिस्सा नहीं पाते ।

4. क़ुरआन मजीद में रिश्तों को जोड़ने की ताकीद की गयी और रिश्तों को काटने से रोका गया है । यतीम पोते-पोतियां भी रिश्तों में जुड़ने के हक़दार हैं । अगर उनके रिश्तेदार उनकी ख़बरगीरी करें और ज़रूरत के वक़्त उनकी माली मदद करें तो वे कभी मसाइल का शिकार नहीं होंगे ।

यह पहलू भी सामने रहना चाहिए कि इस्लाम के विरासत के निज़ाम पर ऐतिराज़ करने वाले विरासत से यतीम पोते ही महरूमी के मसले को इस अंदाज़ से उठाते हैं कि मालूम होता है, दादा हर हाल में मालदार और पोता हर हाल में ग़रीब, नादार और बेकस व बेसहारा होता है, हालांकि ये दोनों बातें पूरे तौर पर सही नहीं । बहुत-से मौक़ों पर दादा ख़ुद ग़रीब और अपने बेटों के सहारे का मोहताज होता है और बहुत-से मौक़े ऐसे भी होते हैं जब पोते को किसी तरह के माली सहारे की ज़रूरत नहीं होती, इसलिए उसे अपने बाप से अच्छी ख़ासी जायदाद और माल मिलता है ।

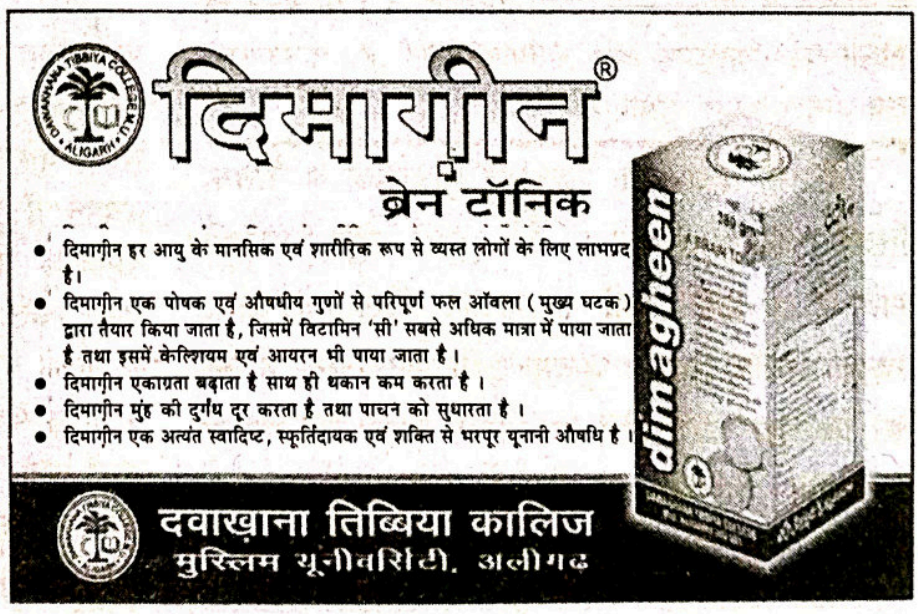

छिनता बचपन

● संपादन प्रभाग



संचार क्रांति ने सबसे ज़्यादा संस्कारों को प्रभावित किया है, जिसके चलते आजकल बच्चों को पारिवारिक संस्कार नहीं मिल पाते । बच्चे आइयों-बाइयों की बाहों में पलते रहते हैं, जबकि उनकी मां की बाहों में पिल्ले खेलते-कूदते रहते हैं । मां-बाप के पास बच्चों के पालन-पोषण के लिए न ही समय है न ही इच्छाशक्ति और इसी मनोभावना के चलते बच्चों को नौकरानियों के भरोसे छोड़ दिया जाता है । वे समझते हैं कि बच्चे स्कूल में या टी॰वी॰ से संस्कार सीख लेंगे ।

जबकि बच्चों के समुचित मानसिक व नैतिक विकास के लिए बचपन के 5 वर्ष बहुत उपयोगी होते हैं । इन्हीं वर्षों में बच्चा खेलता-कूदता, लोटता-पोटता, हंसता-कूदता हुआ सृजनात्मक शक्ति का विकास करता है । इसी लिए बच्चे की पहली पाठशाला 'मां का स्नेहांचल' ही कहा जाता है । जिसमें ही अच्छे-बुरे संस्कारों का उदय होता है । मनोवैज्ञानिकों की खोज के अनुसार जो बच्चे मिट्टी में खेलते-कूदते बड़े होते हैं उनकी शारीरिक शक्ति सुदृढ़ होती है, बजाय उन बच्चों के जो हथेलियों में पलते हैं और नाज़ुक बन जाते हैं । जिसके कारण से उनकी रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति काफ़ी कम हो जाती है । मां बच्चे के जीवन को प्रकाशमय और बलवान बनाती है, भावनात्मक रक्षा कवच प्रदान करती है ।

जबकि बच्चों के समुचित मानसिक व नैतिक विकास के लिए बचपन के 5 वर्ष बहुत उपयोगी होते हैं । इन्हीं वर्षों में बच्चा खेलता-कूदता, लोटता-पोटता, हंसता-कूदता हुआ सृजनात्मक शक्ति का विकास करता है । इसी लिए बच्चे की पहली पाठशाला 'मां का स्नेहांचल' ही कहा जाता है । जिसमें ही अच्छे-बुरे संस्कारों का उदय होता है ।

लेकिन, आजकल बच्चों के पालन-पोषण तथा परवरिश का वातावरण एकदम बदल गया है । 2 साल के बच्चों को स्कूल में डाल दिया जाता है । जिसके चलते उस पर किताबों का भार पड़ना शुरू हो जाता है, इस कारण से उसे हमउम्र के बच्चों के साथ खेलने का समय नहीं मिलता और उसका सृजनात्मक शक्ति का विकास रुक जाता है । तो, टी॰वी॰ के बढ़ते कल्चर ने भी माता-पिता में बच्चों को आईकोन बनाने की प्रतिस्पर्धा चल पड़ी है, जिसके कारण उनका बचपन लुटता जा रहा है ।

सही ढंग से पालन-पोषण न होने और बाल मस्तिष्क पर अधिकाधिक भार पड़ने के कारण उनका शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास रुक जाता है और उनको जवांनी में ही वयस्क बीमारियां घेर लेती हैं । आंखों पर चश्मा बचपन में ही आने लगा है, तो डायबिटीज आदि कई बीमारियां जवानी में ही घेरने लगी हैं । ज़रूरत है इस वास्तविकता को समझते हुए बच्चों को प्रकृति व संस्कृति से जोड़ने की, उनके शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास के लिए सही मार्गदर्शन करने की और आईकोन बनाने के पहले उन्हें अच्छा इन्सान बनाए जाने की । ताकि, वे बड़े होकर सकारात्मक सोच के साथ देश व आमजन हितैषी बन सके और अपना जीवन सार्थक कर सकें ।

क़ाज़ी का न्याय

■ पराग ज्ञानदेव चौधरी

बहुत पुरानी बात है । एक अमीर व्यापारी के यहां चोरी हो गयी । बहुत तलाश करने के बावजूद सामान न मिला और न ही चोर का पता चला । तब अमीर व्यापारी शहर के क़ाज़ी के पास पहुंचा और चोरी के बारे में बताया ।

सब कुछ सुनने के बाद क़ाज़ी ने व्यापारी के सारे नौकरों और मित्रों को बुलाया । जब सब सामने पहुंच गये तो क़ाज़ी ने सबं को एक-एक छड़ी दी । सभी छड़ियां बराबर थीं । न कोई छोटी न बड़ी ।

सब को छड़ी देने के बाद क़ाज़ी बोला, 'इन छड़ियों को आप सब अपने-अपने घर ले जाएं और कल सुबह वापस ले आएं । इन सभी छड़ियों की ख़ासियत यह है कि यह चोर के पास जाकर ये एक उंगली के बराबर अपने आप बढ़ जाती हैं । जो चोर नहीं होता, उसकी छड़ी ऐसी की ऐसी रहती है । न बढ़ती है, न घटती है । इस तरह मैं चोर और बेगुनाह की पहचान कर लेता हूं ।'

क़ाज़ी की बात सुनकर सभी अपनी-अपनी छड़ी ले कर अपने-अपने घर चल दिये ।

उन्हीं में व्यापारी के यहां चोरी करने वाला चोर भी था। जब वह अपने घर पहुंचा तो उसने सोचा, 'अगर कल सुबह क़ाज़ी के सामने मेरी छड़ी एक उंगली बड़ी निकली तो वह मुझे तुरंत पकड़ लेंगे । फिर न जाने वह सबके सामने कैसी सज़ा दें । इसलिए क्यों न इस विचित्र छड़ी को एक उंगली काट दिया जाए । ताकि क़ाज़ी को कुछ भी पता नहीं चले ।'

चोर यह सोचकर बहुत ख़ुश हुआ और फिर उसने तुरंत छड़ी को एक उंगली के बराबर काट दिया । फिर उसे घिस-घिसकर ऐसा कर दिया कि पता ही न चले कि वह काटी गयी है ।

अपनी इस चालाकी पर चोर बहुत ख़ुश था और ख़ुशी-ख़ुशी चादर तान कर सो गया । सुबह चोर अपनी छड़ी लेकर ख़ुशी-ख़ुशी क़ाज़ी के यहां पहुंचा । वहां पहले से काफ़ी लोग जमा थे ।

क़ाज़ी एक-एक कर छड़ी देखने लगे । जब चोर की छड़ी देखी तो वह एक उंगली छोटी पाई गयी । उसने तुरंत चोर को पकड़ लिया । और फिर उससे व्यापारी का सारा माल निकलवा लिया । चोर को जेल में डाल दिया गया ।

सभी क़ाज़ी की इस अनोखी तरकीब की प्रशंसा करने लगे ।

सामान्य ज्ञान की बातें

● प्राकृतिक गैस बिना गंध की होती है । स्मेल तो जान बूझकर एड की जाती है ताकि लिकेज होने पर पता चल सके ।

● पिछले 100 सालों में 'Impossible' शब्द यूज करने में 50 प्रतिशत की गिरावट आयी है ।

● चीन की फिल्मों और टी॰वी॰ में टाइम ट्रेवल की घटनाएं बैन है ।

● 2013 में, न्यूज़ीलैंड में एक ऐसा बैक्टीरिया पाया गया जिस पर आज तक की किसी एंटीबायोटिक का कोई असर नहीं हुआ ।

● जो महिलाएं बच्चे न पैदा करने वाली गोलियां खाती हैं वे दूसरी महिलाओं की तुलना में 32 प्रतिशत ज़्यादा पलक झपकाती हैं ।

● 'The Statue of Liberty' ने 879 नंबर का जूता पहन रखा है ।

● 100 बार हंसना दिन में 15 मिनट साइकिल चलाने के बराबर है ।

● 90 प्रतिशत ऐसे जीव-जंतु जो पानी में 1500 फुट से नीचे रहते हैं वे चमकदार होते हैं ।

● शहद का एक चम्मच, 12 मधुमक्खियों का ज़िन्दगी भर का काम है ।

● हर दिन क़रीब 2 अरब 25 करोड़ कॉफ़ी के कप पीए जाते हैं ।



हमारी धरती



● धरती का वज़न लगभग 6,58,80,00,00,00,00,00, 00,00,000 टन है ।

● पर्वतों का 15,000 मीटर से ऊंचा होना संभव नहीं है इसका कारण धरती का गुरुत्वाकर्षण बल है ।

● धरती के सभी महाद्वीप क़रीब 2.5 करोड़ साल से अब तक गति कर रहे हैं ।

● धरती पर जितने भी प्राणी हैं उन सभी में कार्बन होता है ।

● हर रोज़ धरती पर 45,00 बादल गरजते हैं ।

● आकाश गंगा में टैकटोनिक प्लेटों की व्यवस्था वाला एक मात्र ग्रह धरती ही है ।

● मनुष्य के द्वारा खोदा गया अब तक का सबसे गहरा कुआं 1989 में रूस में खोदा गया था जिसकी गहराई 12. 262 किलोमीटर थी ।

● धरती के कुल हिस्से में से सिर्फ़ 11 प्रतिशत ही भोजन उत्पादन में काम लिया जाता है ।

● हर साल धरती पर लगभग 1000 टन अंतरिक्ष धुड़-कण धरती में शामिल होते हैं ।

● सिर्फ़ धरती ही ऐसी जगह है जिस पर पानी तीनों अवस्थाओं में पाया जाता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली–110006 से मुद्रित। फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है।

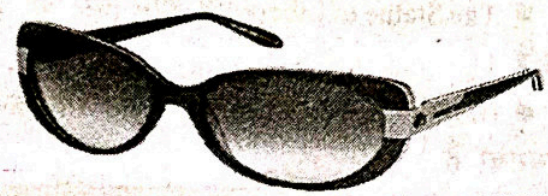


Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

अक़ायद व इबादात पर हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	45.00
लोगो: हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	14.00
खुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	07.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	22.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	10.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ	16.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	64.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	22.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	12.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

Posted on 20-21 June 2017
July 2017
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.06.2017
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017
Posted at DELHI R.M.S. Delhi-6

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

पढ़िए और पढ़ाइए

जो केवल समाचार ही न दे

- बल्कि बताए समाचारों का मर्म और आगे-पीछे का हाल
- देश व समाज की उन्नति के लिए प्रस्तुत करे ठोस उपाय
- प्रस्तुत करे इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ होने वाले दुष्प्रचार का तोड़
- सामने लाए सही स्थिति और अवगत कराये वास्तविकताओं से
- रखे ध्यान नैतिक मूल्यों का और मार्गदर्शन करे भलाई व कल्याण की ओर

सहयोग राशि :-

● प्रतिकॉपी ₹ 5/= ● अर्द्धवार्षिक ₹ 125/= ● वार्षिक ₹ 250/=

एजेंसी और ग्राहक बनने के लिए सम्पर्क करें ।

KANTI WEEKLY

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Phone : 09818799223, 011-26949430
E-mail : kantiweekly@hotmail.com